UNIVERSAL LIBRARY
OU_178742
UNIVERSAL LIBRARY

फांसी के तख्ते से : जूलियस फूचिक

ख़ौफ़ की परछाइयाँ : बर्ट ब्रेख्त

बाद वह चेकोस्लोवाकिया की कम्युनिस्ट पार्टी के मुख पत्र रूद *प्रावो* का संपादक हो गया।

सोवियत यूनियन की दो यात्राओं के बाद, जिसकी रिपोर्ट उसने अपने देशवासियों को संवाददाता, वक्ता और सम्पादक की हैसियत से अलग अलग दी, चेक प्रतिक्रियाशील शक्तियों ने फूचिक को परीशान किया और बार बार जेल में डाला। म्यूनिख समझौते के समय कम्युनिस्ट पत्र गैरकानूनी करार दिये गये और पार्टी को अंडरग्राउंड जाना पड़ा। चेकोस्लोवाकिया पर नात्सी अधिकार कायम होने के बाद फूचिक भी अंडरग्राउंड चला गया। उसने मार्क्सवादी साहित्यिक-ऐतिहासिक अध्ययन में अपने को लगाया और पार्टी का गैरकानूनी हेडक्वार्टर कायम करने में भी आगे बढ़ कर हिस्सा लिया। अपने अन्य साथियों के संग मिल कर उसने गैरकानूनी केन्द्रीय मुखपत्र रूद *प्रावो* (वही इसका सम्पादक था) और दूसरी चीजें प्रकाशित कीं जिनमें हास्य और व्यंग का पत्र द *टाइनी ह्विस्ल* (छोटी-सी सीटी) भी था।

इस पुस्तक में फूचिक ने चेकोस्लोवाकिया की कम्युनिस्ट पार्टी के बारे में, जो आज उस देश की सब से बड़ी पार्टी है, गर्व और श्रद्धा के साथ लिखा है। हिंस्र दमन के बावजूद यह पार्टी समूचे देश और चेक मजदूर श्रेणी की शक्ति का एक अजेय अंग सिद्ध हुई। इस पुस्तक में हम कम्युनिस्टों को उनके असली रूप में, यानी जनता के हितों के सब से दृढ़-संकल्प रक्षकों के रूप में देखते हैं। इसमें हम देखते हैं कि समाजवाद के देश सोवियत यूनियन के संग सच्ची मैत्री किसी भी राष्ट्र को प्रतिक्रिया और फासिज्म से बचाने की पहली शर्त है। एक महान् चेक देशभक्त, और चेक मजदूर श्रेणी के एक वफादार और साहसी बेटे के रूप में ही फूचिक सोवियत यूनियन का उल्लेख इतने प्यार और आदर के साथ करता है।

गेस्टापो ने उसे गिरफ्तार किया, यातनाएँ दीं और चालिस साल की उम्र में मार डाला। लेकिन इन पृष्ठों के रूप में, जिनमें किसी भी तरह

की कोई बनावट या अस्वाभाविकता नहीं है, जिनका पर्यवेक्षण इतना गहरा और पैना है, और जीवन से घनिष्ठतम प्रेम जिनकी पंक्ति-पंक्ति में बोल रहा है, फूचिक एक अमर साहित्यिक कृति छोड़ गया है। और एक अमर सन्देश—हमें उसका अन्तिम शब्द याद रखना चाहिए : होशियार! उसने लिखा कि 'असली जिन्दगी में तमाशा देखनेवाले नहीं होते : सब जिन्दगी में हिस्सा लेते हैं।' क्या यह बात सच्चे साहित्य के बारे में भी उतनी ही ठीक नहीं है जितनी की जिन्दगी के बारे में? यह पुस्तक उस लड़ाई में जो कि फासिज्म की बर्बरताओं के खिलाफ आज हर देश में लड़ी जा रही है, एक श्रेष्ठ योगदान है।

—सैमुएल सिलेन

दो शब्द

मैंने रावेन्सब्रुक के कन्सेन्ट्रेशन कैंप में एक कैदी साथी से सुना कि मेरे पति जूलियस फूचिक को बर्लिन की एक नात्सी अदालत ने २५ अगस्त १९४३ को मौत की सज़ा सुना दी।

उसके बाद उनका क्या हुआ इसके बारे में मैंने बहुत पूछताछ की लेकिन वह सब कैंप की ऊँची ऊँची चहारदीवारियों से टकराकर गूँजकर लौट आयी।

मई १९४५ में हिटलरी जर्मनी की हार के बाद वे कैदी छूटे जिन्हें सता सताकर एकदम मार डालने का समय फासिज्म को नहीं मिल पाया था। मैं भी उन्हीं बचे हुए लोगों में से थी।

अपने आज़ाद देश में लौटकर मैंने अपने पति को खोजना शुरू किया—उसी तरह जैसे और हजारों लोग अपने पतियों, पत्नियों, बच्चों, माँओं और बापों को ढूँढ़ रहे थे जिन्हें जर्मन आक्रमणकारी यातनाएँ देने के लिए अनगिनत नरकों में घसीट ले गये थे।

मुझे पता चला कि उन्हें ८ सितम्बर १९४३ को, सज़ा सुनाने के चौदहवें दिन बर्लिन में फाँसी दे दी गयी।

मुझे यह भी पता चला कि जूलियस फूचिक ने पांक्राट्स जेल, प्राग, में अपने ये नोट लिखे। वह एक चेक संतरी था, ए. कोलिंस्की, जिसने उन्हें कागज और पेंसिल कोठरी में लाकर दी और फिर लिखे हुए पन्नों को एक एक करके, चोरी से, बाहर लाया। मैंने उस संतरी से मुलाकात की और उन नोटों को इकट्ठा किया जो मेरे पति ने पांक्राट्स जेल में लिखे थे। नम्बर किये हुए ये पन्ने कई सच्चे और वफादार लोगों के हाथों से होकर उस जगह से आये जहाँ वे छिपाकर रक्खे गये थे, और अब पाठक के सामने रखे जाते हैं—जूलियस फूचिक के जीवन-कार्य का अन्तिम अध्याय।

—ऑगस्टिना फूचिक

क्रम

	भूमिका	...	१
१.	चौबीस घंटे	...	३
२.	मर रहा हूँ	...	१३
३.	कोठरी नम्बर २६७	...	२४
४.	नम्बर ४००	...	३६
५.	चित्र और रेखाएँ–१	...	५७
६.	मार्शल लॉ १९४२	...	८७
७.	चित्र और रेखाएँ–२	...	९६
८.	इतिहास का एक टुकड़ा	...	१२८

*

१.	घर का भेदी	...	१४३
२.	चार चित्र	...	१५८
३.	रेडियो का वक्त	...	१६५
४.	चुनाव	...	१६८
५.	दुर्घटना	...	१७१
६.	खैराती अस्पताल	...	१७७
७.	भूल सुधार	...	१८१

★

प्रकाशक
हिन्दुस्तानी पब्लिशिंग हाउस, अलाहाबाद

मुद्रक
सरस्वती प्रेस, बनारस

आवरण चित्र
खालेद चौधरी

प्रथम संस्करण, जनवरी १९४९

★

मूल्य २॥।)

फांसी के तख्ते से

भूमिका

★

जब तुम अटेंशन की हालत में बैठे हो, तुम्हारा शरीर अपना सारा लचीलापन खोकर एकदम सख्त और सीधा हो रहा हो, तुम्हारे हाथ कड़ाई से घुटनों को थामे हों, तुम्हारी आंखें पुराने पेचेक बैंक की इमारत के एक कमरे की पीली हो रही दीवारों पर जमी हों—इस हालत में निश्चय ही कुछ बहुत गहरा सोच-विचार संभव नहीं है। मगर तुम्हारे विचारों को कौन हुक्म दे सकता है कि अटेंशन की हालत में बैठे रहो, हिलो-डुलो मत।

यह तो कभी पता न चल सकेगा कि किसने और कब लेकिन किसी ने किसी समय पेचेक बिल्डिंग के इस हॉल को 'सिनेमा' नाम दिया था। जर्मन इसे 'घर की कैद' कहते थे लेकिन जिसने उसे 'सिनेमा' नाम दिया उसने तो कमाल ही कर दिया। इस लम्बे-चौड़े हॉल में बेंचों की छ कतारें बिछी हुई थीं जिन पर उन लोगों के शरीर बिना हिले-डुले पड़े थे जिनके मामले की अभी छानबीन चल रही थी। उस वक्त जब कि वे उस हॉल में अपना धड़कता हुआ दिल लिये बैठे होते थे कि अब उन्हें फिर से बुलाया जायगा, नये सिरे से पूछताछ करने के लिए या नयी यातनाएं पहुँचाने के लिए या सीधे मौत के घाट उतार दिये जाने के लिए, उस वक्त उनकी घूरती हुई आंखों के सामने की वह निचाट सूनी दीवार सिनेमा के पर्दे के समान हो जाती थी जिस पर वे न जाने कहां कहां के इतने दृश्य

फेंकते थे, जितने कि आज तक उतारे भी न गये होंगे। किसी के पूरे जीवन का या उसके छोटे से किसी खास क्षण का छायाचित्र, किसी की मां, पत्नी या बच्चों का छायाचित्र, किसी के टूटे फूटे मकान या तहस-नहस जीवन का छायाचित्र। छायाचित्र—बहादुर साथियों के या गद्दारी के। उस आदमी का छायाचित्र जिसे मैंने वह नात्सी-विरोधी पर्चा दिया था, उस खून का जो फिर से दौड़ने लगा है, उस हाथ का जिसने मज़बूती से मेरा हाथ पकड़कर मानो कहा है कि मैं तुम्हारा दोस्त हूँ। छायाचित्र, डरावनी-डरावनी चीज़ों के या साहस और संकल्प के, घृणा के या प्रेम के, डर के और उम्मीद के। जिन्दगी की तरफ से पीठ फेरे हुए हम सभी रोज़ अपने आपको मरते देखते थे लेकिन नयी जिन्दगी सबको नहीं मिली।

मैं अपनी जिन्दगी का फिल्म सौ बार देख चुका हूँ—उसकी हजारों बारीक से बारीक बातें। अब मैं उसी को कागज पर उतारने की कोशिश करूँगा। अगर मेरी कहानी खतम होने के पहले ही फांसी का फन्दा मेरा गला घोंट देता है, तब भी लाखों-करोड़ों लोग बच जाते हैं जो उसका 'मंगलपूर्ण अवसान' लिखेंगे।

—*जूलियस फ़्यूचिक*

पहला अध्याय

चौबिस घंटे

★

अभी पाँच मिनट में घड़ी दस बजायेगी। खूबसूरत, गर्माहट लिये हुए बसंत की शाम, अप्रैल २४, १९४२।

एक अधेड़ और कुछ कुछ लँगड़ाते हुए आदमी की हुलिया बनाये मैं जितना तेज़ चल सकता हूँ चल रहा हूँ—मैं जेलिनेक के घर पहुँचने की जल्दी में हूँ जिसमें दस बजने के, कर्फ्यू के वक्त घर बंद होने के पहले ही पहुँच जाऊँ। वहाँ मेरा सहायक मिरेक मेरी बाट जोह रहा है। मैं जानता हूँ कि इस बार उसे मुझसे कोई जरूरी बात नहीं कहनी है, न मुझे ही उससे कोई खास बात कहनी है। लेकिन किसी से मिलना अगर तय हो चुका हो तो फिर उसमें चूक न होनी चाहिए क्योंकि उससे नाहक घबराहट फैलती है, और मुझे यह बात बिलकुल मंजूर न होगी कि मेरी वजह से मेरे शरीफ मेज़बानों को व्यर्थ परीशान होना पड़े।

वे एक प्याली चाय से मेरा स्वागत करते हैं। मिरेक है—और फ्रीड दंपती भी। इसी को खतरा मोल लेना कहते हैं। 'कामरेड्स, मैं तुम लोगों से मिलना चाहता हूँ, लेकिन यों सब साथ नहीं। इतने आदमियों का इस तरह एक साथ कमरे में होना जेल का, मौत का, सीधा रास्ता है। छिपकर काम करने के जो नियम हैं तुम लोगों को या तो उनका पालन करना होगा, या हम लोगों का साथ छोड़ देना होगा क्योंकि इस तरह तुम खुद अपने को और अपने साथ दूसरों को खतरे में डाल रहे हो। समझे ?

'हां।'

'और तुम मेरे लिए क्या लाये हो ?'

'रेड राइट्स के पहली मई वाले अङ्क के लिए सामग्री।'

'वाह। और तुम मर्को ?'

'कोई नयी बात नहीं। काम ठीक से चल रहा है.....'

'अच्छा तो ठीक है। अब मैं पहली मई के बाद तुम लोगों से मिलूँगा। पहले खबर भेजूँगा। अच्छा, तो फिर बिदा।'

'एक प्याली चाय और ?'

'नहीं नहीं, मिसेज़ जेलिनेक। इस वक्त इस कमरे में बहुत ज्यादा लोग हैं।'

'अरे एक प्याली तो ले ही लीजिए।'

प्याली में अभी जो चाय ढाली गयी उससे भाप निकल रही है।

दरवाज़े की घंटी बजती है।

इस वक्त, रात के इस पहर में ? कौन हो सकता है ?

आगंतुक अधीर हो रहे हैं। वे दरवाज़ा पीटते हैं।

'जल्दी खोलो ! पुलिस !'

झट खिड़की में से निकल भागो। मेरे पास पिस्तौल है; मैं उन्हें रोक रक्खूँगा। मगर अब तो बहुत देर हो गयी, वक्त निकल गया। गेस्टापो के आदमी खिड़कियों के नीचे खड़े हैं और उनकी पिस्तौलों का मुँह कमरे की

तरफ है। खुफिया के लोगों ने दरवाजा तोड़ दिया है और रसोई में होते हुए घुसते चले आ रहे हैं। एक, दो, तीन...नौ। वे मुझे देख नहीं पाते क्योंकि मैं उस दरवाजे के पीछे हूँ जिससे वे कमरे में दाखिल हुए। मैं आसानी से उनकी पीठ में गोली मार सकता था। मगर उनकी नौ पिस्तौलों का मुँह दो औरतों और तीन निहत्थे आदमियों की तरफ है। अगर मैं गोली चलाता हूँ तो मेरे पाँच दोस्त मुझसे पहले जमीन पर लोटते नज़र आयेंगे। अगर मैं अपने को गोली मारता हूँ तो भी पिस्तौलें चल जायेंगी और वे पांचों मारे जायेंगे। अगर मैं गोली नहीं चलाता तो वे लोग छः महीना साल भर जेल में बंद रहेंगे, फिर इंकलाब उन्हें छुड़ा लेगा और उनकी जान बच जायेगी। सिर्फ मिरेक और मैं जिन्दा नहीं बचूँगा; वे हमें यातनाएँ दे देकर मार डालेंगे। मुझसे तो वह एक भी बात नहीं निकाल पायेंगे, मगर मिरेक से ? वह आदमी जो स्पेन में लड़ा, जो दो साल तक फ्रांस के एक कंसेंट्रेशन कैंप में रहा, जो लड़ाई के दौरान में छुपकर फ्रांस से भाग आया—नहीं, वह कभी कुछ नहीं बतावेगा। फैसला करने को मेरे पास दो सेकंड हैं। या तीन ?

अगर मैं गोली चलाता हूँ तो मैं किसी को नहीं बचा सकता, सिवाय अपने आप को, यातनाओं से—लेकिन पाँच साथियों की जानें चली जायेंगी।

क्या यह बात ठीक है ? हाँ।

अच्छा तो फैसला हो गया। मैं कोने से निकलकर बाहर आ जाता हूँ।

'आह, एक और !'

मेरे चेहरे पर पहला वार। किसी की जान लेने के लिए काफी था वह।

'हथियार डाल दो।'

दूसरा घूँसा, और फिर तीसरा घूँसा।

बिलकुल वही हो रहा है जिसकी मैंने कल्पना की थी।

करीने से सजा हुआ घर अब फर्नीचर और टूटी-फूटी चीजों का एक ढेर हो रहा है।

और भी लात और घूँसे।

'मार्च।'

वे मुझे घसीटकर एक मोटर में ले जाते हैं। पूरे वक्त पिस्तौलों का मुँह मेरी तरफ है। मोटर में ही वह मुझसे सवाल करना शुरू करते हैं।

'तुम कौन हो?'

'प्रोफेसर होराक।'

'तुम झूठ बोलते हो।'

जवाब में मैं अपने कंधे उचकाता हूँ।

'हिलो-डुलो मत वर्ना हम गोली मार देंगे।'

'मारो भी!'

गोली न मारकर वे मुझे घूँसा मारते हैं।

हमारे पास से एक गाड़ी गुजरती है। मुझे ऐसा लगता है मानो उसे सफेद चादर ओढ़ा दी गयी हो। शादी की गाड़ी—रात को? मुझे जरूर बुखार होगा।

पेचेक बिल्डिंग, गेस्टापो का हेडक्वार्टर। मैंने कभी न सोचा था कि मैं इसमें जिन्दा दाखिल हूँगा। वे मुझे मजबूरन चौथी मंजिल तक दौड़ाकर ले जाते हैं। अहा, यही वह मशहूर २—अ विभाग है—कम्यूनिस्ट-विरोधी जाँच-पड़ताल का सदर दफ्तर। मुझे बड़ा कुतूहल होता है।

एक लंबा-सा, दुबला-पतला कमीसार, जो मुझे गिरफ्तार करनेवाली टुकड़ी का नायक था, रिवाल्वर अपनी जेब में रखता है और मुझे अपने दफ्तर में ले जाता है। वह मेरी सिगरेट को माचिस दिखाता है।

'तुम कौन हो?'

'प्रोफेसर होराक।'

'तुम झूठ बोलते हो।'

उसकी कलाई पर जो घड़ी बँधी है उसमें ग्यारह बजा है।

'इसकी तलाशी लो।'

वे मुझे नंगा करते हैं और मेरी तलाशी लेते हैं।

'इसके पास शिनाख्त का एक कार्ड है।'

'नाम ?'

'प्रोफेसर होराक।'

'इसका झूठ-सच पता लगाओ।'

वे टेलीफोन करते हैं।

'हम ठीक ही कहते थे, यह नाम दर्ज नहीं है। कार्ड जाली है।'

'किसने तुमको यह कार्ड दिया ?'

'पुलिस हेडक्वार्टर ने।'

डंडे से पहली बार मार। फिर दूसरी बार, फिर तीसरी बार..... क्या इसे गिनना जरूरी है ? नहीं भाई, इन आंकड़ों की रिपोर्ट लिखाने की कोई जगह नहीं है।

'तुम्हारा नाम ? बोलो। तुम्हारा पता ? बोलो। किन किन लोगों से तुम्हारा संपर्क था ? बोलो। उनके पते ? बोलो। बोलो। बोलो, वर्ना हम तुम्हारी कुटम्मस करेंगे।'

आखिर कोई कितनी मार सह सकता है ?

रेडियो के सिगनल से पता चलता है कि आधी रात हो गयी। अब कैफ़े बंद हो रहे होंगे और आखिरी लोग अपने घर जा रहे होंगे। प्रेमी-प्रेमिका दरवाजे के सामने खड़े हैं, एक दूसरे से विदा लेना उनके लिए कठिन हो रहा है। लम्बा-सा, दुबला-पतला कमीसार चेखुश, मुस्कराता हुआ कमरे में आता है।

'सब कुछ ठीकठाक है, जनाब सम्पादक जी !'

यह इसको किसने बतलाया ? जेलिनेक दंपती ने ? फ्रीड दंपती ने ? क्यों, उन्हें तो मेरा नाम भी नहीं मालूम।

'देखो, हमें सारी बातें मालूम हो गयी हैं। हमसे कुछ छिपाओ मत। पागल न बनो। अक्ल से काम लो।'

उनके खास कोश में अक्ल से काम लेने का मतलब गद्दारी करना होता है।

मैं अक्ल से काम नहीं लूँगा।

'इसे बाँधकर जरा और लगाओ।'

एक बजा। सड़क पर की आखिरी गाड़ियाँ गराजों में बन्द हो रही हैं, सड़कें खाली हैं, रेडियो अपने आखिरी रसिक सुनने वालों को रात का अभिवादन जनाता है।

'केन्द्रीय समिति का सदस्य और कौन है? तुम्हारे ट्रांसमिटर* कहाँ हैं? तुम्हारा प्रेस कहाँ है? बोलो! बोलो! बोलो!'

अब मैं फिर अपने ऊपर पड़नेवाले घूँसे गिन सकता हूँ। मुझे अगर कहीं दर्द महसूस होता है तो होठों में जिन्हें मैं चबाता रहा हूँ।

'इसके जूते निकालो।'

यह सच है मेरे पैरों को अभी मार मार कर बेजान नहीं बनाया गया है। मुझे ऐसा लगता है। पाँच, छ, सात—जैसे वह डण्डा हर बार मेरे दिमाग तक दौड़ जाता हो।

दो बजा। प्राग सो रहा है। कहीं एक बच्चा हलके से रोयेगा, एक आदमी अपनी बीवी के कूल्हे थपथपायेगा।

'बोलो! बोलो!'

मेरी जीभ लहूलुहान होठों पर दौड़ जाती है और गिनने की कोशिश करती है कि कितने दाँत गिर गये। मैं नहीं गिन पाता। बारह, पन्द्रह, सत्रह! नहीं वह तो उन कमीसारों की संख्या है जिनके सामने मेरी 'पेशी' हो

---

* बेतार से खबर भेजने का यन्त्र।

रही है। कुछ के चेहरों पर तो थकान लिखी हुई है। लेकिन फिर भी मौत क्यों नहीं आती।

तीन बजा। चौगिर्द की बस्तियों से सुबह शहर में दाखिल हो रही है। तरकारी-भाजीवाले अपनी गाड़ियाँ चलाते बाजार की तरफ जा रहे हैं, सड़क की सफाई करनेवाले अपने काम में लग गये हैं। शायद एक दिन और मैं पौ फटते देख सकूँगा।

वह मेरी पत्नी को अन्दर लाते हैं।

'तुम इसको जानती हो?

मैं अपने मुँह के आस-पास का खून घोंट जाता हूँ जिसमें वह उसे देख न सके.....लेकिन मैं भी कैसा गधा हूँ, उससे क्या होगा, खून तो मेरे चेहरे के रेशे-रेशे से और मेरी उँगलियों से बह रहा है।

'तुम इसको जानती हो?'

'नहीं, मैं नहीं जानती।'

उसने इस तरह से यह बात कही कि उसकी निगाह तक न चूकी कि कोई भाँप जाता कि उसके दिल पर क्या गुज़र रही है। खरा सोना है वह। उसने हम लोगों की यह शपथ पूरी की कि वह मुझको किसी हालत में पहचानेगी नहीं, गो अब उससे होता क्या है। इन लोगों को मेरा नाम किसने बतलाया?

वे उसे ले गये। मैंने बहुत खुश खुश निगाहों से (जितना कि मुमकिन था) उसको विदा किया। शायद मेरी निगाहें बहुत खुश न थीं। मैं नहीं जानता।

चार बजा। सुबह हो रही है या नहीं? अँधेरी खिड़कियाँ मुझे कोई जवाब नहीं देतीं। और मौत के आने में देर हो रही है। क्या मैं खुद आगे बढ़कर उससे मिलूँ? कैसे?

मैं पलटकर किसी को मारता हूँ और फर्श पर गिर पड़ता हूँ। वे मुझे ठोकर मारते हैं। बूटों से मुझे रौंदते हैं। यह ठीक है, अब जल्दी ही अंत

हो जायेगा। काला काला कमीसार खड़ा-खड़ा मेरी दाढ़ी खींचकर मुझे उठाता है और जो मुट्ठी भर बाल उसके हाथ में आ जाते हैं उन्हें मुझको दिखलाकर शैतान की हँसी हँसता है। मुझे सचमुच अब इस पर हँसी-सी आती है, अब मुझे दर्द का एहसास नहीं होता।

पाँच बजा। छ...सात....दस। फिर दोपहर हुई, कारीगर अब अपनी बेंचों पर होंगे, बच्चे स्कूल में। दूकानों में चीजों की खरीद-फ़रोख्त चल रही है, घर पर लोगों को दोपहर का खाना मिल रहा है। मेरी माँ शायद इस वक्त मेरे ही बारे में सोच रही है। मेरे साथी शायद जान गये हैं कि मैं पकड़ा गया और अब इस बात के इन्तजाम में लगे हैं कि खुद भी न पकड़ जायँ.....अगर मैं सब बातें उगल दूँ तो क्या हो.....नहीं, ऐसा नहीं होगा, तुम मुझपर भरोसा रक्खो। खैर जो भी हो, अब अंत दूर नहीं है। यह सब रात का एक बुरा सपना है, बुखार की हालत में देखा गया एक भयानक खराब सपना। हर तरफ से मुझ पर लात-घूँसे बरसते हैं; फिर वे मुझ पर पानी डालते हैं मुझे होश में लाने के लिए। फिर मार और चीखें। 'बोलो! बोलो! बोलो!' मगर इतने पर भी मेरी मौत नहीं आती। माँ, डैड, तुमने मुझे इतना मजबूत क्यों बनाया कि मैं यह सब भी सह सकूँ?

तीसरा पहर। पाँच बजा। वे सब बुरी तरह थक गये हैं। अब उनके वार धीरे-धीरे हो रहे हैं, काफी रुक-रुक कर, मगर फिर भी वे अपना सिलसिला टूटने नहीं देते क्योंकि वे बुरी तरह थक गये हैं और उनकी समझ में नहीं आता कि और क्या करें। अचानक दूर से, न जाने कितनी दूर से एक शांत गंभीर आवाज आती है जो मुझे थपकी की तरह भली जान पड़ती है:

'उसकी काफी मरम्मत हो चुकी।'

उसके कुछ देर बाद मैं एक मेज से टिककर बैठा हुआ था जो बार-बार मुझसे अलग हो जाती थी और फिर फिर मेरे पास लौट आती थी।

कोई अन्दर आया और उसने मुझे पानी दिया। किसी ने मुझे एक सिगरेट दिया, जिसे मैं नहीं उठा सका। फिर किसी ने मुझको मेरी जूतियाँ पहनाने की कोशिश की मगर फिर कहा, मुझसे नहीं बनता। फिर उन्होंने मुझे कुछ चलाकर और कुछ उठाकर सीढ़ी से नीचे उतारा और मोटर में बिठाला। मोटर चली तो एक आदमी ने अपनी पिस्तौल का निशाना मेरी तरफ कर दिया, यह मुझे हँसी की बात मालूम हुई, मेरी उस हालत में। हम एक टैक्सी के पास से गुजरे, जो सफेद फूलों से ढँकी हुई थी, शादी की गाड़ी थी वह—मगर हो सकता है यह सिर्फ एक सपना हो। या सपना या बुखार या मरना या खुद मौत। मगर मरना मुशकिल है और यह आसान—न मुशकिल न आसान। यह सेमर के फूल की तरह हल्का है—जरा सा फूँक दो तो सब उड़ जायेगा।

सब उड़ जायेगा? नहीं, अभी नहीं। अब मैं फिर खड़ा हूँ, सचमुच खड़ा हूँ, अकेला, बिना किसी सहारे के। अभी-अभी मेरा चेहरा एक गन्दी पीली दीवार के समान हो जायगा जिस पर छींटे हैं.....काहे के? खून के, ऐसा लगता है.....हाँ, यह खून है। मैं उँगली उठाकर उसे खून में डुबोता हूँ.....हाँ यह ताजा खून है.....मेरा खून.....

पीछे से कोई मेरे सिर पर मारता है और मुझे हाथ ऊपर करने और घुटने मोड़कर उकड़ूँ बैठने का हुक्म देता है। नीचे—ऊपर—नीचे। तीसरी बार मैं गिर पड़ता हूँ.....

एक लम्बा-सा नात्सी सिपाही जो वहीं मेरे सिर पर खड़ा है मुझे उठाने के लिए मुझको ठोकर मारता है। अब मुझे ठोकर मारना बिलकुल बेकार है। कोई और आदमी मेरा मुँह धुला देता है, मैं मेज़ से लगा बैठा हूँ। एक औरत मुझे कोई दवा देती है और पूछती है कि मुझे सबसे ज्यादा तकलीफ कहाँ होती है। मैं कहता हूँ कि सारा दर्द मेरे दिल में है।

'दिल तुम्हारे है भी?' वह लम्बा नात्सी सिपाही कहता है।

'क्यों नहीं, जरूर' मैं कहता हूँ और मुझे अपने ऊपर गर्व होता है कि

अभी मुझमें इतनी ताकत है कि अपने दिल की इज्जत बचाने के लिए लड़ सकूँ।

फिर सब कुछ गायब हो जाता है—दीवार, दवा लिये औरत और वह लम्बा नात्सी सिपाही।

मैं फिर जब होश में आता हूँ तब एक कोठरी का दरवाजा मेरे सामने खुलता है। एक मोटा-सा नात्सी सिपाही मुझे अन्दर खींच लेता है, मेरी तार-तार हो रही कमीज को जल्दी से उतारता है, मुझे एक पुआल के गद्दे पर लिटाता है। वह मेरी सूजी हुई देह पर हाथ फेरता है और पट्टियाँ मँगाता है।

सिर हिलाते हुए वह पास ही खड़े एक दूसरे आदमी को लक्ष्य करके कहता है, 'जरा देखो, कैसा पक्का काम करते हैं सब!'

फिर कहीं दूर, बहुत दूर, से वह शान्त गम्भीर आवाज सुनायी देती है जो मुझे एक थपकी की तरह सहानुभूतिशील जान पड़ती है :

'अब सुबह तक इसका बचना मुश्किल है।'

पाँच मिनट में दस का घंटा बजेगा। बसन्त की एक प्यारी प्यारी सुहावनी गर्म शाम। अप्रैल २५, १९४२।

★

दूसरा अध्याय

मर रहा हूँ

★

जब कि सूरज की गर्मी और तारों की रोशनी
हमारे लिए
नहीं रह जाती.....नहीं रह जाती।

गिरजाघर के नीचे के एक तहखाने में जो कब्रों के लिए है और जिसके चारों ओर सफेद दीवार है, दो आदमी, जिनके हाथ नीचे को प्रार्थना की मुद्रा में जुड़े हुए हैं, एक के पीछे एक, गोल गोल चक्कर काट रहे हैं। उनके नौसिखुए गलों से दफन के वक्त का गाना लँगड़ाता-घिसटता निकल रहा है।

कैसे मज़े में रूह परवाज़ करती है
वहाँ जन्नत को जन्नत को.....

कोई मर गया है। कौन ? मैं ताबूत को और लाश को एक नजर देखने के लिए अपना सिर घुमाने की कोशिश करता हूँ—दो मोमबत्तियाँ उसके सिर के पास से ऊपर को उठी हुई हैं।

मैं आँखें उठाकर इधर उधर घुमाता हूँ। यहाँ और कोई नहीं है। इन दो आदमियों और अपने आप को छोड़कर यहाँ मैं और किसी को नहीं देखता। यह लोग किसका मातम कर रहे हैं ?

जहाँ वह सितारये अबदी चमकता रहता है
ईसा मसीह, ईसा मसीह।

किसी को दफन किया जा रहा है, बिलकुल वही चीज मालूम होती है, मगर किसको ? देखें यहाँ पर कौन कौन है—सिर्फ वो दो आदमी और मैं। और मैं ! तो क्या यह मुझे दफनाया जा रहा है ! लेकिन सुनो भाई, जरूर कहीं कोई गलती है। मैं मरा नहीं हूँ। मैं अभी जिन्दा हूँ। तुमको दिखायी नहीं देता कि मैं तुम्हें देख रहा हूँ, तुमसे बात कर रहा हूँ ? ठहरो, मुझे अभी से मत कब्र में गाड़ दो !

...जब कोई हमसे आखरी अलविदा कहता है,
आखरी अलविदा.....

वे मेरी बात नहीं सुनते। क्या वे बहरे हैं ? मैं क्या काफी जोर से नहीं बोल रहा हूँ ? या कहीं मैं सचमुच मर तो नहीं गया और इसीलिए वे एक अशरीरी स्वर न सुन पाते हों ? क्या मेरा शरीर यहाँ इसी तरह मुँह के बल पड़ा रहेगा और मैं अपने को ही दफन होते देखूँगा ? कैसी मज़ाक की बात है।

वह अपनी उम्मीद से भरी आँखें लगाता है
जन्नत पर जन्नत पर.....

अब मुझे याद आया। किसी ने मुझे उठाने और कपड़े पहनाने के लिए जोर लगाया। फिर वह मुझे जनाज़े की चादर पर ले चले, उनके कीलदार बूटों की आवाज से दालान गूँज रहा था और फिर.....बस। मुझे और कुछ याद नहीं।

जहाँ की रोशनी कभी बुझती नहीं।

मगर यह कैसी पागलपन की बात है। मैं अभी जिन्दा हूँ। मुझे कहीं दर्द मालूम होता है, दूर कहीं, और प्यास। मुर्दों को प्यास नहीं लगती। मैं अपना सारा जोर लगा कर हाथ हिलाने की कोशिश करता हूँ और एक अजब अप्राकृतिक सी आवाज मेरे मुँह से निकल जाती है :

'पानी !'

आखिरकार ! उन दोनों आदमियों ने चक्कर लगाना बन्द किया। अब वे मुझ पर झुके, उनमें से एक ने मेरा सिर उठाया और पानी की सुराही मेरे मुँह से लगा दी। 'भाई, तुमको कुछ खाना भी चाहिए। दो दिन से तुम सिर्फ पानी पर हो।'

वह मुझ से यह क्या कह रहा है ? दो दिन हो गये, अभी से ? आज कौन दिन है ?

'सोमवार।'

सोमवार ! और शुक्र को मैं पकड़ा गया था। ओह, मेरा सिर कितना भारी हो रहा है। और पानी इतना ठंडा है। नींद। सो न जाऊँ। एक बूंद ने सोते की सतह पर थरथरी ला दी है। उन पहाड़ों के बीच उस चरागाह का वह सोता। मैं उस जगह को खूब अच्छी तरह जानता हूँ, रोकलान पहाड़ के नीचे, जंगलात के अफसर के मकान के पास, वहीं एक हलकी-सी मगर कभी खत्म न होने वाली फुहार चीड़ की सुईनुमा पत्तियों में गाना-सा गाती है।.....सोने में कैसा मज़ा आता है।.....और फिर जब मेरी आँख खुली तो वह मंगल की शाम थी और मुझ पर एक कुत्ता झुका

हुआ था। एक भेड़ियानुमा कुत्ता। वह अपनी प्यारी प्यारी समझदार आँखों से मुझे बहुत गौर से देखता है और पूछता है :

'तुम कहाँ रहे ?'

अरे नहीं यह कुत्ता नहीं है। यह तो किसी और की आवाज़ है। हाँ, वहाँ और कोई खड़ा हुआ है। मुझे फौजी बूट नजर आते हैं, एक जोड़ा फौजी बूट और एक जोड़ा और, फिर एक सिपाही का पतलून। उससे ऊपर की चीज मैं नहीं देख सकता, सिर उठाने की कोशिश करते ही मेरा सिर चक्कर खाने लगता है। अरे जाने भी दो, आओ सोयें...

बुधवार।

वे दो आदमी जो 'साम'† गा रहे थे अब बैठे मेज पर एक मट्टी के बर्तन में खाना खा रहे थे। अब मैं बता सकता हूँ, कि उनमें कौन कौन हैं। उनमें से एक उम्र में छोटा है और ऐसा लगता है कि वे लोग पादरी नहीं हैं। यह किसी गिरजे की नहीं, जेल की कोठरी है। मैं देखता हूँ फर्श पर के लकड़ी के पटरे बड़ी दूर तक चले गये हैं और जहाँ वह खत्म होते हैं, वहीं पर एक बड़ा भारी, डरावना-सा दरवाजा है.....

उधर ताले में चाभी के घूमने की आवाज़ होती है और इधर दोनों आदमी डर कर अर्टेंशन की हालत में खड़े हो जाते हैं। एस० एस० की वर्दियों में दो और आदमी अन्दर आते हैं और उन्हें हुक्म देते हैं कि वे मुझे कपड़े पहनायें। मैं नहीं जानता था कि हर मोज़े और हर बांह में कितना दर्द छिपा हुआ है। वे मुझे एक स्ट्रेचर पर लिटाते हैं और सीढ़ियों से नीचे ले जाते हैं, उनके भारी बूट उस लंबे सायबान में गूँजते हैं.....अच्छा तो यही वह रास्ता है जिधर से वे मुझे एक बार और ले गये थे जब मैं बिलकुल बेहोश हो गया था। यह रास्ता कहाँ जाता है ? किस नरक में जाकर यह खत्म होता है ?

---

† भजन के ढंग का ईसाई धार्मिक गाना।

पांक्राटस के पुलिस कैदखाने की उस परछाइयों की दुनियाँ में जहाँ दुश्मनी बरतने के लिए कैदियों का सब से पहले स्वागत किया जाता है। वे मुझे फर्श पर रख देते हैं और दोस्ती का अभिनय करती हुई एक चेक आवाज़ एक जर्मन आवाज़ के क्रुद्ध प्रश्न का अनुवाद करती है :

'तुम इस लड़की को जानते हो ?'

मैं हाथ से अपनी ठुड्ढी ऊपर उठाता हूँ। स्ट्रेचर के सामने चौड़े से चेहरे की एक नौजवान लड़की खड़ी है। वह गर्व के साथ तनकर खड़ी है, उसका सिर उठा हुआ है, लेकिन ओछे घमंड से नहीं, उदात्त भाव से। उसकी आँखें भर नीची हैं, इतनी कि मुझे देख सकती हैं और आँखों ही आँखों में अपना अभिनंदन जता सकती हैं।

'मैं नहीं जानता।'

मुझे याद आता है कि मैंने सिर्फ एक बार उसे देखा था, शायद एक सेकेंड के लिए, पेचेक बिल्डिंगवाली उस भयानक रात को। यह दूसरी बार है। और शायद तीसरी बार देखने का मौका नहीं मिलेगा ; आह, काश कि मैं उसका हाथ अपने हाथों में लेकर उसे यह जतला सकता कि जिस आन-बान से वह यहाँ पर खड़ी हुई है उसकी मेरी आँखों में कितनी इज्ज़त है। वह अर्नास्ट लॉरेंज़ की पत्नी थी। वह सन् बयालिस के मार्शल लॉ के पहले ही दिनों में मार डाली गयी।

'मगर इसको तो तुम जरूर जानते होगे !'

अनिच्का जिरासकोवा ! हे भगवान्, अनिच्का तुम यहां कैसे आ गयीं ? मैंने तो तुम्हारा नाम नहीं बतलाया, तुम्हें मुझसे कोई सरोकार भी न था। मैं तुम्हें नहीं जानता, समझीं, मैं तुम्हें नहीं जानता।

'मैं उसको नहीं जानता।'

'होश में आओ, आदमी !

'मैं उसको नहीं जानता।'

'जूलो, कोई बात नहीं' अनिचूका कहती है, और रूमाल मुरेरती हुई उसकी अँगुलियों के जरा-सा काँप जाने से उसके दिल की बेचैनी का भेद खुल जाता है। कोई बात नहीं। किसी ने मुझे पहचनवा दिया।

'किसने ?'

'चुप !' वे उसे जवाब देने नहीं देते और जैसे ही वह मेरी ओर झुकती है और अपना हाथ बढ़ाती है, वे उसे ज़ोर से धक्का देकर एक ओर को कर देते हैं।

अनिचूका !

उनके सवाल अब मुझे सुनायी नहीं देते। मुझे महसूस होता है कि दो नात्सी सिपाही मुझे वापस कोठरी की ओर ले जा रहे हैं लेकिन अब मुझे कोई दर्द नहीं होता, जैसे मैं भी दूर पर खड़ा बस एक तमाशाई हूँ। कितनी बेरहमी से सब स्ट्रेचर को झुलाते हैं, और हँसते हुए मुझ से पूछते हैं कि क्या मुझे फाँसी पर लटकना ज्यादा पसंद होगा।

वृहस्पतिवार।

अब फिर बातें मेरी समझ में आने लगी हैं। कोठरी के दो साथियों में से एक जिसकी उम्र कम है, उसका नाम कारेक है, और वह बड़े वाले को 'पापा' कहता है। वे दोनों मुझको अपने बारे में बतलाते हैं लेकिन वह सब मेरे दिमाग में जाकर गडमड हो जाता है। उनकी बात में कहीं शायद किसी खान का जिक्र है और बैंचों पर बैठे हुए लड़कों का। मुझे घंटी की आवाज सुनायी देती है, शायद कहीं आग लग गयी। लोग कहते हैं कि एक डाक्टर और एक नात्सी फौजी अर्दली रोज मुझे देखने आते हैं— मेरी हालत ऐसी बहुत खराब नहीं और लोग कहते हैं कि जल्दी ही मैं बिलकुल चङ्गा हो जाऊँगा। 'पापा' यही कहते हैं और इतने विश्वास के साथ कहते हैं और कारेक इतने उत्साहपूर्वक उनका समर्थन करता है कि अपनी उस भयानक तकलीफ में भी मुझे लगता है कि वे दोनों सफेद झूठ

बोल रहे हैं। दोनों बड़े अच्छे हैं। मुझे दुःख है कि मैं उनकी बात पर विश्वास नहीं कर सकता।

तीसरा पहर।

कोठरी का दरवाजा खुलता है, और कुत्ता चुपचाप पञ्जों के बल अन्दर आता है। वह मेरे सिर के पास आकर खड़ा हो जाता है और एक बार फिर कुछ खोजती हुई आँखों से मुझे देखता है। फिर दो जोड़ा भारी बूटों की आवाज़। मैंने अभी उन्हें देखा नहीं है लेकिन मैं जानता हूँ कि एक जोड़ा कुत्ते के मालिक पांक्राट्स जेल के सुपरिनटेनडेंट का है और दूसरा गेस्टापो के कम्युनिस्ट-विरोधी विभाग के अध्यक्ष का, जिसकी निगरानी में उस पहली रात को मेरा इम्तहान हुआ था। कुछ शहरियों के पतलून भी दिखलायी देते हैं। मेरी आँखें उन पर उठती हैं—हाँ, मैं जानता हूँ, यही वह लम्बा दुबला कमीसार है जिसने पुलिस के छापे का नेतृत्व किया था। वह कुर्सी पर बैठ जाता है और सवाल करना शुरू करता है।

'तुम बाज़ी हार गये। कम से कम अपनी जान तो बचा लो। बोलो!' वह मुझे सिगरेट पेश करता है। मुझे उसकी जरूरत नहीं है। मैं उसे बर्दाश्त नहीं कर सकूँगा।

'बाक्सस परिवार के संग तुम कितने रोज़ थे?' बाक्सस परिवार के संग! यह तो हद हो गयी। उन्हें किसने बतलाया सब?

जब तुम सब कुछ खुद ही जानते हो, तो मैं और क्यों बतलाऊँ? मैंने अपनी जिन्दगी व्यर्थ नहीं गँवायी है और उसका अन्त भी मैं अपने हाथ से न बिगाड़ूँगा।

मामले की छानबीन एक घंटे तक चली। वह आदमी जोर जोर से चिल्लाता नहीं, बहुत धीरज के साथ वह अपने सवालों को दोहराता है और जब उनका भी कोई जवाब नहीं मिलता, तो फिर वह दूसरा सवाल पूछता है, फिर तीसरा, फिर न जाने कितने, सवालों की एक झड़ी जो कभी खतम नहीं होती।

'मेरी बात तुम्हारी समझ में नहीं आती? यही अन्त है, समझे। बाजी तुम हार गये।'

'अभी सिर्फ मैं हारा हूँ।'

'तुम्हें अब भी कम्यून के जीतने का भरोसा है?'

'बेशक।'

'इसे अब भी इस बात का भरोसा है?' अध्यक्ष जर्मन में पूछता है और कमीसार अनुवाद करता है—'इसे अब भी रूस की जीत का विश्वास है?'

'पूरी तरह। और दूसरा हो भी क्या सकता है।'

मैं थक गया हूँ। मैंने अपनी बचत के लिए अपनी सारी शक्ति एकत्र कर ली थी; अब एक गहरे घाव से बहनेवाले खून के साथ साथ मेरी चेतना भी तेज़ी के साथ खोती जा रही है। मैं उन्हें अपनी ओर हाथ बढ़ाते हुए महसूस करता हूँ—शायद वे मेरे माथे पर मौत के निशान पढ़ रहे हैं। कुछ देशों में यह रवाज भी है कि जल्लाद कैदी को मारने के पहले उसे चूमता है।

शाम।

दो आदमी हाथ जोड़े गोल गोल घूम रहे हैं, एक के पीछे एक और रोती हुई ऊबड़खाबड़ आवाज में यह मातमी गाना गा रहे हैं :

जब सूरज की गर्मी और तारों की रोशनी हमारे लिए

नहीं रह जाती, नहीं रह जाती.....

भलेमानुसो, इसे बन्द करो! शायद यह बहुत अच्छा गाना है, लेकिन आज, आज पहली मई की शाम है, कल पहली मई है, पहली मई, इन्सान का सबसे सुन्दर सबसे ज्यादा खुशी का त्यौहार। मैं खुशी की कोई चीज गाने की कोशिश करता हूँ लेकिन शायद वह बहुत उदास सुन पड़ती है क्योंकि नौजवान कारेक मुँह फेर लेता है और 'पापा'

अपनी आँखें पोंछने लगते हैं। कोई परवाह नहीं, मैं गाता रहता हूँ और धीरे धीरे वे भी मेरा साथ देने लग जाते हैं। मैं खुश खुश सो जाता हूँ।

पहली मई की भोर।

जेल के घंटाघर ने तीन बजाये। पहली बार मुझे वह आवाज साफ साफ सुनायी दी। मेरी चेतना पूरी तरह लौट आयी है। मैं महसूस करता हूँ कि ताज़ी हवा खुली हुई खिड़की में से बहती हुई अन्दर आ रही है और फर्श पर बिछे हुए मेरे पुआल के गद्दे पर फैल रही है। यकायक मुझे भूसे की डंटियाँ चुभती महसूस होती हैं। साँस लेना भी मुश्किल है, क्योंकि मेरे शरीर के एक एक अङ्ग में हजार हजार दर्द हैं। यकायक जैसे कोई खिड़की खोल दे, और मैं देखता हूँ कि मेरा अन्त अब आ गया। मैं मर रहा हूँ।

मौत, तुम्हें आने में बड़ी देर हुई। कभी मुझे आशा थी कि तुमसे मुलाकात करने में मुझे अभी बहुत बहुत बरसों की देर है। मैंने आशा की थी कि आज़ाद आदमी की तरह रहूँगा, खूब काम करूँगा, खूब प्यार करूँगा, गाऊँगा और दुनिया भर घूमूँगा। अब कहीं मुझमें प्रौढ़ता आयी थी और अभी मुझमें सचमुच बड़ी ताकत थी। अब मुझ में ताक़त नहीं है। अब मेरी ताकत गायब हो रही है।

मुझे जिन्दगी से प्यार था और उसकी खूबसूरती के लिए मैं लड़ने गया। लोगो, मुझे तुमसे प्यार था और तुमने जब बदले में मुझे प्यार दिया तो मुझे सुख हुआ। मुझे तकलीफ हुई जब तुमने मुझे गलत समझा। तुम लोग जिन्हें मैंने कोई नुकसान पहुँचाया हो, मुझे माफ़ कर देना और तुम लोग जिन्हें मैंने कोई खुशी पहुँचायी हो, मुझे भूल जाना। खबरदार, उदासी मेरे नाम के संग कभी न जुड़े। यही मेरी आखिरी वसीयत है, पापा, अम्माँ, बहन तुम्हारे लिए, मेरी गुस्टा तुम्हारे लिए, मेरे साथियो, तुम सब जिनसे मुझे प्यार था, तुम्हारे लिए। अगर तुमको लगे कि आँसुओं से तुम्हारे दर्द की उदास धूल धुल जायेगी तो थोड़ी देर रो लेना। लेकिन अफ-

सोस मत करना। मैं आनन्द के लिए जिया; और अब आनन्द के लिए ही मर रहा हूँ और मेरी क़ब्र पर ग़म के फरिश्ते को बिठालना मेरे संग बेइंसाफ़ी होगी।

पहली मई। शहर के आस-पास के इलाकों में हमलोग भोर की इस बेला में उठते और अपने झंडे तैयार करते थे। इसी वक्त मास्को की सड़कों पर सैनिकों की कतारें मई दिवस की परेड के लिए खड़ी हो जाती थीं। इसी वक्त लाखों आदमी इंसान की आजादी की आखिरी लड़ाई लड़ रहे हैं और उसमें हजारों मर रहे हैं। मैं भी उनमें से एक हूँ। इसमें कितना सुख है। इस आखिरी लड़ाई का एक सिपाही होना कितना सुंदर है।

लेकिन मरना सुन्दर नहीं है। मेरा दम घुँट रहा है। मैं साँस नहीं ले पाता। मुझे अपने गले में मौत की खरखराहट सुनायी पड़ती है, अच्छा हो कि मैं अपने साथियों को जगा लूँ। शायद अगर मैं थोड़ा पानी पी लूँ—लेकिन झज्झर में पानी नहीं है। गो मुझसे सिर्फ छः कदम दूर, कोठरी के एक कोने में बहुत सा पानी है, गुस्ल का पानी। क्या उस तक पहुँचने की ताकत मुझमें है?

मैं पेट के बल घिसटता हूँ। खामोशी से, ओह कितनी खामोशी से—गोया मेरी मौत की सारी शान इस बात में हो कि मेरे कारण कोई जागे नहीं। आखिर मैं उसके पास पहुँचा और बहुत सा पानी पी गया, हबोककर।

पता नहीं इसमें मुझे कितनी देर लगी और फिर पता नहीं घिसटकर वापस आने में कितनी देर लगी। चेतना फिर लुप्त हो रही है। मैं अपनी नब्ज़ टटोलता हूँ पर मुझे कुछ पता नहीं चलता। मेरा दिल उछलकर जैसे मेरे गले में आ जाता है और फिर वैसे ही झटके के साथ वापस अपनी जगह पर पहुँच जाता है। मैं भी उसके संग गिरता हूँ, बड़ी देर तक गिरता चला जाता हूँ। बीच में ही मुझे कारेक की आवाज सुनायी पड़ती है।

'पापा पापा, सुनते हो ? बेचारा दम तोड़ रहा है।'

सबेरे डाक्टर आया।

लेकिन उसके बारे में तो मुझे बहुत बाद में पता चला।

वह आया। उसने मुझे देखा सुना और सिर हिलाया। फिर वह अस्पताल लौटकर गया और वह मौतवाली रिपोर्ट फाड़ी जिसमें कल शाम को ही उसने मेरा नाम दर्ज कर दिया था, और एक पक्के विशेषज्ञ के से आत्मविश्वास के साथ कहा—

इस आदमी के शरीर में घोड़े जैसी ताकत है।

★

तीसरा अध्याय

कोठरी नम्बर २६७

★

दरवाजे से खिड़की तक सात कदम, खिड़की से दरवाजे तक सात कदम।

मैं खूब अच्छी तरह जानता हूँ।

पांक्राट्स की इस कोठरी के चीड़ के तख्तों पर मैंने कितनी बार इस फासले को तय न किया होगा! इस कोठरी में मैं शायद इसीलिए बैठा हूँ कि मेरी आँखों के सामने यह बात बहुत साफ थी कि हमारी शहरी जनता की घातक नीति का परिणाम चेक राष्ट्र के लिए कितना भयंकर होगा। मेरा राष्ट्र आज सलीब पर टँगा है; मेरी कोठरी के आगे जर्मन संतरी गश्त लगा रहे हैं और वहाँ बाहर कहीं राजनीतिक भाग्य की देवियाँ देश-द्रोह का ताना-बाना बुन रही हैं। आँखें खुलने के लिए इंसान को कितनी सदियाँ लगेंगी! अपनी प्रगति की राह में उसने कितनी हज़ार कैदखाने की कोठ-

रियाँ पार की होंगी ? अभी और कितनी करेगा ? ओह, नेरूदा* के बाल यीसु, आदमी की मुक्ति की राह का कोई अन्त नहीं है। लेकिन आखिरकार आदमी जागा है।

सात कदम वह, सात क़दम लौटते। एक दीवार से मिला हुआ लकड़ी का एक ओठा † जिसे तोड़ा भी जा सकता है, और दूसरी दीवार से लगकर एक मनहूस भूरे रंग की आलमारी जिस पर मट्टी का कटोरा रक्खा है। हाँ, मैं वह सब जानता हूँ। अब क़ैदखाने में बिजली से काम होता है, सारी जेल की कोठरियाँ एक जगह से गरम की जाती हैं, पुरानी बाल्टी की जगह अब फ्लश की टट्टी है—लोग भी मशीन की तरह के हो गये हैं। खासकर लोग—बिलकुल चाभी से चलनेवाले पुतलों की तरह। एक बटन दबाइए और एक चाभी ताले में आवाज के संग घूमने लगती है या कोठरी में बाहर से झाँकने के लिए बना हुआ चोर सूराख खुलता है—कैदी (वह कुछ भी कर रहे हों) कूद कर अटेंशन की हालत में खड़े हो जाते हैं, एक के पीछे एक। दरवाज़ा खुलते ही कोठरी के सबके वयस्क आदमी को एक साँस में चिल्लाना पड़ता है :

'अटेंशन ! कोठरी नम्बर दो सौ सड़सठ में तीन कैदी—सब ठीक है।'

नम्बर दो सौ सड़सठ हमारी कोठरी है, लेकिन पुतले आज ठीक से उठ-गिर नहीं रहे हैं। सिर्फ दो उछल पाते हैं। मैं खिड़की के नीचे अपने पुआल के गद्दे पर बिना हिले डुले पड़ा रहता हूँ—मैं एक हफ्ता, दो हफ्ते, एक महीना, छः हफ्ते से मुँह के बल लेटा हूँ। मैं कैंचुल छोड़ रहा हूँ। अब मैं सिर घुमा सकता हूँ, हाथ उठा सकता हूँ। मैंने केहुनी के

---

* जान नेरूदा, चेकोस्लोवाकिया का कवि।

† bunk ; कैदी के सोने के लिए।

सहारे अपने शरीर को उठा लिया है ; पीठ के बल लेट जाने की कोशिश भी की है । इतना जरूर है कि अब मैं पहले से तेज लिख सकता हूँ ।

कोठरी में परिवर्तन हुए हैं । दरवाजे पर तीन नामों की जगह अब सिर्फ दो नाम हैं क्योंकि कारेक गायब हो गया है, उन दोनों में से वह कम उम्र वाला जो मेरी मौत पर सर्द गाने गाते थे । अपने पीछे वह अपने रहम खानेवाले दिल की याद भर छोड़ गया है । मैं उसे सिर्फ अधनींदी सी हालत में धुँधला धुँधला देख पाता हूँ और मुझे उसके संग के सिर्फ आखिरी दो दिन याद हैं । वह बार-बार अपने मुकदमे की तफ़सील दोहराता और मैं हर बार उसकी कहानी के बीच में ही सो जाता ।

उसका नाम कारेक मलेत्ज़ है; वह हुडलिट्ज़ के पास कहीं किसी लोहे की खान में गाड़ियों के चढ़ाने-उतारने के खटोले में कारीगर का काम करता था । वह इंक़लाबी लड़ाई को गोला-बारूद पहुँचाया करता था । उसे करीब दो साल हुए पकड़ा गया था और अब शायद बर्लिन में उस पर मुकदमा चल रहा है । दल का दल जा रहा है और पता नहीं उन्हें क्या सजा मिलेगी । उसके बीवी है और दो बच्चे, जिन्हें वह प्यार करता है, बहुत प्यार करता है—लेकिन.....आप ही सोचिए न, वह तो मेरा फ़र्ज़ था, मैं और कुछ कर भी तो नहीं सकता था !

वह अकसर मेरे ओठे पर बैठता और मुझे खाना खिलाने की कोशिश करता । मैं खा न पाता । शनीचर को—क्या मुझे यहाँ आये आठ दिन हो गये ?—वह अपनी आखिरी चाल चलता है और पुलिसमास्टर से मेरी रिपोर्ट करता है कि जबसे मैं यहाँ आया हूँ मैंने कुछ नहीं खाया है। पुलिस मास्टर, नात्सी सिपाही की वर्दी पहने हरदम परेशान रहनेवाला वह पांक्राट्स का अर्दली जिसके हुक्म के बिना चेक डाक्टर किसी मरीज़ को ऐस्पिरिन भी नहीं दे सकता—एक मग्गे में अस्पतालवाला शोरबा लाता है और मेरे सिर पर खड़ा रहता है जब तक कि मैं उसे गले के नीचे उतार नहीं लेता । कारेक अपनी ज़ोर-जबर्दस्ती की इस सफलता पर

बहुत खुश है और दूसरे दिन वह खुद एक मग्गा इतवारी शोरबा मेरे गले के नीचे उतार देता है।

लेकिन उससे ज्यादा मैं नहीं ले सकता। हमको इतवार के रोज जो गूलाश मिलता है उसके जरूरत से ज्यादा उबले हुए आलू भी मेरे छिले हुए मसूढ़ों से नहीं चाबे जाते, मेरा सूजा हुआ गला छोटी-सी चीज भी निगलने में असमर्थ है।

'गूलाश भी नहीं, इन्हें गूलाश भी नहीं चाहिए', कारेक शिकायत के लहजे में कहता है और मुझ पर अफसोस जाहिर करते हुए अपना सिर हिलाता है।

फिर 'पापा' के संग बराबर का हिस्सा लगाकर वह मेरा आधा खाना चट कर जाता है।

ओह, तुम लोग जो सन् ४२ में पांक्राट्स में नहीं रहे, क्या जानो कि गूलाश का स्वाद कैसा होता है। कभी जान भी नहीं सकते! उन बदतरीन दिनों में, जब हमारे पेट भूख के मारे गुड़गुड़ाते थे; जब कि हफ्ते में एक दिन स्नान के रोज फव्वारे के नीचे बैठी हुई शकूलें ठठरियों के समान लगतीं जिन पर आदमी की खाल मढ़ दी गयी हो; जब कि तुम्हारा गहरा-सा-गहरा दोस्त कम-से-कम अपनी निगाहों से तो तुम्हारा खाना चुराता ही था—उन बदतरीन दिनों में सुखायी हुई तरकारियों और पानी मिली हुई टमाटर की चटनी से तैयार शोरबा भी हमारे नजदीक एक पकवान था। उन बदतरीन दिनों में जेल का अफसर हफ्ते में दो रोज, बृहस्पत और इतवार को, हमारे कटोरे में एक बड़ा चम्मच भर आलू निकालकर डाल देता और उस पर एक चम्मच गूलाश का शोरबा टपका देता और गोश्त के दो एक टुकड़े। हमें उसका स्वाद अद्भुत लगता—मगर स्वाद से ज्यादा उसका मूल्य हमारे नजदीक इसलिए था कि वह इंसान की जिन्दगी की याद दिलानेवाली एक चीज थी, एक ऐसी चीज जिसमें सभ्यता है, जो गेस्टापो के कैदखाने की जिन्दगी की क्रूरताओं के बीच आदमी की मामूली

औसत जिन्दगी की एक चीज थी। हम उसके बारे में बात करते वक्त अपने को जैसे भूल सा जाते। ओह, कौन समझ सकता है कि आदमी की निगाह में एक चम्मच अच्छे शोरबे की कीमत कितनी ऽऽ ज्यादा हो सकती है—जब रोज मरने का खौफ उसमें गरम मसाले का काम करता हो!

दो महीना गुजर जाने पर मेरी समझ में भी आया कि मैं जब गूलाश खाने से इनकार कर देता था तो कारेक इतना घबड़ा क्यों जाता था। मेरी आसन्न मृत्यु का इस बात से अधिक अच्छा प्रमाण क्या हो सकता था कि अब मुझे गूलाश खाने की इच्छा भी नहीं होती थी।

उसके दूसरे दिन की रात को दो बजे उन्होंने कारेक को जगाया। उसे पाँच मिनट में तैयार हो जाना था चल देने के लिए, मानों वह सिर्फ जरा सी देर के लिए कहीं घूमने जा रहा हो, न कि जीवन के अन्त तक के सफ़र पर, दूसरे जेल, कंसेंट्रेशन कैंप, फाँसी, कौन जाने कहाँ? उसे मेरे ओठे के पास आकर झुकने, मेरा सिर अपनी बाँहों में समेटने और चूमने में वक्त लगा। तभी, सायबान में, वर्दी पहने हुए सिपाही की घाव करने वाली आवाज सुनायी दी कि पांक्राट्स में भावुकता के लिए कोई जगह नहीं है। कारेक दौड़कर दरवाजे से बाहर हो गया, ताला फिर झटपट भर दिया गया.....और कोठरी में हमलोग दो ही रह गये।

क्या हम फिर कभी मिलेंगे, दोस्त? अब किसकी बारी है? हम दोनों में से कौन पहले जायेगा? कहाँ? उसे लेने कौन आयेगा? एस. एस. की वर्दी पहने सिपाही—या मौत, जो कोई वर्दी नहीं पहनती?

इस वक्त जब मैं लिख रहा हूँ मेरे दिमाग में वे विचार गूँज रहे हैं जो जेल में पहली विदा के संग मुझ पर बुरी तरह छा गये थे। तब से एक साल गुजर गया है और वे विचार जो हमारे उस साथी को दरवाजे तक छोड़ने गये थे, कम या ज्यादा तेजी के साथ कई बार दोहराये जा चुके हैं। हमारी

कोठरी के दरवाजे पर दो की जगह तीन नाम हुए और फिर दो ही रह गये—फिर तीन दो तीन दो—जैसे जैसे नये कैदी आते और हमें छोड़कर चले जाते। सिर्फ हम दो जो कोठरी नम्बर २६७ में रह गये, अब भी पूरी ईमानदारी के संग उसमें बैठे हुए हैं : 'पापा' और मैं।

'पापा' कहीं पढ़ाते थे; उनकी साठ साल की उम्र है और उनका नाम जोज़ेफ़ पेशेक है—गिरफ्तार मास्टरों में वे ही सबसे बड़े हैं। वह मुझसे पचासी रोज पहले पकड़े गये थे क्योंकि वह 'जर्मन राइख के खिलाफ़ षड्-यन्त्र' रच रहे थे और वह षड्यन्त्र क्या था? यही कि वह एक योजना तैयार कर रहे थे कि चेकोस्लोवाकिया के फिर आजाद होने पर चेक स्कूलों को कैसे और उन्नत बनाया जायगा।

'पापा'.....

लेकिन सब तुम कैसे लिख सकते हो, मेरे दोस्त? एक कोठरी में साल भर तक साथ रहनेवाले दो आदमियों के बारे में लिखना हँसी-खेल नहीं है। इस बीच उनके नाम 'पापा' के कोटेशन-चिह्न उड़ गये, और दो अलग अलग उम्रों के कैदी सचमुच बाप-बेटे हो गये। इस दौरान में हम दोनों ने एक दूसरे की बातचीत से वह फ़िक़रे अपना लिये जो हमें अच्छे लगे, चेहरे के वह खास इशारे और यहाँ तक कि आवाज का लहजा। अब यह बताना मुश्किल है कि उस कोठरी में क्या चीज उनकी है क्या मेरी, अपने साथ वह क्या लाये थे और अपने साथ मैं क्या लाया था।

वह रात की रात मेरे पास बैठे रहते और अपनी सफेद गीली पट्टियों से मौत को, जब भी वह पास आती, मार भगाते। वह मेरे घाव की पीब साफ करते लेकिन उन्होंने कभी यह जाहिर नहीं होने दिया कि उसकी भयानक बदबू का, जिससे मेरा ओठा भारी रहता, उन पर कोई असर है। वह मेरी चीथड़ानुमा कमीज धोते, सुधारते और जब वह ऐसी तार-तार हो जाती कि उसे और सुधारना मुमकिन न होता तो अपनी कमीज मुझे पहना देते। वह मेरे लिए एक छोटा-सा डेज़ी का फूल और घास की चंद दूबें

लाये जिनको उन्होंने एक सुबह कसरत वाले आध घण्टे में जेल के आँगन से अपनी जान पर खेलकर तोड़ा था। हर बार वे लोग मुझे 'पेशी' के लिए ले जाते तो 'पापा' की सहानुभूतिशील आँखें कोठरी के बाहर तक मुझे पहुँचाने आतीं और जब मैं लौटता तो वे बड़ी नरमी से गीली पट्टियाँ मेरे नये घावों पर लगाते। कभी रात को जब वे लोग मुझे ले जाते तो पापा तब तक न सोते जब तक कि मैं वापस न आ जाता और वे मुझे मेरे ओठे पर लिटाकर कंबल ठीक से मेरे नीचे दबा न देते।

उस पहली रात की यातनाओं के बाद इस तरह हमारा संबंध शुरू हुआ और उसमें कभी कोई खोट नहीं आयी यहाँ तक कि मैं अपने पैरों पर खड़ा होने लगा और अपने पैतृक ऋण को चुकाने लगा।

लेकिन दोस्त, तुम एक बैठक में वे तमाम बातें नहीं लिख सकते। उस साल कोठरी नम्बर २६७ की जिन्दगी बहुत मालामाल रही और पापा अपने ढंग पर उसके जर्रे जर्रे में समाये रहे। लेकिन वह कहानी अभी खत्म नहीं हुई है—और इसी में आशा की किरण है।

कोठरी नंबर २६७ की जिन्दगी सचमुच बहुत मालामाल थी। कभी कभी दरवाज़ा खुलता और घंटे घंटे पर हम लोगों का मुआयना होता। इसकी वजह यह थी कि उन्हें हुक्म मिला था कि अपने कम्युनिस्ट कैदी पर और कड़ी निगरानी रक्खो, लेकिन इतना ही नहीं, इसके पीछे सामान्य कुतूहल का भाव भी थोड़ा बहुत था। यहाँ पर लोग अकसर मर जाते जब कि किसी को उनके मरने का गुमान भी न होता, लेकिन ऐसा कम ही होता था कि वह आदमी, जिसके मरने की सब लोग राह देख रहे हों, जिये जा रहा हो। दूसरे गलियारों से संतरी आते और ज़ोर ज़ोर से आपस में बातें करते हुए या खामोशी से मेरा कंबल उठाते, विशेषज्ञों की तरह मेरे घावों को समझते और फिर अपनी प्रकृति के अनुसार या तो कोई नकली देह

मज़ाक करते या ज़रा दोस्ताने का लहजा अख्तियार करते। उनमें से एक जिसे हम लोग स्मार्टी कहते हैं, औरों से ज्यादा आता है और बहुत मुस-कराकर पूछता है कि 'उस कम्युनिस्ट शैतान' को कुछ चाहिए तो नहीं। जी नहीं, शुक्रिया। कुछ दिनों के बाद स्मार्टी को पता चलता है कि कम्युनिस्ट शैतान को अब सचमुच कुछ चाहिए—एक शेव। लिहाज़ा वह हजाम को बुला लाता है।

हजाम ही हमारी कोठरी के बाहर का वह पहला कैदी है जिससे हमारी मुलाकात हुई—कामरेड बोशेक। मगर स्मार्टी की भलमंसी बहुत बेरहम साबित हुई। पापा मेरा सिर पकड़ते हैं और बोशेक मेरे ओठे पर झुक कर एक बहुत कुन्द उस्तरे से उस घनी दाढ़ी को काट चलता है, जैसे जंगल साफ कर रहा हो। उसके हाथ काँपते हैं और आँखें भर आती हैं, क्योंकि उसे इस बात का पूरा यकीन है कि वह एक लाश की दाढ़ी बना रहा है। मैं उसे ढाढ़स बँधाता हूँ।

'हिम्मत से काम लो दोस्त। जब मैं पेचेक बिल्डिंग की उन यातनाओं को सह ले गया तो तुम्हारा दाढ़ी बनाना भी सह ही लूँगा।'

लेकिन हम दोनों इतने कमज़ोर हैं कि हमें रुककर सुस्ताना पड़ता है, उसे और मुझे। दो दिन बाद और दो कैदियों से मेरी मुलाकात हुई। पेचेक बिल्डिंग के कमीसार लोग अधीर हो गये हैं। हर रोज़ जब वह मुझे बुला भेजते, पुलिस मास्टर पुर्जे पर लिख देता 'बाहर नहीं भेजा जा सकता।' तब उन्होंने हुक्म दिया कि कुछ भी हो, उसे भेजो। ट्रस्टियों की पोशाक पहने दो कैदी स्ट्रेचर लिये हमारी कोठरी के सामने आकर खड़े हुए। पापा ने बड़ी बड़ी मुशकिलों से मुझे कुछ कपड़े पहनाये, ट्रस्टियों ने मुझे स्ट्रेचर पर लिटाया और ले चले। उनमें से एक कामरेड स्कोरेपा है, सारी बारक का खूब खयाल रखने वाला। दूसरा—है, जिसने उस वक्त जब कि मैं ज़ीने पर स्ट्रेचर के ढलवाँ होने से फिसलने लगा था, मुझ पर झुक कर

कहा—मजबूती से जमे रहो, और फिर धीरे से बुदबुदाया—दोनों ही अर्थों में, जमे रहो।

इस बार हम लोग पहली मुलाकातवाले कमरे में नहीं रुके। वे मुझे एक बड़े हॉल में ले गये जिसमें आदमी भरे हुए थे। बृहस्पत का दिन है, जब घर के लोग अपने कैदियों के लिए साफ़ कपड़े लाते हैं और उनके गंदे कपड़े धुलने के लिए ले जाते हैं। वे हमारे उस उदास जुलूस को हमदर्दी की निगाहों से देखते हैं, पर मुझे वह कुछ अच्छी नहीं लगती। मैं अपना हाथ उठा कर सिर तक ले जाता हूँ और मुट्ठी बाँधता हूँ। शायद वे लोग समझ जायें कि यह मैं सलाम कर रहा हूँ, मगर पता नहीं, शायद यह कुछ नहीं सिर्फ बेवकूफी का एक इशारा हो। लेकिन इससे ज्यादा की, एक शब्द भी बोलने की, ताकत मुझ में नहीं है।

जेल के खुले सहन में उन्होंने स्ट्रेचर ट्रक में रख दिया। दो नात्सी सिपाही ड्राइवर के संग बैठे, दो मेरे सिर पर खड़े हुए, उनके हाथ उनके रिवालवर की खुली थैलियों पर, और हम रवाना हुए। सड़क की हालत बहुत खराब है। पहिये एक गड्ढे से उछलकर दूसरे गड्ढे में पहुँच जाते हैं, और हम लोग मुशकिल से दो सौ गज़ गये होंगे कि मैं बेहोश हो गया। प्राग की सड़कों पर हमारा इस तरह चलना बहुत दिल्लगी से भरा हुआ है—पाँच टन का एक ट्रक जो तीस कैदी ले जाने के लिए काफी है, एक के लिए पेट्रोल जलाता है। दो नात्सी सिपाही सामने और दो पीछे और गिद्धों जैसी उनकी भूखी आँखें एक लाश पर पहरा देती हुई, इस डर से कि कहीं वह उनके पंजों से निकल न भागे।

मेरी बेहोशी की हालत में तो पेशी हो नहीं सकती थी, इसलिए वे मुझे वापस पांक्राट्स ले आये। यही प्रहसन दूसरे रोज़ दुहराया गया, इस बार इतना जरूर हुआ कि पेचेक बिल्डिंग पहुँचने तक मैं होश में रहा। कमीसार फ्रीड्रिक ने जरा लापरवाही से मेरा शरीर छुआ नहीं कि मैं बेहोश हो गया और उन्हें बेहोशी की हालत में ही मुझको वापस ले आना पड़ा।

फिर ऐसे दिन आये जब मुझे इस बात का शक न रहा कि मैं अब भी जिन्दा हूँ। पीड़ा—जिन्दगी की वह जुड़वाँ बहन—मुझे लगातार बड़े निर्दय ढंग से उसकी याद दिलाती रहती। सारे पांक्राट्स को पता चल गया कि किसी भूलचूक के कारण मैं अब भी जिन्दा हूँ और वे मुझे अपनी शुभ-कामनाएँ भेजने लगे—मोटी मोटी दीवारों पर खट्खट् की आवाजों और खाना लानेवाले ट्रस्टियों की निगाहों के ज़रिये।

सिर्फ मेरी बीवी को मेरे बारे में कुछ नहीं मालूम था। मुझसे एक मञ्जिल नीचे और कुछ नम्बर आगे वह अकेली एक कोठरी में आशाओं और चिन्ताओं के बीच दिन काट रही थी, जब पड़ोस की कोठरी की एक औरत ने कसरत के वक्त उसे बताया कि मैं मर गया, पहली यातना में मुझे जो घाव लगे थे, उन्हीं से मेरी मौत हो गयी। यह इतना बड़ा धक्का था कि वह पागल की तरह जेल के उस आँगन के इर्द-गिर्द चक्कर काटने लगी और उसे वह घूँसा भी पता नहीं चला जो स्त्री-संतरी ने उसे उन गिरती पड़ती जीती मरती पैर घसीटती आकृतियों की कतार में वापस ठेलने के लिए मुँह पर मारा था, वे आकृतियाँ यानी जैल की जिन्दगी। उसकी उन बड़ी बड़ी कोमल आँखों के सामने क्या दृश्य गुजरे होंगे जब वह तमाम दिन अपनी कोठरी की दीवारों को ताकती बैठी होगी, दिल ऐसा चूर-चूर कि आँसू न निकलते होंगे? दूसरे दिन उसने दूसरी अफवाह सुनी कि मेरी जान यातनाओं के कारण नहीं निकली बल्कि दर्द से बचने के लिए मैंने कोठरी में अपने आप को फाँसी लगा ली।

पूरे वक्त मैं उस घिनावने मनहूस ओठे पर ऐंठता और करवटें बदलता पड़ा रहा और हर शाम दीवार की तरफ मुँह कर लेता और चाहता कि अपनी गुस्टिना को वह गाना गाकर सुनाऊँ जो उसे सबसे ब्यादा पसन्द है। वह मुझे सुन क्यों नहीं पाती, जब कि मैं इतनी गहरी अनुभूति से गाता हूँ?

वह आज जानती है; वह आज उस गाने को सुन सकती है—बावजूद

इसके कि अब वह पहले से भी ज्यादा दूर चली गयी है। अब सन्तरी इस बात के आदी हो गये हैं कि कोठरी नम्बर २६७ में गाना होता है और अब वह मुझको शान्त करने के लिए दरवाजा नहीं पीटते।

कोठरी नम्बर २६७ गाती है। मैंने तमाम जिन्दगी गाना गाया है और कोई वजह नहीं देखता कि अब आखिरी वक्त गाना बन्द कर दूँ, उस वक्त जब कि इंसान सबसे ज्यादा गहराई से, सबसे उत्कट रूप में जीता है। और पापा पेशेक का क्या हाल है? उनकी तो बात ही अलग है। उनको गाने से बहुत ही ज्यादा प्यार है। उनके पास गला नहीं है, संगीत के खयाल से उनके कान भी कुछ बहुत अच्छे नहीं हैं, न उनकी स्मरणशक्ति ही ठीक है, लेकिन गाने से उन्हें बड़ा गहरा हार्दिक प्रेम है। उन्हें गाने में इतना आनन्द आता है कि मुझे पता ही नहीं चलता कब वह बेसुरे हो जाते हैं और फिर बेसुरा ही गाये जाते हैं। और न उन्हें ही इसकी फ़िक्र रहती है। और इस तरह दिन अच्छा होने पर या जब इच्छाएँ मन पर हावी हो जाती हैं, तब हम लोग गाते हैं। हम एक जाते हुए कामरेड का, जिसे हम फिर शायद कभी न देखें, साथ देने के लिए गाते हैं। हम पूरबी (रूस के—अनुवादक) मोर्चे से अच्छी खबर आने पर उसका स्वागत करने के लिए गाते हैं। हम खुशी के मारे या अपने दिल की तसकीन के लिए गाते हैं जैसे कि लोग सदियों से गाते आ रहे हैं और तब तक गाते रहेंगे जब तक कि वह इंसान हैं।

गाने के बग़ैर कोई जिन्दगी नहीं जैसे सूरज के बग़ैर कोई जिन्दगी नहीं। और यहाँ पर तो हमें गाने की दुगनी जरूरत पड़ती है क्योंकि सूरज हम तक नहीं पहुँचता। कोठरी नम्बर २६७ का मुँह उत्तर को है, इसलिए सिर्फ गर्मी के महीनों में, डूबता हुआ सूरज कुछ मिनटों के लिए हमारी कोठरी की पूरबी दीवार पर खिड़की के जँगले की जाली बुन जाता है। उन कुछ मिनटों में पापा अपने मोड़े हुए ओठे के सहारे झुककर खड़े-खड़े

सूरज की उस ज़रा सी देर की आमद को एकटक ताका करते हैं.....उस से ज्यादा दुखी और उदास कोई दृश्य नहीं हो सकता।

सूरज! कितनी उदारता से वह अपनी जादूभरी किरणें फेंकता है, आदमी की आँखों के सामने वह क्या क्या जादू करता है! लेकिन कितने थोड़े से लोगों को जिन्दगी में सूरज की रोशनी मिलती है। एक दिन, हाँ एक दिन वह हम सभी लोगों को रोशनी देगा और हम सभी उसकी नर्म-गर्म किरणों में नहायेंगे। यह बात जानकर कितनी खुशी होती है। लेकिन अभी मैं उससे कहीं छोटी एक बात जानना चाहता हूँ—क्या वह कभी हम दोनों को रोशनी देगा?

हमारी कोठरी उत्तर को है। कभी ही कभी जब कि गर्मी का बड़ा भाग्यशाली दिन हो, हम सूरज को डूबता हुआ देखते हैं। ओह पापा, मेरी कितनी लालसा है कि मैं एक बार और सूरज को उगता हुआ देखूँ।

★

चौथा अध्याय

नंबर ४००

★

पुनर्जन्म एक बहुत खास घटना होती है। असाधारण, उसे बयान नहीं किया जा सकता। रात को अगर नींद अच्छी तरह आयी है और दिन अगर सुंदर है तो दुनिया बड़ी आकर्षक लगती है। पुनर्जन्म का दिन और दिनों से भी ज्यादा सुंदर होता है, मानों उस रात सदा से भी ज्यादा अच्छी नींद आयी हो। तुम्हारा ख्याल था कि तुम जीवन के रंगमंच को जानते हो लेकिन पुनर्जन्म साफ़ शीशे के आइने से जीवन के रंगमंच पर रोशनी फेंकता है और यकायक तुम उसको रोशनी से भरा हुआ देखते हो। तुम्हारा खयाल था कि तुमने जिन्दगी को काफी अच्छी तरह देखा है लेकिन पुनर्जन्म तुम्हारी आँख में दूरबीन लगा देता है, और खुर्दबीन भी। यह बिलकुल बसंत ऋतु जैसी बात है—देखते नहीं बसंत हमारे सदा के जाने-पहचाने परिवेश में कहाँ से ऐसा जादू भर देता है जिसका हमें सपने में भी गुमान न था

यहाँ इस कोठरी तक में, जहाँ तुम जानते हो कि वह क्षणिक है। यहाँ पांक्राट्स जेल की कोठरी के इस रंगीन और आकर्षक वातावरण में भी !

फिर एक दिन वह तुम्हें बाहर दुनिया की सैर के लिए ले जाते हैं। फिर एक दिन तुम्हारी ऐसी पेशी होती है जिसमें तुम स्ट्रेचर पर चढ़ कर नहीं जाते। गो यह तुम्हें बहुत नामुमकिन-सी बात मालूम होती है, लेकिन तुम वहाँ पहुँच सकते हो। गलियारे में रेलिंग है, ज़ीने पर रेलिंग है; तुम जैसे चलते हो उसे घिसटना कहना ही ज्यादा ठीक होगा। नीचे साथी कैदी तुम्हें गोद में उठा लेते हैं और जेल की बस तक पहुँचा देते हैं। वहाँ तुम बैठते हो, दस या बारह आदमी, उस अँधेरी चलती-फिरती कोठरी में। नये नये चेहरे तुम्हें देख कर मुसकराते हैं और तुम भी जवाब में मुसकराते हो। कोई कुछ बुदबुदाता है और तुम नहीं जानते कि वह कौन है; तुम किसी और का हाथ अपने हाथ में ले लेते हो और नहीं जानते कि वह हाथ किसका है। बस तेजी से घूम कर पेचेक बिल्डिंग के चौक में दाखिल हो जाती है और नये साथी उसमें से तुम्हें निकालकर बाहर लिटाते हैं। तुम सब एक लंबे-चौड़े कमरे में दाखिल होते हो जिसकी दीवारें नंगी हैं और जिसमें बेंचों की पाँच कतारें लगी हुई हैं, जिन पर मानव आकृतियाँ अकड़ी हुई, अटेंशन की हालत में बैठी हैं, उनके हाथ घुटनों पर जमे हुए जकड़े हुए—वे अपने सामने की सूनी दीवार पर अपलक आँख जमाये हैं.....यह तुम्हारी नयी जिन्दगी का एक टुकड़ा है, मेरे दोस्त ; इसका नाम 'सिनेमा' है। वह पर्दा जिस पर तुम अपनी पूरी जिन्दगी को सौ बार गुज़रते देखोगे।

मई दिवस

आज पहली मई १९४३ है जब थोड़ी सी फ़ुर्सत मिली है और मुझे लिखने का मौका है। कैसा सौभाग्य है !—फिर कुछ क्षणों के लिए कम्यु-

निस्ट संपादक बन जाना और मई दिवस को होनेवाली नयी दुनिया की जंगी ताकत की परेड के बारे में एक कहानी लिखना !—

नहीं, इसकी उम्मीद मत करो कि मैं लहराते हुए झंडों के बारे में कुछ कहूँगा, नहीं वह सब कुछ नहीं। और न मैं तुम्हें किसी जोश दिलानेवाली लड़ाई का किस्सा ही सुना सकता हूँ गो मैं जानता हूँ कि लोग उसे बहुत पसंद करते हैं। आज की बात उन सब से कहीं ज्यादा सीधी सादी है; आज हजारों मार्च करनेवालों की वे विस्फोटक लहरें नहीं हैं, जो और साल पहली मई को प्राग की सड़कों पर जोश के संग उबाल खाया करती थीं। लाखों सिरों का वह खूबसूरत समुंदर भी नहीं, जिसे मैंने मास्को रेड स्क्वायर में देखा है। यहाँ लाखों आदमी देखने को नहीं मिलते, और न सैकड़ों; यहाँ तो सिर्फ मुट्ठी भर साथी हैं। लेकिन तब भी लगता है कि यह भी कुछ कम महत्वपूर्ण नहीं है क्योंकि यहाँ एक नयी ताकत का इम्तहान हो रहा है जो भयानक से भयानक आग से गुज़रती है और राख नहीं लोहा बनकर निकलती है। यह लड़ाई के मैदान में होनेवाला इम्तहान है, यहाँ भी हम खाकी वर्दी पहनते हैं।

यह इम्तहान ऐसी छोटी-छोटी बातों में होता है कि मुझे शक है कि तुम अगर लड़ाई की भट्ठी में से नहीं गुज़रे हो तो सिर्फ़ उसके बारे में पढ़कर उसे समझ भी सकोगे। शायद समझ सको। मेरी बात का विश्वास करो, यहाँ शक्ति का जन्म हो रहा है।

बीथोवेन की दो कड़ियों की खट्खट् के रूप में सबेरे का नमस्कार पास की कोठरी से आता है। आज उसमें ज्यादा आग्रह है, ज्यादा उल्लास है और आवाज भी ऊँची है।

हमारे पास जो अच्छे से अच्छे कपड़े हैं उन्हें हम पहनते हैं। सभी कोठरियों में लोग यही करते हैं।

हम बहुत ठाठदार नाश्ता करते हैं। ट्रस्टी कोठरी के खुले हुए दरवाज़ों के सामने बिना दूध का काला कहवा, डबल रोटी और पानी लिये

दौड़ते फिरते हैं। मई दिवस की शुभकामना के रूप में कामरेड स्कोरेपा हमें दो के बदले तीन 'बन' देते हैं। एक सजग आत्मा की शुभकामना, एक ऐसे व्यक्ति की, जो अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति का कोई न कोई अनूठा तरीका निकाल ही लेता है। 'बनों' के नीचे हमारी उँगलियाँ एक दूसरे को छूती हैं और बहुत धीरे से ही सही मगर दबाती हैं। बोलने की कोई हिम्मत नहीं कर सकता—वे हमारी आँखों के भाव की भी कड़ी निगरानी रखते हैं। लेकिन गूँगे अपनी उँगलियों से ही आपस में अच्छी तरह बात कर लेते हैं।

हमारी खिड़की के नीचे कैदियें कसरत के लिए बाहर आती हैं। मैं जँगले में से नीचे देख सकने के लिए मेज़ पर चढ़ जाता हूँ। शायद वे ऊपर की ओर नजर उठायें। वे मुझे देख लेती हैं और मुट्ठियाँ बाँधकर लाल सलाम करती हैं। और एक बार और। नीचे सहन में बड़ा अच्छा है—और दिनों के मुकाबले में सचमुच उल्लासपूर्ण। संतरी यह सब देखता नहीं—या देखना नहीं चाहता। वह भी मई दिवस की परेड का एक अंग है।

फिर हमारी बारी आती है और आज मुझी को कसरत करवानी है। आज पहली मई है दोस्तो, हमें कोई नयी चीज शुरू करनी चाहिए, संतरी देखता हो चाहे न देखता हो। पहली कसरत हथौड़ा घुमाना है—एक दो, एक दो। दूसरी है फसल काटना। हथौड़ा और हँसिया—बात लोगों की समझ में आ जाती है। सभी लोगों में मुसकराहट की एक लहर सी दौड़ जाती है और लोग उत्साह के साथ कसरत करने लगते हैं। यह हमारा मई दिवस का प्रदर्शन है साथियो; यह मूक अभिनय मई दिवस की हमारी शपथ है कि हम दृढ़ रहेंगे, हम भी जो मौत की तरफ मार्च कर रहे हैं।

वापस कोठरियों में। नौ बजा। क्रेमलिन के घण्टाघर में दस बजता है और रेड स्क्वायर में परेड शुरू होती है। आओ, पापा, वे लोग इंटरनाशियोनाल गा रहे हैं। सारी दुनिया में इण्टरनाशियोनाल गूँज रहा है, हमारी कोठरी में भी तो गूँजे। हम इण्टरनाशियोनाल गाते हैं और एक के

बाद एक कई इन्क़लाबी गाने। हम अकेले नहीं रहना चाहते—और न हम अकेले हैं। हम लोग उनमें से हैं जो वहाँ, बाहर, दुनिया में आजादी के संग गाने की हिम्मत रखते हैं। वे लड़ रहे हैं, जैसे हम.....

उन सर्द दीवारों के पीछे
जेल के हमारे साथियो,
तुम हमारे साथ हो तुम हमारे साथ हो।
गोकि तुम हमारी कतार में मार्च नहीं कर सकते।

हाँ, हम तुम्हारे साथ हैं।

कोठरी नंबर २६७ में हमने इसको मई दिवस १९४३ के उत्सव का उचित उपसंहार समझा। लेकिन अंत यह नहीं था। औरतों की बारक की वार्डर मुँह से लाल फौज का मार्चिङ्ग-गीत बजाती हुई वहाँ सहन में घूम रही है। फिर वह पार्टिज़ैन्का (छापेमार लड़की का गीत) और दूसरे सोवियत गाने सीटी बजाकर निकालती है, और इस तरह वह मर्द कैदियों की हिम्मत में अपनी हिम्मत का योग देती है। और चेक पुलिस की वर्दी पहने वह आदमी जो मेरे लिए कागज़ और पेंसिल लाया था और अब मेरी कोठरी के सामने पहरा दे रहा है जिसमें मेरे लिखते वक्त कोई अचानक आ न जाय। और वह दूसरा चेक संतरी जिसने मुझे लिखने के लिए प्रेरित किया और अब मेरे लिखे हुए कागज़ दिन उस तक के लिए कहीं छिपाने को ले जाता है जिस दिन कि वे छप सकेंगे। कागज़ के इस टुकड़े के लिए उसे अपने सिर की कीमत भी चुकानी पड़ सकती है, लेकिन वह सीखचों में बन्द आज और आजाद कल के बीच कागज़ का एक पुल बनाने के लिए अपनी जान खतरे में डालता है। वे सब एक ही लड़ाई लड़ रहे हैं, बहादुरी के साथ लड़ रहे हैं, जहाँ कहीं भी वे हों, जो भी हथियार उनके हाथ आयें। इतनी सादगी से वे इस लड़ाई को लड़ते हैं, किसी तरह का प्रदर्शन का भाव नहीं और किसी तरह के दर्द से इस कदर खाली

कि उन्हें देखकर तुम समझ ही नहीं सकोगे कि वह एक ऐसी लड़ाई लड़ रहे हैं जो मौत के संग खत्म होगी, जिसमें जान बचने और जान जाने में सिर्फ एक सूत का फर्क होता है।

दस बार, बीस बार तुमने क्रांति के सैनिकों को मई दिवस के रोज़ परेड करते देखा है, और कितनी शानदार थी वह भीड़। लेकिन लड़ाई में ही फौज की असली ताकत का पता चलता है और तब तुमको मालूम होता है कि यह सेना अजेय है। मौत जैसा कि तुम उसके बारे में सोचते थे उससे कहीं आसान है और वीरता के इर्द-गिर्द देवमूर्तियों जैसा कोई अलौकिक ज्योतिर्मण्डल नहीं है। लेकिन लड़ाई जैसा कि तुमने उसे खयाल किया था, उससे कहीं ज़्यादा निर्मम है और अन्त तक डटे रहने और जीतने के लिए असीम शक्ति लगती है। तुम इस सेना को आगे बढ़ते देखते हो, लेकिन इसमें कितनी ताकत है, इसे सदा अनुभव नहीं करते—इसकी चोटें इतनी सीधी-सादी मगर बेपनाह पड़ती हैं।

आज यह बात तुम्हारी समझ में आती है। १९४३ के मई दिवस की परेड के वक्त।

यकुम मई १९४३ ने कुछ देर के लिए इस कहानी के प्रवाह को खंडित कर दिया। स्वाभाविक भी था। त्यौहार के मौक़ों पर इंसान कुछ दूसरे ही ढंग से सोचता है, और आज मुझे जो खुशी महसूस हो रही है, मुमकिन है इस दिन की मेरी याद को वह बिगाड़ दे।

लेकिन पेचेक बिल्डिंग का 'सिनेमा' निश्चय ही कोई अच्छी लगने वाली चीज न थी। वह यातनागृह से लगा हुआ बड़ा कमरा है, जहाँ से तुम्हें दूसरों की चीखें और कराहें सुनायी देती हैं और तुम सोचते हो कि तुम पर क्या गुजरनेवाली है। उसके अन्दर लोग दाखिल होते हैं तंदुरुस्त और ताकतवर और दो-तीन घंटे बाद निकलते हैं यातनाओं से टूटे हुए, कुचले हुए, लंगड़े और लूले और ज़ख्मी और बेकार। अन्दर जाते वक्त

एक ताकतवर मर्दानी आवाज़ तुमसे विदा लेती है—और लौटने पर वही आवाज दर्द से रुँधी होती है, उखड़ी उखड़ी, बुखार की-सी हालत में। और कभी कभी तो इससे भी बुरी चीज़ देखने को मिलती है। तुम्हारे सामने एक आदमी अन्दर दाखिल होता है, उस वक्त उसकी निगाहें साफ और सीधी होती हैं; मगर जब वह लौटता है तब तुमसे आँख नहीं मिला सकता, उसकी निगाह में चोर होता है। वहाँ यातनागृह में एक पल के लिए उसमें कमजोरी आयी थी, अनिश्चय, डर और अपनी जान बचा लेने की अत्यन्त प्रबल इच्छा का एक पल, बस एक पल। मगर इसका मतलब है कि कल वे लोग नये शिकारों को लायेंगे, जिन्हें शुरू से लगा कर तमाम यातनाएँ सहनी होंगी, वे लोग जिनका सुराग़ उस साथी ने दुश्मन को दिया।

वह आदमी जिसका शरीर बेकार और लुंज कर दिया गया है उससे भी बुरा और तकलीफदेह उस आदमी को देखना है जिसका साहस टूट गया हो, और जिसकी अन्तरात्मा बुझ गयी हो। मगर मौत, जो यहाँ घूमती फिरती है, अगर उसका स्पर्श तुम्हारी आँखों को लगा है, अगर पुनर्जन्म ने तुम्हारी ज्ञानेन्द्रियों को जगाया है, तो बिना एक शब्द के तुम जान जाओगे कि किसके पैर काँप गये, किसने किसी दूसरे का भेद बताकर उसके संग दगा की, किसने एक पल के लिए ही सही यह विचार अपने मन में आने दिया कि सर खम कर देना ही ठीक है और अपने साथियों में सबसे मामूली से एक आदमी का नाम बतला देने में ऐसा बड़ा हर्ज भी क्या है! जो कमजोरी के शिकार होते हैं वे सचमुच बड़े दयनीय हैं। उनकी वह ज़िंदगी क्या होगी जिसका मूल्य उन्होंने एक दूसरे साथी की जिन्दगी से चुकाया है!

मुमकिन है पहली बार जब मैं सिनेमा में बैठा था तब यह विचार मेरे मन में न आया हो, लेकिन अकसर यह बात मेरे मन में आती। बिल-

कुल भिन्न परिस्थितियों में यह विचार उस दिन मेरे मन में आया, उस कमरे नम्बर ४०० में जो अक्ल और समझ की खान है।

मुझे सिनेमा में बैठे अभी ज्यादा देर नहीं हुई थी, शायद एक घंटा, शायद डेढ़ घंटा जब किसी ने पीछे से मेरा नाम पुकारा। दो शहरी लोगों ने जो चेक बोलते थे मुझे अपनी निगरानी में लिया, लिफ्ट में मुझे लिटाया, चौथी मंजिल पर बाहर निकाला और एक दूसरे बड़े कमरे में ले गये जिसके दरवाजे पर नंबर ४०० की तख्ती लटक रही थी।

पहले तो मैं अपने आप बैठा रहा, दीवार के पास की उस अकेली कुर्सी पर बिलकुल अकेला, और कुछ इस भाव से अपने चारों ओर निहारता रहा जैसे अभी इस मुहूर्त के पहले भी मैं एक बार जी चुका हूँ। क्या मैं इसके पहले कभी यहाँ आया था? नहीं, कभी नहीं। लेकिन यह सब मेरा जाना-पहचाना है। मैं इस कमरे को जानता हूँ, इसके बारे में एक बुखार की-सी हालतवाला क्रूर सपना देख चुका हूँ। उस सपने ने इस कमरे की शकल बिगाड़ दी थी और उसे मेरी आँखों में बेहद घृणित बना दिया था, लेकिन ऐसा नहीं कि मैं उसे पहचान न सकूँ। अभी तो यह बड़ा आकर्षक लग रहा है, कमरे में रोशनी भर रही है और रंग साफ नज़र आता है, टिन चर्च और लेटना का हरा बाग़ और किला, जो सब बड़ी बड़ी खिड़कियों और उनके हलके जालीदार पर्दों के बीच से दिखायी देते हैं। मेरे सपने में तो वह कमरा बिलकुल अंधेरा था और एक खिड़की नहीं, उसका रंग मटमैला पीला-सा और उनके बीच आदमी छाया जैसा दीख पड़ता। हाँ, यहाँ तो आदमी थे। अब यह खाली है और पास पास एक के पीछे एक छः बेंचें, डैंडेलियन* और बटरकप† के एक चमक-

---

* ककरौंदा, पीले फूल का पौदा जिसकी पत्तियाँ दनदानेदार होती हैं।
† प्यालानुमा फूल का पौदा।

दार हरे मैदान-सी लगती हैं। सपने में तो यह जगह आदमियों से भरी लगती थी, बेंचों पर एक दूसरे से सट कर बैठे हुए, उनके चेहरे पीले और खून से लथपथ। वहाँ, दरवाजे के काफी पास, काम के समय का नीला चोग़ा पहने एक आदमी खड़ा था, जिसकी आँखें संत्रस्त थीं जो पीना चाहता था, पीना, और जो गिरते हुए पर्दे की तरह फर्श पर ढेर हो गया.....

हाँ, ऐसी ही थी मेरी कल्पना, लेकिन अब मेरी समझ में आता है कि वह सपना नहीं था। वह डरावना सपना नहीं था, वह हो चुका था।

मेरी गिरफ्तारी और पहली पेशी की उस रात को। वे तीन बार मुझे यहाँ लाये थे—शायद दस बार, मुझे क्या मालूम—जब भी वे आराम करना चाहते या किसी और की मरम्मत करना चाहते। मैं नंगे पैर था और मुझे याद है फर्श की टाइल ने मेरे सूजे हुए पैरों को ठंडक पहुँचायी थी तो मुझे कैसा आनन्द आया था।

युंकर्स कारखाने के मजदूरों से उस रात बेंचें भरी थीं—गेस्टापो की उस शाम की शिकार थीं वे। नीला, लम्बा-सा चोग़ा पहने जो आदमी दरवाजे के पास खड़ा था वह युंकर्स के पार्टी सेल का कामरेड बार्टन था, मेरी गिरफ्तारी का परोक्ष कारण। इस विचार से कि कोई मेरी गिरफ्तारी के लिए जिम्मेवार न ठहराया जाय, मैं कहना चाहता हूँ कि इसकी वजह किन्हीं साथियों की कायरता या विश्वासघात नहीं बल्कि सिर्फ लापरवाही और दुर्भाग्य है। कामरेड बार्टन अपने सेलकी तरफ से, हिटलर-विरोधी छापेमार आंदोलन के बड़े बड़े नेताओं से संपर्क कायम करने की कोशिश कर रहे थे। उनके मित्र कामरेड जेलिनेक ने उनकी ओर से संपर्क स्थापित करने का वायदा करके अंडरग्राउन्ड आन्दोलन का नियम भङ्ग किया, जब कि करना उन्हें यह चाहिए था कि पहले मुझसे कहते कि मैं सीधे कामरेड बार्टन से संपर्क स्थापित कर लूँ, ऊपर से नीचे। वह एक गलती थी। दूसरी गलती यह हुई कि ड्वोराक नामका खुफिया कामरेड बार्टन के पास से

जेलिनेक का नाम जान गया। इस तरह जेलिनेक परिवार गेस्टापो के पंजे में आ गया, किसी बड़े काम को करने में असफल रहने के कारण नहीं—वह तो वे लगन और ईमानदारी से दो साल से करते आ रहे थे—बल्कि उस छोटी सी सेवा के कारण जो अंडरग्राउंड आंदोलन के नियमों का थोड़ा सा उल्लंघन करती थी। ऐसा हुआ कि उन्होंने उसी शाम जब कि मैं जेलिनेक के यहाँ गया था, जेलिनेक दंपती को गिरफ्तार करने का निश्चय पेचेक बिल्डिंगमें किया था और यह बिलकुल आकस्मिक बात थी कि वे लोग इतनी संख्या में और इतनी तैयारी से वहाँ गये थे। वैसी कोई योजना पहले से नहीं बनायी गयी थी; जेलिनेक दम्पती को वे लोग दूसरे रोज़ पकड़नेवाले थे। लेकिन युंकर्स के पार्टी सेल के सदस्यों को पकड़ने में गेस्टापो को कामयाबी मिली तो मारे जोश और खुशी के वे हँसी हँसी में ही जेलिनेक के यहाँ गये थे। उनके आ जाने से हमको जितना अचम्भा हुआ, उससे कम अचम्भा उनको मुझे वहाँ पाकर नहीं हुआ। उन्हें यह भी नहीं मालूम था कि उन्होंने किसको पकड़ा है। और शायद उन्हें कभी पता न चलता अगर उसके साथ साथ.....

यह विचार सबसे पहले नंबर ४००१ में मेरे दिमाग़ में आया था। इसको आगे बढ़ाने का मौका मुझे बहुत देर में मिला। तब तक मेरा अकेलापन खत्म हो गया था, अब बेंचे भर चुकी थीं और दीवारों से लगी एक कतार खड़ी थी और एक से एक अनहोनी बातों को अपने गर्भ में छिपाये घण्टे तेज़ी के साथ बीतते जा रहे थे। इनमें से कुछ तो ऐसी अजीब थीं कि उन्हें मैं समझ नहीं सका; कुछ में दुष्टता कूटकूटकर भरी थी, और उन्हें मैं खूब समझता था।

पहली अनहोनी बात न तो ऐसी अनहोनी ही थी और न दुष्टतापूर्ण, वह तो बल्कि एक नेकी की बात थी, बहुत छोटी-सी और महत्वहीन, लेकिन तब भी मैं उसे कभी नहीं भूलूँगा। गेस्टापो के उस आदमी ने जो मुझे गौर से तक रहा था—मुझे याद आता है वह वही था जिसने मेरी गिरफ्तारी

के बाद मेरा एक एक जेब उलट कर तलाशी ली थी। अपनी जलती हुई आधी सिगरेट मेरी तरफ फेंकी। तीन हफ्तों में पहली सिगरेट, उस आदमी के लिए जो एक बार फिर जमीन पर लौट आया था। मैं इसे उठा लूँ ? कहीं वह यह तो नहीं सोचेगा कि एक सिगरेट से उसने मुझे खरीद लिया ? मगर जिस निगाह से वह सिगरेट को देख रहा है वह बिलकुल खुली हुई, निष्कपट है; किसी को खरीदने में उसे कोई दिलचस्पी नहीं है। लेकिन मैं पूरी सिगरेट नहीं पी सका। हाल के पैदा हुए बच्चे बहुत सिगरेट नहीं पी सकते।

दूसरी अनहोनी बात—चार आदमी फौजी ढंग से मार्च करते हुए आते हैं और उपस्थित लोगों को, मुझे भी, चेक जबान में नमस्कार करते हैं। वे मेज के पीछे बैठ जाते हैं, काग़ज़ात फैला देते हैं, सिगरेट जला लेते हैं, सब बहुत आराम से जैसे वह ज्यादा कुछ नहीं महज़ अफ़सर हों। लेकिन मैं उन्हें जानता हूँ, कम से कम तीन को जानता हूँ—क्या यह मुमकिन है कि वे गेस्टापो के संग काम करें ? शायद—लेकिन ये तीनों भी ? क्यों, वह तो टेरिंग्ल है या रेनेक जैसा कि हम लोग उसको पुकारते थे, बहुत दिनों तक यूनियन और पार्टी का सेक्रेटरी रहा, प्रकृति तो उसकी चञ्चल और उद्दण्ड जरूर थी, लेकिन उसकी वफादारी में कोई सन्देह नहीं। नहीं, यह कभी नहीं हो सकता ! वह आंका विकोवा है, अब भी वह खूबसूरत है और उसकी कमर सीधी है, गो उसके बाल एकदम सफेद हो गये हैं। वह बड़ी निडर और दृढ़ संकल्प की लड़नेवाली थी—नहीं, यह कभी नहीं हो सकता ! और वह देखो वाशेक रेज़ेक है, उत्तरी बोहेमिया की खानों में काम करने वाला राजगीर और फिर पार्टी का जिला-मन्त्री—मैं उसे खूब अच्छी तरह जानता हूँ। उन तमाम लड़ाइयों के बाद जो हम लोगों ने संग संग उत्तर के इलाकों में लड़ी, आखिर कोई भी चीज़ कैसे उसकी कमर तोड़ सकती थी ? नहीं, ग़ैर मुमकिन ! लेकिन यहाँ ये लोग कर क्या रहे हैं ? ये लोग चाहते क्या हैं ?

मैं अभी इन सवालों का जवाब भी नहीं ढूँढ़ पाया था कि नये सवाल पैदा हो गये। वे लोग मिर्का, जेलिनेक दंपती और फ्रीड दंपती को अन्दर लाये—हाँ मैं जानता हूँ कि वे लोग मेरे संग पकड़े गये थे। लेकिन कला का इतिहासवेत्ता पावेल क्रोपाचेक जिसने बुद्धिजीवियों के बीच काम करने में मिरेक की मदद की थी, वह यहाँ कैसे आया? यह बात मेरे और मिरेक के अलावा और कौन जानता था? और वह लंबा सा नौजवान आदमी जिसका चेहरा भुर्ता कर दिया गया है यह दिखलाने की कोशिश क्यों कर रहा है कि हम लोग एक दूसरे को नहीं जानते? मैं सचमुच उसे नहीं जानता। लेकिन वह कौन हो सकता है? क्यों वह तो श्टिच है। श्टिच? डाक्टर ज़डेनेक श्टिच? या खुदा, इसका मतलब है डाक्टरों की कमेटी तक उनके पंजे पहुँच गये। लेकिन उनके बारे में सिवाय मिरेक के और मेरे और कौन जानता था? और जेल की कोठरी में मुझे सता सताकर वे लोग मुझसे बुद्धिजीवियों के बारे में क्यों पूछ रहे थे? बुद्धिजीवियों के बीच जो काम हो रहा था उसके संग मुझे जोड़ने की अक्ल उनमें कहाँ से आयी? उसके बारे में सिवाय मिरेक के और मेरे तीसरा कौन जानता था?

जवाब पाना कुछ कठिन नहीं था, लेकिन था वह एक क्रूर आघात—जरूर मिरेक ने ही ज़बान खोली है, उसने हम सब लोगों को पकड़वाया होगा। एक पल के लिए मेरे मन में यह आशा आयी कि मुमकिन है उसने सब कुछ न बताया हो, लेकिन थोड़ी ही देर में क़ैदियों का दूसरा गुच्छा आया और मैंने देखा कि उसने क्या कर डाला है।

हर वह व्यक्ति, जो चेक बुद्धिजीवियों की राष्ट्रीय क्रान्तिकारी समिति का सदस्य समझा जाता था इस समय यहाँ पर मौजूद था, व्लाडिमीर वांचुरा, लेखक; प्रोफेसर फेलबर और उसका लड़का; बेडरिक वाक्लावेक, जो इतनी सफाई से भेस बनाये था कि पहचाना नहीं जा सकता था; बोज़ेना पुलपानोवा, जिंडरिक एल्ब्ल, मूर्तिकार ड्वोराक। मिरेक ने जरूर बुद्धिजीवियों के बीच काम की तमाम बातें बतला दी होंगी।

पेचेक बिल्डिंग में पहली बार जो मेरा वक्त गुजरा वह भी कुछ बहुत आराम का नहीं था, लेकिन यह आघात जो मुझे सहना पड़ा सब से ज्यादा क्रूर था। मैंने मौत की बात सोची थी, गद्दारी की नहीं। उसके बारे में राय बनाते वक्त मैं कितनी ही नर्मी से काम क्यों न लेता, उसके अपराध को कम करनेवाली कैसी कैसी परिस्थितियाँ ही क्यों न सोच डालता, लेकिन उस सबके बाद भी मैंने उससे उम्मीद यही की थी कि वह दुश्मनों को कुछ बतायेगा नहीं, और अब उसकी इस हरकत के लिए मेरे पास गद्दारी के सिवा और कोई शब्द नहीं है। यह पैरों की थरथरी या कमजोरी न थी और न यह ऐसे आदमी की कातर भूल थी जिसे यातनाएँ दे देकर मौत के पास पहुँचा दिया गया हो—इन चीजों को इन्सान माफ कर सकता है। अब मेरी समझ में आया कि उस पहली रात को ही उन्हें मेरा नाम कैसे पता चल गया। अब मैं जान गया एनी जिरासकोवा यहाँ कैसे आयी, क्योंकि मैं दो बार उसके घर पर मिरेक से मिला था। अब मैं समझ गया क्रोपाचेक और डाक्टर श्टिच यहाँ क्यों आये।

उसके बाद मैं रोज नंबर ४०० में ले जाया जाता, और रोज कुछ नयी नयी तफसीलें खुलतीं। यह बड़ी करुण और बड़ी भयानक बात थी। यह एक हिम्मतवर आदमी था; उसे गोलियों का डर नहीं था जब कि वह स्पेन के मोर्चे पर लड़ा था और न ही उसने फ्रांस के एक कंसेंट्रेशन कैंप की बेरहम जिन्दगी के आगे ही सिर झुकाया। लेकिन गेस्टापो के आदमी के हाथ में छड़ी देखकर वह पीला पड़ गया था, और अपने दाँत बचाने के लिए उसने हमारे संग गद्दारी की थी। कितना ओछा था उसका विश्वास और उसकी हिम्मत, जो कुछ चोटों से बचने की खातिर टूट गयी। बहुत से लोगों के बीच रहने पर, जब उसके चारों ओर उसके जैसे खयाल के साथी होते, तब उसमें हिम्मत रहती। जब तक वह उनके बारे में सोचता रहता तब तक उसमें ताकत रहती। लेकिन सब से कटकर अलग जा पड़ने पर, कमजोरी की खोज में घावों में उँगलियाँ दौड़ानेवाले दुश्मन के

बीच अकेला पड़ जाने पर, उसकी सारी ताकत हवा हो जाती, उसका सब कुछ नास हो जाता क्योंकि वह अपने बारे में सोचने लगता। अपनी जान बचाने की खातिर उसने अपने साथियों को हलाक कर दिया, कमजोरी को जगह दी और कमजोरी ही में गद्दारी कर गया।

वह भूल गया कि इशारों की ज़बान में लिखे गये जो कागज़ात उसके कमरे में पाये गये थे, उनका मतलब खोल कर रखने से कहीं अच्छा होता कि वह मरना कबूल करता। उसने उन तमाम कागजों के मतलब खोल कर उनके सामने रख दिये। उसने उन्हें (क्रान्तिकारियों के) नाम दिये, वह पते दिये जहाँ वे लोग छिप कर रहते थे। श्टिच के संग कहीं मिलने का उसने वायदा किया था, वहाँ वह अपने साथ गेस्टापो के एक आदमी को लेता गया। ड्वोराक के घर में वाक्लावेक और क्रोपाचेक को लेकर एक मीटिंग हो रही थी, वहाँ उसने पुलिस को भेजा। एनी को उसने खुद पुलिस के हवाले किया। लिडा बहादुर लड़की थी और उससे प्यार करती थी, उसके संग भी उसने गद्दारी की, उसे भी पकड़वाया। जो बातें उसे मालूम थीं उनका आधा तो उसने दो ही चार मुक्कों-घूँसों में उगल दिया। और जब उसने समझा कि मैं मर गया और अब किसी के सामने उसे जवाबदेही नहीं करनी पड़ेगी, तो उसने बाकी सब भी कह डाला।

इस सब से वह मुझे कोई नुकसान नहीं पहुँचा सका। मैं तो गेस्टापो के हाथ में पहले ही से था—मुझे अब क्या चीज़ नुकसान पहुँचा सकती थी? लेकिन उसके जवाबों ने एक बहुत लंबी-चौड़ी छान-बीन के लिए जमीन तैयार की, गवाहियों का एक सिलसिला शुरू किया जो होते होते मुझ तक पहुँचता था। उसने ऐसी ऐसी बातें उन्हें बतलायीं जिन्हें जान कर उनकी खुशी का ठिकाना न रहा। क्या मैंने और मेरे साथ के दूसरे लोगों ने इसीलिए मार्शल लॉ की जिन्दगी गुज़ारी थी? उसके और मेरे चले जाने के बाद मेरा दल तो न रह जाता। लेकिन अगर उसने अपना

मुँह बन्द रक्खा होता तो उसके और मेरे मर जाने के बहुत ज़माने बाद भी उसका दूसरा दल जीता और काम करता होता।

कायर आदमी सिर्फ अपनी ही जिन्दगी से हाथ नहीं धोता। यह आदमी एक नायाब फौज का साथ छोड़कर भागा और सबसे घृणित दुश्मन के आगे जाकर उसने आत्मसमर्पण कर दिया। यों वह अब भी जिन्दा है, लेकिन सच पूछिए तो वह कभी का मर चुका, क्योंकि उसने अपने दल से अपने आपको अलग कर लिया। बाद में उसने अपनी गलती का भुगतान करने की कोशिश की, लेकिन उसे फिर वापस लिया नहीं गया। और यह सामाजिक बहिष्कार जेल में तो और भी असह्य हो जाता है।

कैद और अकेलापन इन दो बातों को अकसर लोग एक समझते हैं, लेकिन यह बहुत बड़ी गलती है। कैदी अकेला नहीं होता। जेल भी एक बिरादरी है और सख्त से सख्त कालकोठरी भी उसे अपने दोस्तों से अलग नहीं कर सकती—जब तक कि वह खुद अपने आप को अलग न कर ले। गुलामों की बिरादरी पर जो जोर जबर्दस्ती होती है वह उसको और भी ताकत देती है, सबको एक ही धागे में पिरो देती है, यहाँ तक कि सब एक दूसरे के दुख-सुख के साझीदार बन जाते हैं। वह दीवारों में घुस जाती है और दीवारों में जान आ जाती है, वे बोलने और खट्खट् की जबान में संदेसा पहुँचाने लगती हैं।

यह बिरादरी हर बारक की कोठरियों को अपने में समेट लेती है, ये तमाम बारकें जिनके एक से काम हैं, एक सी परीशानियाँ हैं, जिनके एक ही संतरी हैं और खुली हवा में कसरत के जिनके घण्टे भी एक ही हैं। वे जब कोठरियों के बाहर एक दूसरे से मिलते हैं तब एक शब्द या एक इशारा कोई खबर पहुँचाने या कभी-कभी एक आदमी की जान बचाने

के लिए काफी होता है। यह बिरादरी उन कैदियों को एकता की डोर में बाँध देती है जो पेशी के लिए एक संग ले जाये जाते हैं, साथ-साथ 'सिनेमा' में बैठते हैं। इस बिरादरी में शब्दों का लेन-देन बहुत कम होता है, मगर सेवाएँ बहुत बड़ी, क्योंकि एक बार हाथ का मिलाना या एक सिगरेट का उपहार तुमको बन्द करके रखनेवाले कठघरे के सीखचे तोड़ देने के लिए, और तुम्हें उस अकेलेपन से मुक्त करने के लिए काफी है जिसका उद्देश्य तुमको तोड़ देना है। कोठरियों के हाथ होते हैं और तुमको महसूस होता है कि जब तुम अमानुषिक यातनाएँ भुगतकर लौटते हो तब वे तुम्हें अपनी बाँहों में लेकर गिरने से बचा लेती हैं। वे तुम्हें खाना खिलाती हैं, जब दूसरे तुम्हें भूखों मार रहे होते हैं। कोठरियों के आँखें होती हैं और तुम जब फाँसी के लिए बिदा होते हो तब वे तुम पर निगाह रखती हैं और तुमको महसूस होता है कि तुम्हें कमर सीधी करके चलना चाहिए, तनकर, बिना डरे क्योंकि तुम उनके भाई हो और तुम्हारा एक भी कदम डगमगाना नहीं चाहिए क्योंकि उस कोठरी को तुम्हें कमजोर नहीं करना है। यह एक ऐसी बिरादरी है जिसके हजार घावों से खून बहता रहता है लेकिन तब भी वह अजेय है। बिना उसके सहारे के तुम अपने सिर पर आये हुए बोझ का एक दसवाँ हिस्सा भी नहीं उठा सकते। न तुम न आदमी का जाया और कोई।

अगर मैं यह कहानी जारी रख सका (क्योंकि इंसान को न दिन मालूम है न घण्टा) तो उसमें नम्बर ४०० का जिक्र बार-बार आयेगा, इस अध्याय का शीर्षक भी तो वही है। पहले मुझे उसका ध्यान एक कमरे की शक्ल में आया, और वहाँ पर मेरे मन में जो विचार पहले-पहल आये उन्हें किसी तरह सुखद नहीं कहा जा सकता। मगर यह कमरा नहीं, एक कलेक्टिव (समष्टि) है, एक सोद्देश्य, लड़नेवाली टोली है, और सुखी भी।

गेस्टापो की कम्युनिस्ट-विरोधी टुकड़ी का काम बढ़ने के साथ-साथ यह

'सिनेमा' सन् ४० में शुरू हुआ। पहले यह 'अंदरूनी जेल विभाग' की कम्युनिस्टों के लिए नियत शाखा थी, कम्युनिस्टों को यहीं बैठकर इन्तजार करने की हिदायत थी जिसमें हर बार जब गेस्टापो का अफसर उनसे कोई सवाल पूछना चाहे तो उन्हें पहली मञ्जिल से चौथी मञ्जिल पर ले जाने की परीशानी बच जाय। उनका खयाल था कि इससे उनका काम आसान हो जाता है; यह 'सिनेमा' खोलने में यही उनका उद्देश्य था।

अगर आप दो आदमियों को साथ रख दें, और खास तौर पर अगर वे कम्युनिस्ट हों तो पाँच मिनट में उनका संगठन तैयार हो जाता है और आपकी तमाम योजनाओं को तहस-नहस कर चलता है। सन् ४० में 'सिनेमा' का नामकरण हुआ 'कम्युनिस्ट सेन्ट्रल' और उसमें बहुत से परिवर्तन हुए। हजारों साथी, मर्द और औरतें, बारी-बारी से इसकी बेञ्चों पर बैठे। लेकिन एक चीज कभी नहीं बदली—इस समष्टि की आत्मा, इस समष्टि की जिसमें लड़ने की लगन है और जिसे अन्तिम विजय में दृढ़ विश्वास है।

नम्बर ४००, लड़ाई के मैदान में एक बहुत आगे बढ़ी हुई खाई थी जो दुश्मनों से पूरी तरह घिरी हुई थी, जिस पर हर तरफ से गोलियों की बौछार हो रही थी, लेकिन जो दुश्मन के आगे हथियार डालने की बात एक मिनट के लिए भी सपने में भी नहीं लाती थी। यहाँ लाल झंडा फहराता है। अपनी आजादी के लिए लड़नेवाले समूचे राष्ट्र की पूर्ण एकता हमारी इस समष्टि की दृढ़ एकता में अभिव्यक्त होती है।

नीचे, खास 'सिनेमा' में एस. एस. के संतरी ऊँचे ऊँचे बूट पहने गश्त लगाते; तुम्हारी आंख जरा-सी झँपी नहीं कि उन्होंने चिल्लाकर तुमको गाली दी। ऊपर नम्बर ४०० में चेक इन्सपेक्टर और पुलिस विभाग के गुप्तचरों की ड्यूटी लगती। ये लोग चाहे अपनी इच्छा से चाहे अपने बड़े अफ़सरों के हुक्म से दुभाषिए की हैसियत से गेस्टापो की नौकरी में दाखिल

होते और गेस्टापो के गुप्तचरों का काम करते—या काम करते असली चेकों का। कभी कभी दोनों ही। यह कुछ जरूरी न था कि आप यहाँ हाथ घुटनों पर और आँखें सीधे सामने को तकती हुई, अटेंशन की हालत में बैठें। आप आराम से भी बैठ सकते थे, अपने चारों तरफ ताक भी सकते थे, अपने हाथ भी हिलाडुला सकते थे। आप इससे ज्यादा भी कुछ कर सकते थे, मगर यह बात इस पर निर्भर थी कि इन तीनों में से किस किस्म के संतरी उस वक्त ड्यूटी पर हैं।

नम्बर ४०० में मानव प्राणी को बहुत पास से देखने और समझने का मौका मिलता है। मृत्यु की समीपता हम सभी को उघाड़कर अपनी असली नंगी शकल में खड़ा कर देती है। हम सभी यानी वे जिनकी बाँहपर लाल फीते बँधे हुए थे, वे कम्युनिस्ट जिनका इम्तहान चल रहा था या वे लोग जिनके बारे में यह शक था कि वे कम्युनिस्टों से सहयोग करते हैं या वे लोग जो यहाँ हमारी निगरानी के लिए रक्खे गये थे और जो पास के ही एक कमरे में इस छानबीन में मदद पहुँचाते थे। उस दूसरे कमरे में, यातना के समय, शब्द ही तुम्हारी ढाल थे और शब्द ही तुम्हारे हथियार। यहाँ नम्बर ४०० में तुम शब्दों के पीछे नहीं छुप सकते। यहाँ वे तुम्हारे शब्दों को नहीं तौलते; वे तौलते हैं उस चीज़ को जो तुम्हारे अन्दर है, जिस चीज से तुम बने हो। यहाँ आते आते तुम्हारे पास जीवन की सबसे महत्वपूर्ण चीज़ें ही बच जाती हैं और वे तमाम चीज़ें जो तुम्हारे असली बुनियादी व्यक्तित्व में मिलावट करती हैं, उसे कमज़ोर बनाती हैं या खूबसूरत बनाती हैं मौत के पहले आनेवाले तूफानों से न जाने कहाँ हवा हो जाती हैं। बच जाता है सिर्फ कर्त्ता और कर्म : वफादार मोर्चा लेता है, ग़द्दार ग़द्दारी करता है, बहादुर लड़ता है, कमज़ोर हथियार डाल देता है। हम सभी में कमजोरी और ताक़त, साहस और भय, दृढ़ता और कातरता, पवित्रता और कल्मष रहता है। यहाँ पर सिर्फ एक चीज़ रह जाती है, यह या वह, हाँ या नहीं। यहाँ पर अगर कोई इन दो सीमाओं के बीच

नट सा खेल करने की कोशिश करता तो वह वैसे ही सबसे अलग सा जान पड़ता जैसे उसने अपने हैट में पीला सा पर खोंस लिया हो या मजीरे लेकर एक मातमी जुलूस में चल रहा हो।

इस तरह के आदमी बहरहाल, दोनों ही में थे, कैदियों में भी और चेक इंस्पेक्टरों और गुप्तचरों में भी। तहक़ीक़ात के दौरान में वे एक मोमबत्ती राइख के अपने देवता की वेदी पर रखते और एक यहाँ नम्बर ४०० में बोलशेविक दानव के आगे। वे जर्मन कमीसार के आगे तुमसे तुम्हारे सन्देसा ले जानेवाले का नाम उगलवाने के लिए तुम्हारा दाँत तक तोड़ सकते हैं, वे ही नम्बर ४०० में तुम्हारी भूख कम करने के लिए तुम्हें रोटी का एक और टुकड़ा भी दे सकते हैं। तलाशी के वक्त वह तुम्हारे घर की एक एक कीमती चीज़ें चुरा लेंगे, नम्बर ४०० में वे हमदर्दी दिखलाने के लिए तुमको अपनी चोरी के माल में से आधा सिगरेट भी दे देंगे। कुछ थे—पहली किस्म से कुछ भिन्न—जो अपने आप कभी तुम्हें तकलीफ न पहुँचाते लेकिन इनसे किसी किस्म की मदद की उम्मीद भी नहीं की जा सकती। उन्हें हर वक्त अपनी जान की चिंता ही बनी रहती और राजनीति की दुनिया में रोज का मौसम कैसे बदल रहा है इसे नापने के लिए वे बहुत अच्छे बैरोमीटर साबित होते। जब उनकी शानोशौकत बहुत बढ़ी हुई हो और वह बहुत अफसराना ढंग से बात करते हों, तब समझ जाओ कि जर्मन स्तालिनग्राद के मोर्चे पर जीत रहे हैं। जब उनका बर्ताव इतना दोस्ताना हो जाये कि वे एक कैदी के संग बातचीत शुरू कर दें तो इसका मतलब है कि स्तालिनग्राद के मोर्चे पर जर्मनों को हार खानी पड़ी है। जब वे तुम्हें अपने चेक [illegible]ओं के बारे में बतलाना शुरू कर दें या यह कहें कि उन्हें मजबूरी से गेस्टापो की नौकरी करनी पड़ती है—तब फिर क्या कहने! इसका साफ मतलब है कि लाल फौज रोस्तोव पर चढ़ाई कर रही है। एक और तरह का जानवर होता है जो उस वक्त जब कि तुम डूबते रहते हो, अपने जेब से हाथ नहीं निकालता, लेकिन जब तुम अपनी मेह-

नत से, किसी तरह मरते-खपते किनारे तक पहुँच जाते हो तब वह तुम्हारी तरफ बड़ी मुस्तैदी से अपना हाथ बढ़ा देता है।

इस किस्म के लोग अपनी सहज अंतश्चेतना से नंबर ४०० की संघ-शक्ति को अनुभव करते और उस शक्ति के ही कारण उसके पास पहुँचने की कोशिश करते। मगर वे कभी उसका अंग न बन पाते। एक और भी किस्म के लोग थे जो यह समझ ही न सके कि ऐसा संघ कहीं है भी। मैं उन्हें खूनी कहूँगा, लेकिन खूनी मनुष्य-जाति के होते हैं। वे चेक-भाषी दरिन्दे थे, जिनके हाथ में डंडे और लोहे की छड़ें थीं, जो हमें ऐसी यातनाएँ देते कि बहुत से जर्मन कमीसार देख न पाते और मैदान छोड़ कर भाग खड़े होते। वे अपनी वासनाओं के संयम का ढोंग भी नहीं करते—न अपने राष्ट्र के लिए न राइख के लिए। वे लोगों को यातनाएँ इसलिए देते कि उन्हें इसमें मजा आता; वे हमारे दाँत तोड़कर गिरा देते, कानों के पर्दे फाड़ देते, आँखें निकाल लेते, पेड़ू में ठोकरें मारते या मारते मारते हमारा भेजा निकाल लेते और यह सब सिर्फ अपने भीतर की क्रूर [illegible] को संतुष्ट करने के लिए। वह हर रोज दिखायी देते और तुम्हें उनकी मौजूदगी सहनी पड़ती, वह मौजूदगी जो हवा को मौत और खून से भारी कर देती है। उनके विरुद्ध अकेला कवच जो तुम्हारे पास था वह था इस बात का दृढ़ विश्वास कि चाहे वे अपने जुर्मों के आखिरी गवाह तक को मार क्यों न डालें लेकिन वे बच न सकेंगे, और एक न एक दिन उन्हें इन्साफ की गिरफ्त में आना होगा।

इसी किस्म के लोगों के साथ वे भी थे जो सचमुच इंसान थे, जिनका नाम सोने के अक्षरों में लिखा जाना चाहिए। वे लोग जो जेल के नियमों का इस्तेमाल कैदियों की रक्षा के लिए करते, जिन्होंने नंबर ४०० के जेल कलेक्टिव को बनाने में मदद पहुँचायी और जो अपने पूरे दिल से और हिम्मत से उसके होकर रहे। उनकी महत्ता इसलिए और भी है कि वे कम्युनिस्ट नहीं थे; इसके विपरीत, संभव है उन्होंने चेक पुलिस के गुप्त-

चरों की हैसियत से कम्युनिस्टों के खिलाफ काम भी किया हो। लेकिन उन्होंने जब हमें आक्रमणकारियों से लोहा लेते देखा तब उनकी समझ में आ गया कि राष्ट्र के लिए कम्युनिस्टों का क्या महत्व है, और उस वक्त से वे हम सब लोगों की, जो जेल की उन बेंचों पर भी सच्चे और क्रान्ति के प्रति वफादार बने रहे, मदद करने लगे।

बाहर, हमारे कितने ही सैनिकों के पैर डिग गये होते अगर उन्हें इस बात का कुछ भी अंदाज होता कि एक बार गेस्टापो के हाथ में पड़ जाने पर उनकी क्या गत बनेगी। यहाँ, जेल के ये वफादार साथी—इनकी आंखों के सामने हर रोज हर घंटे ये डरावनी बातें होती थीं। हर घंटे इस अंदेशे में उनकी जिन्दगी चल रही थी कि उन्हें भी कैदियों के संग डाल दिया जायगा और फिर उनसे भी ज्यादा सख्त इम्तहान उनकी हिम्मत और इंसानियत का लिया जायगा। लेकिन वे डिगे नहीं। उन्होंने हजारों लोगों की जानें बचाने में मदद की और जिनकी जान वे नहीं बचा सके उनकी तकलीफ को कम करने की उन्होंने कोशिश की। वे सच्चे अर्थों में वीर हैं। उनके बिना नंबर ४००, हजारों कम्युनिस्टों के लिए वह कुछ न बन पाता जो कि वह बना : एक अँधेरी इमारत में रोशनी का एक टुकड़ा, दुश्मन की पाँतों के पीछे हमारी एक खाईं, आक्रमणकारी की माँद में ही आजादी की लड़ाई का केन्द्र।

★

पांचवां अध्याय

चित्र और रेखाएँ

★

इतिहास के इस युग से जो लोग गुजर चुके हैं, मैं उनसे एक बात कहना चाहता हूँ—उन लोगों को कभी मत भूलना जो इस संघर्ष में हिस्सा ले रहे हैं। अच्छों और बुरों दोनों को याद रखना। जितनी भी साखी हो सके उन लोगों के बारे में बटोरना जिन्होंने तुम्हारी खातिर और खुद अपनी खातिर जान दी। यह वर्तमान, समय के फेर से, बीते दिनों का इतिहास हो जायगा; आनेवाली सदियाँ इसे एक महान् युग कहेंगी जिसमें ऐसे वीरों ने इतिहास की सृष्टि की जिनका नाम कोई नहीं जानता। मगर उन सबके नाम थे, आकृतियाँ थीं, आशाएँ और आकांक्षाएँ थीं। इसीलिए उनमें जो छोटे से छोटा है उसके कष्ट और उसकी यातनाएँ भी उन बड़े से बड़े लोगों से कम नहीं हैं जिनके नाम इतिहास में सुरक्षित रहेंगे। मैं सिर्फ यह चाहता हूँ कि तुम उन सबके संग निकटता

का अनुभव करो, मानों तुम उनको जानते हो, मानों वे तुम्हारे अपने परिवार के लोग हों, मानों उनकी जगह पर तुम खुद हो।

वीरों के कुटुम्ब के कुटुम्ब मौत के घाट उतार दिये गये हैं। उनमें से किसी को चुन लो और उसको अपने बेटे-बेटी की तरह प्यार करो; उन पर वैसा ही गर्व करो जैसा कि तुम किसी महान् व्यक्ति के लिए करते जो भविष्य के लिए जिया। वे सभी जो भविष्य के लिए जिये, जो भविष्य के प्रति आस्थावान् थे, जिन्होंने भविष्य को सुन्दर बनाने के लिए अपने प्राणों की बलि चढ़ायी, वे सभी इस योग्य हैं कि उनको प्रस्तर-मूर्तियाँ बनवाई जायँ। और वे जिन्होंने अतीत की गर्द से क्रांति की बाढ़ के खिलाफ मेंड़ बाँधने की कोशिश की, वे सड़ती हुई लकड़ी के पुतले हैं, उनके कन्धों पर ऊँचे-ऊँचे रुतबों के चमकदार निशान चाहे जितने हों। इन लोगों को भी, इनकी सारी दयनीय क्षुद्रताओं, क्रूरता और हास्यास्पदता समेत जीती-जागती शकल में देखना जरूरी है क्योंकि वे भी हमारी भावी की कल्पना के उपादान हैं।

जेलिनेक दम्पती

जोजेफ़ और मेरी। पति बस का कंडक्टर, पत्नी घर की नौकरानी। क्या ही अच्छा हो कि तुम उनका घर जाकर देखो। चिकना, सादा, आधुनिक फर्नीचर, एक बुककेस, एक छोटी-सी मूर्ति, दीवार पर चित्र—और कमरे की स्वच्छता, असंभव स्वच्छता। आप कहेंगे कि मेरी का सारा अस्तित्व इसी घर में बन्द है और वह बाकी दुनिया के बारे में कुछ नहीं जानती। लेकिन ऐसा नहीं है, उसने बरसों कम्युनिस्ट पार्टी में काम किया है और सामाजिक न्याय के अपने सपने देखे हैं। उन दोनों ने लगन से, मगर खामोशी के साथ, काम किया—और जब दुश्मन के आक्रमण ने उनसे बड़ी कुर्बानियों की माँग की तब वे पीछे नहीं हटे।

उनको छिपे-छिपे काम करते तीन बरस हो गये थे। तभी एक रोज पुलिस दरवाजे तोड़कर उनके घर में घुस आयी.....

वे एक दूसरे के कंधे से कन्धा मिलाये खड़े थे, उनके हाथ सिर के ऊपर उठे हुए—और वहाँ एक दूसरे को छूते हुए।

मई १९, १९४३

आज वे मेरी गुस्टिना को 'काम करने के लिए' पोलैंड पकड़ ले जायेंगे। गुलामी की जिन्दगी, टाइफस की मौत। उसे अब कुछ हफ्ते ही और जिन्दा रहना है, शायद दो-तीन महीने। और मेरा मामला तो अदालत के सिपुर्द कर दिया गया है! अभी शायद और चार हफ्ते पांक्राट्स में सवाल-जवाब का दौर चलेगा, फिर दो-तीन महीने और, मौत तक। मेरी ये टिप्पणियाँ कभी पूरी न होंगी। अगर अगले कुछ दिनों में मौका मिला तो मुझसे जितना बन पड़ेगा लिखने की कोशिश करूँगा। लेकिन आज मैं न लिख पाऊँगा। आज मेरे मन पर गुस्टिना छायी हुई है। गुस्टिना—एक नेक और मुहब्बत की गरमी से गरम इंसान, जीवन में मेरी सच्ची अनमोल दोस्त। मेरा जीन जिसमें गहराई तो थी मगर शान्ति? शायद कभी नहीं।

लगातार कई शामें मैंने उसे उसके प्यारे गाने गा-गाकर सुनाये हैं। स्टेप्स की वह कुछ नीली-सी घास जो छापेमारों की लड़ाइयों के शानदार किस्से अपनी नर्म आवाज में कानों में कह जाती है। एक कजाक लड़की की कहानी जो अपने पति के कन्धे से कन्धा मिलाकर आजादी के लिए लड़ी, और फिर कैसे एक लड़ाई के बाद फिर कोई उसे जमीन से उठा न सका। ओह, मेरी जाँबाज दिलेर दोस्त—उस छोटी-सी जान में और उसके उस खूबसूरत तराशे हुए मुखड़े में कितनी ताकत छिपी हुई है! उन बड़ी-बड़ी, भोली-भोली, बच्चों-जैसी आँखों में कैसी असीम कोमलता है!

इंकलाब की लड़ाई कभी थमी नहीं और उसकी खातिर हमें अकसर एक दूसरे से अलग होना पड़ता। यही कारण था कि सारी जिन्दगी हम एक-दूसरे के प्रेमी-प्रेमिका बने रहे और आलिङ्गन और पहले मिलन के वे उत्तप्त क्षण सैकड़ों बार हमारी जिन्दगी में फिर-फिर आये। हमारे दो दिलों की धड़कन एक है और वह एक ही साँस है जो हम दोनों खुशी के क्षणों और परीशानी के घण्टों में लेते हैं, उस वक्त जब कि आवेग हमारे अंग अंग से छलका पड़ता है और उस वक्त भी जब कि दुःख से हमारी एक-एक रग सर्द होती है।

बरसों हमने साथ काम किया है और बरसों हमने एक-दूसरे की मदद की है जैसी कि सिर्फ एक दोस्त दूसरे दोस्त की कर सकता है। बरसों उसी ने सबसे पहले मेरी रचनाओं को पढ़ा है और उनकी आलोचना की है; मुझे लिखने में दिक्कत होती है जब तक मुझे यह एहसास न हो कि उसकी आँख मुझ पर लगी है। बरसों हमने उन संघर्षों में एक दूसरे का साथ दिया है जिनसे हमारी जिन्दगी मालामाल रही है। बरसों हमने एक दूसरे के हाथ में हाथ देकर इस अपनी प्यारी धरती की सैर की है। हमारी जिन्दगी में परीक्षा की घड़ियाँ भी बहुत आईं और बहुत बड़ी-बड़ी खुशियाँ भी क्योंकि हम उस धन से मालामाल थे जो कि गरीबों के पास होता है—वह धन जो हमारे अन्दर है।

गुस्टिना ?—उसको देखना चाहते हो, लोः

साल भर हुआ, जून का महीना आधा बीत चुका था, मार्शल लॉ लगा हुआ था। मेरी गिरफ्तारी के छः हफ्ते बाद उसने पहले-पहल मुझे देखा, उन मनहूस तकलीफदेह दिनों के बाद जब वह अकेली अपनी कोठरी में मेरी मौत की अफवाहों के खिलाफ लड़ती रहती। मुझे डिगाने के खयाल से वे उसे मेरे यहाँ ले आये।

हम दोनों को आमने-सामने खड़ा करके विभाग के अध्यक्ष ने गुस्टिना से कहा—"इनको समझाओ। इनसे कहो कि व्यर्थ ज़िद न करें। अगर इन्हें अपनी फिक्र नहीं है तो कम-से-कम तुम्हारी फिक्र तो होनी चाहिए। तुम लोगों को सलाह-मशविरा करने के लिए एक घण्टा दिया जाता है। अगर उसके बाद भी तुम लोग अपनी ज़िद पर अड़े रहे, तो आज रात को तुम्हें गोली मार दी जायगी, तुम दोनों को।"

गुस्टिना ने अपनी निगाहों से मुझे थपकियाँ दीं और बहुत सादगी से कहा—"मिस्टर कमीसार, मेरे लिए यह कोई धमकी नहीं है। यह मेरी अन्तिम और सबसे बड़ी लालसा है। अगर आप इन्हें गोली मारें तो मुझे भी मार दीजिएगा, कृपा होगी।"

यह है मेरी गुस्टिना, असीम प्यार, अपार शक्ति। गुस्टिना, वे हमारी जान ले सकते हैं, मगर वे हमारा प्रेम और हमारा स्वाभिमान नहीं ले सकते।

लोगो, तुम क्या सोचते हो कि अगर यह सब तूफान गुज़र जाने के बाद फिर कभी हमारा मिलन हुआ तो हमारी जिन्दगी की क्या शकल होगी? फिर आजादी की हसीन जिन्दगी में मिलना, जिसमें सबकी आजादी से एक नयी दुनिया का जन्म हो रहा है, जब कि हमें वह चीज मिल जायेगी जिसकी कि हमें चाह थी, जिसके लिए हमने इतने धीरज से काम किया और अब जिसके लिए हम मौत को गले लगाने जा रहे हैं! मरने के बाद भी तुम्हारे उस महान् सुख के एक अंश में हम जीवित रहेंगे क्योंकि उसके लिए हमने अपने प्राणों की आहुति दी है। उसी में हमारी खुशी है; मगर अलग होना बड़ा कठिन है।

लेकिन उन्होंने हमें एक दूसरे से अलविदा न कहने दिया, गले न मिलने दिया, यहाँ तक कि हाथ भी नहीं मिलाने दिया। सिर्फ यह है कि जेल के कुछ हमदर्द कर्मचारियों के जरिये जो पांकाट्स और कारलोवो

स्क्वायर के दरमियान खबरें लाते ले जाते हैं, हमें कभी-कभी एक दूसरे की किस्मत के बारे में पता चल जाता था।

तुम जानती हो गुस्टिना और मैं जानता हूँ कि अब शायद कभी भी हम लोग एक दूसरे को न देख सकेंगे। लेकिन तब भी तुम्हारी आवाज दूर से मुझे पुकारती हुई सुनाई पड़ती है : अगली मुलाकात तक के लिए विदा, प्रिय, विदा.....

उस दिन तक के लिए विदा गुस्टिना, विदा.....मेरी गुस्टिना !

मेरी आखिरी वसीयत

मेरे पास अपना पुस्तकालय छोड़ और कुछ न था। गेस्टापो ने उसे भी तहस-नहस कर दिया।

मैंने सांस्कृतिक और राजनीतिक सवालों पर कई लेख लिखे, साहित्य और नाटक की बहुत सी आलोचनाएँ और समीक्षाएँ लिखीं, पत्रकारिता का बहुत सा काम किया। इन रचनाओं में से बहुत सी ऐसी थीं जो बिलकुल सामयिक थीं महत्व था और दिन बीतने के साथ वे खत्म भी हो गयीं। उन्हें यों ही पड़ा रहने दो। कुछ हैं जो ज़िन्दा हैं। मुझे उम्मीद थी कि गुस्टिना उन्हें छपायेगी, लेकिन अब उसकी कोई उम्मीद नहीं है। इसलिए मैं अपनी कामरेड लाडया स्टॉल से दरखास्त करता हूँ कि वह उनमें से सबसे अच्छी चीज़ों को ले और उन्हें पाँच किताबों में बाँटे :

१) राजनीतिक लेख और बहसें।

२) घरेलू समस्याओं पर चुनी हुई रिपोर्टें।

३) सोवियत यूनियन-विषयक टिप्पणियाँ।

४) और ५) साहित्य और नाटक-संबंधी आलोचनाएं और लेख।

अधिकांश लेख ट्वोरचा (रचनात्मक कला) और रूड प्रावो (लाल अधिकार) में मिलेंगे, बाकी कमेन, प्रामेन, प्रोलेटकल्ट, दोबा, द सोशलिस्ट, आवाँगार्द, और दूसरे साहित्यिक और राजनीतिक पत्रों में मिलेंगे।

जूलियस ज़ेयर पर मेरा बड़ा लेख गिरगाल के पास है। गिरगाल एक प्रकाशक है। जिस हिम्मत से उसने जर्मनों के कब्जे के दिनों में मेरा 'बोज़ेना नेमकोवा' छापा, उसकी वजह से मैं उसे प्यार करता हूँ। साबिन-वाले लेख का कुछ हिस्सा और जान नेरूदा पर मेरे नोट उस मकान में कहीं छुपाकर रक्खे होंगे जिनमें जेलिनेक, विसुशिल और सुचानेक रहा करते थे। इनमें से ज्यादातर मर चुके हैं।

मैंने अपनी इस पीढ़ी के बारे में एक उपन्यास शुरू किया था। उसके दो अध्याय मेरे माँ-बाप के पास हैं, बाकी शायद नष्ट कर दिया गया। गेस्टापोवाली फाइल के कागज़ात के संग मैंने कई कहानियों की पांडु-लिपियाँ देखी थीं।

जान नेरूदा के लिए अपना प्रेम मैं साहित्य के किसी ऐसे इतिहास-कार के लिए छोड़ जाता हूँ जो अभी पैदा नहीं हुआ है। वह हमारा सब से बड़ा कवि था, उसकी आँखें भविष्य में हम लोगों से कहीं ज्यादा दूर तक देखती थीं। अब तक उसके बारे में ऐसी कोई आलोचना नहीं निकली है जिसमें उसको पूरी तरह समझा और गुना गया हो। शोषित मजदूर-श्रेणी के एक व्यक्ति के रूप में उसे नहीं चित्रित किया गया है। वह स्मिचोव के एक छोर पर पैदा हुआ था। स्मिचोव मजदूरों का एक इलाका है और 'समाधि के फूल' का मसाला उसने रिंगहॉफ़र मिल्स के आसपास इकट्ठा किया था। बिना इतनी पृष्ठभूमि के तुम 'समाधि के फूल' से लेकर 'यकुम मई १८९०' तक की उसकी कविताओं को ठीक से नहीं समझ सकते। अधिकांश आलोचक—यहाँ तक कि शिल्डा जैसा सुलझा हुआ आलोचक भी—यह समझते हैं कि नेरूदा पत्रकार की हैसियत से जो काम करता था उससे उसकी काव्य-सृष्टि में बाधा पहुँचती थी। यह बिलकुल गलत बात है। सही बात तो यह है कि चूँकि नेरूदा पत्रकार था, इसी लिए वह बैलड्स, सॉनेट्स, हिम्न फॉर फ्राइडे डिवोशन्स और सिम्पल मोटिफ्स जैसी जबर्दस्त चीजें लिख सका। पत्रकार का काम थकानेवाला

और मन को दूसरी बातों में उलझानेवाला होता है सही, लेकिन वह व्यक्ति को पाठक के संग सीधे संपर्क में ले आता है और अगर कोई नेरूदा की तरह सच्चा और ईमानदार पत्रकार हो तो उसे कविता करना भी सिखलाता है। अगर उसने पत्रकार का काम न किया होता तो संभव है उसने कविताओं की बहुत सी पोथियाँ लिख डाली होतीं लेकिन उनमें से कोई भी इस तरह सदियों तक जीवित न रहती, जैसी कि उसकी ये कविताएँ रहेंगी। अच्छा हो कि कोई 'साबिना' को अब भी पूरा कर डाले। वह इस योग्य है कि उस पर इतनी मेहनत की जाय।

उनके प्यार और व्यक्तित्व की सरल उच्चता के कारण मेरी इच्छा थी कि मैं अपने माँ-बाप की जिन्दगी के इन आखिरी दिनों में उन्हें आराम पहुँचा सकता। मेरे बहुत से काम इस उद्देश्य से भी अनुप्रेरित होते थे। अब तो केवल इस आशा का सहारा लेना चाहता हूँ कि मेरे चले जाने से उन लोगों का जीवन बिलकुल अँधेरा न हो जायगा। 'काम करनेवाला चला जाता है, बस काम सदा जीता है' और मैं सदा उनके साथ रहूँगा—उस रोशनी में और उस प्यार की गर्माहट में जो उनके चारों तरफ है।

मैं अपनी बहनों लीबा और वीरा से कहना चाहता हूँ कि वे अपने गानों और अपनी हँसी से पापा और अम्माँ की जिन्दगी के उस घाव को भरने की कोशिश करें जो अब हमारे घर में हो जायगा। वे दोनों जब हम लोगों से मिलने पेचेक बिल्डिंग में आयी थीं तो बहुत रोयीं थीं, लेकिन जीवन का आह्लाद अभी उनमें है और इसीलिए हम लोग एक दूसरे को इतना प्यार करते हैं। वे हर तरफ खुशी बिखेरती चलती हैं—कोई भी चीज कभी उनकी इस खुशी को चुरा न पाये।

मैं हर उस साथी से हाथ मिलाता हूँ जो इस आखिरी लड़ाई के दौर से गुज़र रहा है, और उन साथियों से भी जो हमारे बाद आयेंगे। गुस्टिना की तरफ से और अपनी तरफ से, हम दोनों जिन्होंने अपना कर्तव्य पूरा किया।

और मैं फिर कहना चाहता हूँ कि हम सुख के लिए लड़े और अब सुख के लिए ही मरने जा रहे हैं। कभी शोक हमारे नाम के संग न जुड़े।
मई १९, १९४३ } जूलियस फूचिक

मई २२, १९४३

दसख़त हो गये, मुहर लग गयी। जाँच करनेवाले जज ने कल मेरा मामला खत्म कर दिया। मेरे मुकदमे की रफ्तार, मैंने जैसा कि सोचा था उससे भी कहीं तेज है। लगता है कि उन्हें किसी बात की बहुत जल्दी है। मेरे ही संग लिडा प्लाशा और मिरेक भी अभियुक्त हैं। गद्दारी से मिरेक को कुछ फायदा न हुआ।

जाँच करनेवाले जज की ठंडी, भावनाशून्य आँखों में हर चीज अपनी ठीक जगह पर थी, उसका एक एक शब्द ठीक था—सारी चीज इतनी ठंडी और भावनाशून्य कि हम लोग काँप गये। लेकिन गेस्टापो के हेडक्वार्टर की तो सभी चीजों में जिन्दगी उबाल खा रही थी; वह डरावनी थीं ज़रूर लेकिन जिन्दा तो थीं, जिन्दगी का एक हिस्सा तो थीं। वहाँ पर जोश और उबाल था, एक तरफ सैनिकों का और दूसरी तरफ शिकारियों या दरिन्दों या मामूली डाकुओं का। उस तरफ के कई लोगों में भी एक खास तरह की निष्ठा है। लेकिन इस जाँच करनेवाले के सामने तो सिर्फ सरकारी कानून था। उसके कोट के कालर पर लगे हुए उस टेढ़े से लोहे के 'क्रास' का संकेत किसी ऐसे विश्वास की ओर था जो उसके दिल में नहीं था। वह एक ढाल थी जिसके पीछे एक छोटा-सा दयनीय अफ़सर छिपा हुआ था, जो सिर्फ इतना चाहता था कि इस दौर में किसी तरह जिंदा रहा आये। अभियुक्तों के प्रति वह न अच्छा है न बुरा। वह न मुसकराता है न त्योरियाँ चढ़ाता है। वह सिर्फ एक सरकारी काम को पूरा करता है। उस की रगों में खून की जगह बहुत ही पतला शोरबा बहता है।

उन्होंने गवाही नकल की, कानून के लंबे लंबे उद्धरण दिये और दसखत कर दिये। शायद छः अभियोग लगाये गये हैं, राजद्रोह, राइख के विरुद्ध षड्यन्त्र, सशस्त्र विद्रोह की तैयारी और पता नहीं क्या-क्या। उनमें से एक भी काफी था, इतनों की तो जरूरत भी न थी।

मैं पिछले तेरह महीनों से अपनी और दूसरों की जिन्दगी के लिए लड़ रहा हूँ, अपनी चालों से और अपने जोश से। उनका पार्टी का प्लैटफार्म 'नार्डिक' चालों और चक्रव्यूहों की बात करता है लेकिन मेरा विचार है उस मामले में तो मैंने उन्हें मात दे दी। मेरी हार की अकेली वजह यह है कि धोखेधड़ी के साथ साथ उनके हाथ में कुल्हाड़ा भी है।

इस तरह वह द्वन्द्व-युद्ध खत्म हुआ। अब प्रतीक्षा शुरू होती है। दो या तीन हफ्ते जब तक कि चार्ज-शीट नहीं तैयार होती, फिर राइख की यात्रा, फिर मुकदमा शुरू होने का इंतजार, सजा और सब से आखीर में सौ दिन तक फाँसी का इन्तजार। मैं सोचता हूँ कि यही मेरा भविष्य है—चार या पाँच महीने का भविष्य। इतने वक्त में तो बहुत सी बातें हो सकती हैं। सारा नक्शा ही बदल सकता है। शायद। मगर मैं यहाँ पर बैठे बैठे आखिर कैसे अन्दाज लगा सकता हूँ: मेरे पास आखिर क्या साधन है। यह भी संभव है कि बाहर घटनाओं की तेज गति हमारे अंत को भी पास ला दे। इसलिए वह भी शायद बहुत मदद न कर सके।

इस लड़ाई और उम्मीद के बीच जो यह दौड़ है इसमें किसकी जीत होगी? दो तरह की मौतों की [illegible] में? कौन पहले आयगी—फाशिज्म की मौत या मेरी मौत? यह क्या सिर्फ मेरा, निजी सवाल है? नहीं; हजारों कैदी, लाखों सैनिक यही सवाल पूछ रहे हैं। यही सवाल योरप के और बाकी दुनिया के करोड़ों आदमी पूछ रहे हैं। कुछ में ज्यादा उम्मीद होती है, कुछ में कम। लेकिन वह सचमुच एक धोखा है। वे भयानक बातें जिनसे पूँजीवाद के पतन ने दुनिया को लथपथ कर दिया है, उनसे सब को बड़े से बड़ा खतरा है। लाखों आदमी मर जायेंगे—और

कैसे अच्छे अच्छे आदमी—इसके पहले कि वे लोग जो बच जायेंगे, कहें : मैं जिन्दा हूँ, फाशिज्म मर गया।

अभी यह महीनों की बात है, जल्दी ही कुछ दिनों की बात रह जायगी। मगर वे सब से निर्मम दिन होंगे। अक्सर मेरी कल्पना में यह बात आती है कि उस अंतिम सैनिक की दशा कितनी करुण होगी जिसे लड़ाई के अन्तिम पल में अन्तिम गोली सीने में लगेगी। लेकिन कोई न कोई तो वह अन्तिम सैनिक होगा ही। अगर मुझे मालूम हो कि क्रान्ति की इस लड़ाई में मैं वह आखिरी आदमी हो सकता हूँ जो खेत रहेगा, तो मैं अभी इसी वक्त जाने को तैयार हूँ।

पांक्राट्स में अब मेरे पास इतना थोड़ा वक्त बच गया है कि मैं अपनी टिप्पणियों को अपने मनोनुकूल रूप नहीं दे सकता। मुझे और संक्षेप में अपनी बात कहनी पड़ेगी। इतिहास के युग पर कम ध्यान देना पड़ेगा और व्यक्तियों पर ज्यादा। उन्हीं का महत्व सब से अधिक है।

मैंने जेलिनेक दंपती के बारे में कहना शुरू किया था। वे सरल सामान्य लोग थे जिन्हें जीवन के साधारण प्रवाह में देखकर तुम कभी यह न कह सकते कि इनमें वीरों के तत्व हैं। अपनी गिरफ्तारी के समय वे एक दूसरे के कंधे से कंधा मिलाये सटे खड़े थे, उनके हाथ सर के ऊपर उठे हुए थे—पति का चेहरा जर्द था और पत्नी की कनपटी के नीचे कुछ वैसी ही तमतमाहट थी जैसी कि तपेदिक के रोगियों के होती है। उसकी आँखों में कुछ भय उतर आया था जब उसने देखा कि किस तरह गेस्टापो ने पाँच मिनट में उसके उस आदर्श घर को तहस-नहस कर दिया। तब उसने धीरे से अपने पति की ओर सिर घुमाया और पूछा :

'अब, जो ?'

जो के पास कभी बात करने को कुछ खास न होता, उसे शब्दों के लिए अटकना पड़ता और बोलने से उसे उत्तेजना होती। अब उसने

अत्यन्त आयासहीन और किसी भी तरह की कारुणिकता से मुक्त स्वर में कहा :

'अब हम लोग मरने चलेंगे, मेरी।'

वह चीखी नहीं, काँपी भी नहीं। उसने बहुत नाजुक अन्दाज से अपना दाहिना हाथ नीचा किया और उसका हाथ पकड़ लिया, पिस्तौलों का मुँह उनकी तरफ था। इस हरकत से उन दोनों को एक एक तमाचा खाने को मिला। उसने अपना गाल पोंछा, आक्रमणकारियों को ऊपर से नीचे तक देखा और हलके से व्यंग्य के स्वर में कहा—

'कैसे खूबसूरत नौजवान हैं', और फिर आवाज चढ़ाते हुए कहा, 'कैसे खूबसूरत लोग मगर कैसे जानवर।'

उसने उनको ठीक ही समझा था। कुछ घंटे बाद वे लोग उसे 'जाँच कमीसार' के दफ्तर से बेहोशी की हालत में ले गये। उन्होंने उसे मारते मारते लगभग बेहोश कर दिया था, लेकिन वे उससे एक भी बात निकाल न सके। न तो तब और न तो और कभी उसने एक भी बात बतायी।

मैं ठीक नहीं कह सकता कि उन दिनों उन दोनों पर क्या बीती जब कि मैं अपनी कोठरी में पेशी के अयोग्य हालत में पड़ा हुआ था, लेकिन मैं इतना जरूर जानता हूँ कि इस बीच वे कुछ भी नहीं बोले। वे मेरे आदेश की प्रतीक्षा कर रहे थे। कितनी बार जेलिनेक की कलाइयाँ टखनोंसे लगाकर कस दी जातीं और फिर उसे बेतहाशा पीटा जाता। लेकिन वह तब तक जबान न खोलता जब तक कि मैं वहाँ पहुँच न जाता और अपनी आँख के इशारे से उसे बतला न देता कि क्या उसे कबूल कर लेना चाहिए जिसमें तहकीकात आगे तो बढ़े।

गिरफ्तारी के पहले से मैं उसे जितना कुछ जानता था उससे मेरे मन में यही धारणा जम गयी थी कि वह बड़ी कोमल संवेदनशील स्वभाव की स्त्री है मगर यह भी है कि गेस्टापो की यातनाओं के इतने लम्बे दौरान

में मैंने कभी उसकी आँख में एक आँसू नहीं देखा। उसे अपने घर पर नाज़ था, लेकिन जब बाहर के साथी उसे यह सन्देसा भेज कर तसकीन पहुँचाना चाहते कि उन्हें मालूम है कि उसका फर्नीचर किसने चुराया है और उस आदमी पर वह अच्छी तरह निगाह रक्खे हैं, तो वह जवाब देती :

भाड़ में जाय फर्नीचर। उसकी फिक्र में वक्त मत बरबाद करो। उससे कहीं ज्यादा जरूरी काम करने को पड़े हैं, और अब तो हमारी कमी पूरी करने के लिए तुम्हें और भी दुगना काम करना है। पहले हमें अपने देश का कूड़ा-करकट साफ करना है और अगर उस सब के बाद मैं बची रही तो मैं आसानी से खुद अपना घर ठीक कर लूँगी।

एक दिन वे जेलिनेक दम्पती को ले गये, पति को एक जगह, पत्नी को दूसरी जगह। उन पर क्या बीती, यह पता लगाने की मैंने बहुत कोशिश की लेकिन बेकार। गेस्टापो के हाथ में पड़ने पर लोग अचानक न जाने कहाँ गायब हो जाते हैं—एक हजार कब्रिस्तानों में बिखर जाते हैं। एक दिन इन भयानक बीजों से कैसी फसल तैयार होगी!

उसका अन्तिम संदेश था :

'चीफ़ † बाहर उन लोगों को कहलवा दो कि मेरे लिए अफसोस न करें, और न मुझ पर जो कुछ गुज़री उससे डरें। मैंने एक मजदूर की हैसियत से अपना कर्तव्य पूरा किया और उसी तरह मरूँगी भी।'

वह एक 'घरेलू' औरत थी। उसने बहुत शिक्षा भी नहीं पायी थी और न वह उस वीरतापूर्ण सन्देश को ही जानती थी जो सदियों पहले दिया गया था :

यात्री, लेसिडिमोनियनों से कह देना कि हम मरे पड़े हैं—जैसा कि न्याय का आदेश था।

---

† सब लोग जिसका आदेश मान कर चलते हों।

विसूशिल दंपती

उसी इमारत में, जेलिनेक के ठीक बगल में वे रहते थे। उनका नाम भी जोजेफ़ और मेरी था। एक छोटे से अफसर का परिवार, अपने पड़ोसियों से जरा ज्यादा पुराना। वह सत्रह बरस का था, नूजुल का एक लंबा-तड़ंगा नौजवान, जब उन्होंने उसे फौज में भरती किया और पहले महायुद्ध में लड़ने भेजा। कुछ हफ्तों में वह लौट आया, उसका घुटना टूट गया था, जो फिर कभी ठीक नहीं हुआ। सबसे पहले उनकी मुलाकात ब्रनो के एक अस्पताल में हुई जहाँ पर वह नर्स थी। वह उससे आठ साल बड़ी थी, एक दुखी शादी से उसने अपना पिंड छुड़ाया था—और शायद इस लंबे रेलवे क्लर्क और उस महिला ने ऐसा कुछ कर डाला जो सामान्यतः वर्जित है।

वह मेरे बाद पकड़ा गया था और पहली बार जब मैंने उसे यहाँ देखा तो मैं दहल गया था। अगर उसने कहीं जबान खोली तो कितना क्या नष्ट न हो जायगा लेकिन नहीं, उसने जबान नहीं खोली। उसे यहाँ लाया गया था कुछ राजनीतिक पर्चों की खातिर जो कि उसने एक साथी को पढ़ने के लिए दिये थे—लेकिन पर्चों से आगे वह कभी नहीं बढ़ा।

कुछ दिन पहले पोकोनीं और पिक्सोवा की एक भूल से यह बात बाहर निकल गयी थी कि हाँज़ा चेनीं श्रीमती विसूशिलोवा की बहन के घर में रहता है। इसलिए मेरी गिरफ्तारी के दो दिन बाद विसूशिल का जो 'इम्तहान' लिया गया, उसमें उन्होंने उससे मारपीट के जरिये हमारी केन्द्रीय समिति के अन्तिम नेता के बारे में, जो कि अब तक नहीं पकड़ा गया था, कुछ बात निकलवानी चाही। उसके तीसरे दिन वह नम्बर ४०० में आया और बहुत धीरे से, सँभालकर बैठ गया—खुले घावों के बल बैठने में बड़ी भयानक पीड़ा होती है! मैंने उसे कुछ चिन्ता और कुछ प्रोत्साहन की दृष्टि से देखा। उसने अपने अक्खड़ नूजुल ढंग से जवाब दिया :

'जब मैं कुछ भी बताने से इंकार कर रहा हूँ तो वे मुझसे कुछ भी नहीं पा सकेंगे, फिर चाहे मेरे चूतड़ों को वे छलनी ही क्यों न कर दें।'

मैं उस जोड़े को अच्छी तरह जानता था—दोनों एक दूसरे को कितना ज्यादा चाहते थे और एक-दो दिन की जुदाई में भी कितना सख्त अकेलापन महसूस करते थे। अब महीनों बीत जाते हैं। मिचिल के ऊपर उस खूबसूरत मकान में उसकी बीवी अब कितनी उदास होगी, अकेली, उस उम्र में जब अकेलापन मौत से भी तिगुना भयानक होता है। उस अपने छोटे से स्वर्ग में जिसमें मजाक में वे एक दूसरे को ममीकिन्स और डैडीकिन्स कहा करते थे, अपने पति को वापस लाने के लिए उसने न जाने कितनी छोटी-मोटी तरकीबें सोच डाली होंगी। लेकिन जिन्दगी को चलाये चलने का उसे सिर्फ एक जरिया मिला—छुपे-छुपे इंकलाब का काम किये जाना, अब दो आदमियों का काम करना।

इस तरह १९४३ के नये साल के दिन के ठीक पहलेवाली शाम को वह खाने की मेज पर अकेली बैठी थी और जहाँ पर वह बैठता था वहाँ उसकी तसवीर रखी हुई थी। जब बारह बजा तो उसने उसके गिलास से जो उसकी खाली जगह पर रक्खा था अपना गिलास टन् से छुलाया और उसके स्वास्थ्य और जल्दी लौट आने की—खास कर इस बात की कि वह देश आजाद होने तक जिन्दा रहे—कामना करती हुई पी गयी।

एक महीने बाद वह भी पकड़ी गयी। इस बात से नम्बर ४०० के हम कई लोग काँप गये क्योंकि वह बाहर के उन लोगों में से थी जिनके जरिये बाहरी दुनिया के संग हमारा संपर्क अब भी बना हुआ था।

उसने एक भी बात मुँह से नहीं निकाली।

उन्होंने उसे पीटा नहीं; वह इतनी बीमार थी कि मर ही जाती। उन्होंने उसे और बुरी यातनाएँ दीं—मानसिक। उसकी गिरफ्तारी के कुछ

दिन पहले वे उसके पति को काम करने के लिए पोलैंड ले गये। अब वे उससे कहते :

'देखो, तन्दुरुस्त आदमी तक के लिए वह जिंदगी कितनी सख्त है, फिर तुम्हारे पति की तो टाँग खराब है, वह उसे कभी सह नहीं सकेगा। वह वहीं गिरकर ढेर हो जायगा और तुम उसे अब फिर कभी नहीं देख सकोगी। फिर तुम्हें दूसरा पति कहाँ मिलेगा—इस उम्र में? इसलिए समझ से काम लो और जो कुछ भी जानती हो बतला दो, और हम लोग झट से तुम्हारे पति को तुम्हारे पास वापस बुला देंगे।'

वह वहीं मर जायगा, मेरा जो, बेचारा जो! कौन जाने कैसी मौत? उन्होंने मेरी बहन को मार डाला, मेरे पति को भी मार डालेंगे और मैं अकेली रह जाऊँगी, मौत के दिन तक बिल्कुल अकेली। मुझे इस उम्र में और कौन मिलेगा? लेकिन मैं उसे बचा सकती हूँ। वे उसे वापस ला देंगे—एक कीमत पर। नहीं, मैं वह कीमत नहीं चुकाऊँगी, और इस तरह अगर वह मुझे मिला भी तो वह वह न होगा।

उसने एक शब्द भी मुँह से नहीं निकाला। वह भी गेस्टापो के माल की गुमनाम रफ्तनी में कहीं गायब हो गयी। कुछ ही दिन बाद खबर आयी कि उसका जो पोलैंड में मर गया।

लिडा

पहली बार जब मैं बाक्सा के घर गया था तो वह शाम का वक्त था। घर पर सिर्फ जोज़ी था और सजीव, चमकती हुई आँखों की एक छोटी-सी लड़की जिसे वे लोग लिडा कहकर बुलाते थे। अभी वह बच्ची ही थी। बड़े कुतूहल से वह मेरी मूँछों को देखती रहती और बड़ी खुश रहती, शायद यह सोचकर कि थोड़ी देर के मनबहलाव के लिए यह एक अच्छी नयी और दिलचस्प चीज घर में आ गयी।

हम दोनों की दोस्ती बड़ी जल्दी हो गयी। बाद में पता चला कि जोज़ी

की सौतेली बहिन, इस बच्ची की उम्र उन्नीस साल है। उसका घर का नाम प्लाशा है (जिसका अर्थ होता है शरमीली) लेकिन यह गुण उसमें नहीं है। उसे अभिनय का शौक था।

मैं उसका गहरा दोस्त बन गया जिससे वह अपनी भेद की बातें भी कहने लगी। इस बात से मैंने यह अनुभव किया कि और कुछ हो न हो मैं प्रौढ़ जरूर हो गया हूँ। वह अपने तरुण प्रेम की सारी दुखभरी बातें और सारे सपने मुझे बतलाती और बहन या बहनोई से कोई तकरार हो जाने पर उसे सुलझाने के लिए मेरे ही पास दौड़ी आती। सभी युवतियों की तरह उसके दिमाग का पारा भी बड़ी जल्दी चढ़ जाता था और वह तो और भी बिगड़ी हुई सी थी, वैसी ही जैसे माँ-बाप के बुढ़ापे के बच्चे अकसर हो जाते हैं।

वहाँ छः महीने रहने के बाद जब मै बाहर गया तो वह पहली बार मेरे संग बाहर गयी।

कुछ-कुछ लँगड़ाता-सा एक अधेड़ आदमी अगर अपनी लड़की के साथ घूमने जाय तो कम लोग उस पर ध्यान देंगे बनिस्बत इसके कि अगर वह अकेले जाय। जो हमारे पास से गुजरते वे मुझे न देखकर उसी को देखते। इसीलिए वह मेरे संग घूमने जाती, इसीलिए वह मेरे संग मेरी पहली गैरकानूनी मीटिंग में गयी, इसीलिए वह मेरे पहले छिप कर रहने के कमरे में मेरे संग आकर रहने लगी। इस तरह—अभियोग-तालिका अब यही कहती है—इस तरह धीरे धीरे वह मेरी छिपी हुई संदेशवाहिका हो गयी।

वह इस काम को बहुत प्रसन्नता से करती है, बिना इस बात के पीछे सिर खपाये कि वह काम क्या है या उसका मतलब क्या है। उसके लिए यह एक नयी और आकर्षक चीज थी, एक ऐसी चीज जिसे सब लोग नहीं करते, जिसमें जोखिम है, जाँबाजी का कुछ मजा है। उसे बस इसी की जरूरत थी।

जब तक वह छोटे-मोटे काम करती रही, मैंने उसे ज्यादा कुछ बतलाना उचित नहीं समझा। पकड़े जाने पर वह जितना कम जानती उतना ही ज्यादा अपनी रक्षा कर सकती—क्योंकि तब उसे यह अनुभव भी न होता कि उसने कोई जुर्म किया है।

लिडा ने तेजी से विकास किया और इस हालत को पहुँच गयी कि जेलिनेक के यहाँ कोई छोटा-सा सन्देसा लेकर दौड़ जाने से ज्यादा बड़े बड़े और जिम्मेदारी के काम ले सके। अब वक्त था कि उसे बताया जाता कि यह सब क्या मामला है। चुनांचे मैं उसे शिक्षा देने लगा। मेरी शिक्षा एक बाकायदा स्कूल थी और लिडा बड़े सुख और बड़ी आतुरता से सीखती। देखने में तो अब भी वह वही खुश, अपने में मगन और गंभीर बातों से दूर, ऊपरी ऊपरी बातों में रस लेनेवाली लड़की जान पड़ती थी लेकिन अन्दर से वह बिलकुल बदल गयी थी। उसने विकास किया और वह गहराई से सोचने लगी।

इस काम के सिलसिले में मिरेक से उसका परिचय हुआ। वह बहुत काम कर चुका था और ऐसे ढंग से उसको ये बातें बतलाता कि वे उसके दिल में उतर जातीं। मिरेक का उस पर काफी प्रभाव पड़ा। उसके चरित्र के मूल गुणों को परखने में लिडा से शायद भूल हुई, लेकिन वह भूल तो मुझ से भी हुई। खास बात यह थी कि अपने काम और अपनी दीख पड़नेवाली निष्ठा के कारण वह अन्य युवकों की अपेक्षा लिडा के अधिक पास पहुँच सका।

लिडा में तेजी से प्रेम जगा और उसकी जड़ें भी गहरी चली गयीं।

१९४२ के प्रारंभ में उसने हिचकिचाते हुए पार्टी की सदस्यता के बारे में सवाल पूछने शुरू किये। इसके पहले कभी मैंने उसे इतना हिचकिचाते नहीं देखा था; इसके पहले किसी भी चीज को उसने इतनी गम्भीरता से नहीं लिया था। मैंने उसकी बात को अच्छी तरह तौलकर देखा और शिक्षा जारी रक्खी। मैं अब भी उसकी परीक्षा लेना चाहता था।

फरवरी १९४२ में सीधे केन्द्रीय समिति ने उसे पार्टी में ले लिया। रात का समय था, बहुत सख्त बर्फ गिर रही थी और हम लोग पैदल घर चले आ रहे थे ; वह खामोश थी, गो आम तौर पर वह बहुत बात करती थी। घर के पास एक मैदान को पार करते हुए वह यकायक रुकी और एक ऐसी खामोशी में जिसमें जमीन पर गिरकर बर्फ के टुकड़ों का जमना भी सुनायी देता था, उसने बहुत ही धीमे से कहा—

'मैं जानती हूँ कि यह मेरी जिन्दगी का सबसे महत्वपूर्ण दिन है, क्योंकि अब मैं अपनी नहीं रही। मैं तुमको वचन देती हूँ कि चाहे जो हो मैं कभी तुम्हें निराश नहीं करूँगी।'

उसके बाद बहुत कुछ हुआ, लेकिन उसने कभी हमें निराश नहीं किया।

चोटी के नेताओं से हमारे गुप्ततम संबंध बनाये रखने का काम उसका था। सब से नाजुक और सब से जोखिम के काम उसके थे, जैसे ऐसी टोलियों के साथ संपर्क स्थापित करना जो कटकर अलग जा पड़ी हैं या उन काम करनेवालों को सावधान करना जो सब से ज्यादा खतरे में हैं। जब हाई कमान का मामला कुछ गड़बड़ा जाता या हमारी गुप्त छिपने की जगह खतरे में पड़ जाती तो लिडा बहुत सफाई से सब कुछ ठीक कर देती। वह बड़े बड़े काम भी वैसे ही करती जैसे कि छोटे छोटे काम, यों ही बहुत चलते-फिरते हलके-फुलके मनमौजी ढंग से, मगर वह केवल ऊपरी ढंग था, असल में उसकी तह में जिम्मेदारी का बड़ा दृढ़ संकल्प था।

वह हम लोगों के एक महीने बाद पकड़ी गयी। सब कुछ कबूलते हुए मिरेक ने उसका भी नाम लिया और तब उन लोगों को पता चला कि उसने अपनी बहन और बहनोई को फरार होने और छिपने में मदद पहुँचायी थी। उसने अपने सिर को झटका दिया और एक चंचल लड़की का

अपना स्वाभाविक पार्ट अदा किया, जैसे उसकी समझ ही में यह बात न आती हो कि उसने कोई गैरकानूनी काम किया है, जिसका परिणाम उसके लिए बुरा हो सकता है।

उसे मालूम बहुत-सी बातें थीं लेकिन उसने बतायी एक नहीं और सबसे बड़ी बात यह कि उसने काम जारी रक्खा। अब उसकी परिस्थितियाँ और काम करने के तरीके बदल गये थे, उसके काम भी अब दूसरे दूसरे थे, लेकिन हाथ पर हाथ धरकर वह बैठी नहीं। पार्टी के प्रति उसका कर्तव्य नहीं बदला था। जो काम उसे दिया जाता उसे वह जल्दी, बिलकुल ठीक ठीक और बड़ी लगन से करती। अगर बाहर किसी को बचाने के लिए यह जरूरी हो जाता कि किसी तरह एक उलझी हुई परिस्थिति को सुलझाया जाय, तो लिडा बहुत मालूम चेहरे से इस काम को अपने हाथ में लेती। पांकाट्स में औरतों के हिस्से में वह ट्रस्टी हो गयी और बाहर बीसियों आदमी जिन्हें कोई नहीं जानता था उन सन्देसों की बदौलत पकड़े जाने से बच गये जिन्हें लिडा ने भिजवाया था। इसके करीब एक साल बाद उसका ऐसा ही एक सन्देसा पकड़ा गया और उसके इस 'पेशे' का अन्त हुआ।

अब वह हम लोगों के साथ मुकदमे के लिए राइख जा रही है। हम लोगों की टोली में वही एक है जिसके बारे में थोड़ी बहुत यह आशा की जा सकती है कि वह देश आज़ाद होने तक जियेगी। उसकी उम्र अभी कम है। हम लोग न भी रहें तो भी तुम लोग उसे खोना मत। उसे अभी बहुत कुछ सीखना है। उसे सिखाओ-पढ़ाओ और उसकी बाढ़ मत रुकने दो, लेकिन उसे अपने ऊपर घमण्ड न करने दो और न इस बात का मौका दो कि जितना कुछ उसने किया है उसी से संतुष्ट हो कर वह बैठ जाय। वह कठिन से कठिन संघर्ष की कसौटी पर खरी उतरी है। वह आग में से गुजरी है और हमने देखा है कि किस जबर्दस्त धात की वह बनी है।

वह नाटक के पात्रों में से नहीं है, लेकिन उसका व्यक्तित्व आकर्षक है—बाकी लोगों से ज्यादा शानदार।

दस साल पहले विनोहाडी के फ्लोरा कैफ़े में जब तुम मेज पर अपना पैसा खटखट करना चाहते या पुकारनेवाले होते 'बिल, हेडवेटर' तब एक लम्बा-सा दुबला आदमी, काला टेलकोट पहने अचानक तुम्हारे सामने आ जाता। कुर्सियों के बीच वह पानी के मकड़े की तरह तेजी से जैसे तैरता हुआ, निःशब्द आ जाता और बिल तुम्हारे सामने रख देता। उसके शरीर का मुड़ना-घूमना, हिलना-डुलना दरिन्दे जैसा था, तेज और खामोश और उसकी आँखें ऐसी कि एक ही बार में वह सब कुछ जैसे भाँप लेता। तुम्हें अपना आर्डर कहने की जरूरत भी न होती। वह बैरे से कह देता : तीसरी मेज के लिए सफेद कॉफी बिना ह्विप्ड क्रीम के। या 'बायीं खिड़कीवाली मेज के लिए पेस्ट्री और पीपुल्स पेपर।' ग्राहकों की दृष्टि में वह लाजवाब हेडवेटर था और दूसरे काम करनेवालों के लिए एक अच्छा साथी।

खैर तब मैं उसको नहीं जानता था। मैंने तो उसे जाना बहुत बाद में, जेलिनेक के यहाँ, जब वह पेंसिल की जगह हाथ में एक पिस्तौल लिये हुए था जिसका निशाना मुझ पर था।

'मुझे सबसे ज्यादा दिलचस्पी उसमें है।'

सच पूछो तो उसके बाद से हम दोनों की एक दूसरे में दिलचस्पी हो गयी। उसने अक्ल पायी थी और दूसरों से वह इस कारण से और भी बढ़ा-चढ़ा था कि लोगों का दिमाग वह समझता था। इसीलिए अगर वह क्रिमिनल पुलिस में गया होता तो बहुत कामयाब रहता। छोटे-मोटे मुजरिम और हत्यारे, अपने वर्ग से कटकर अलग जा पड़े आवारे, इन लोगों को उसके सामने अपना दिल उघाड़कर रखने में कोई हिचक न होती

क्योंकि उन्हें अपनी जान बचाने के अलावा दूसरी कोई फ़िक्र नहीं होती। लेकिन पोलिटिकल पुलिस के हाथ में ये अपनी जान बचानेवाले तो कम ही पड़ते हैं। यहाँ पर पुलिस की अक्ल का मुक़ाबला सिर्फ एक आदमी की अक्ल से नहीं होता जिसे कि उन्होंने पकड़ रक्खा है, बल्कि उससे कहीं बड़ी एक ताक़त से। यहाँ उन्हें सामना करना पड़ता है दृढ़ विश्वासों का, एक समूची टोली की अक्ल का, उनका शिकार भी जिस टोली का ही एक अङ्ग है। धोखेधड़ी और मारपीट से विश्वास नहीं तोड़े जा सकते। 'मेरे कमीसार' में तुम्हें कोई भी आंतरिक दृढ़ विश्वास नहीं मिलेगा। अगर उनमें से कुछ में वह है भी तो उसके संग में है मूर्खता—चालाकी नहीं, ज्ञान नहीं। अगर कुल मिलाकर कामयाबी का सेहरा उनके सर रहा तो इसका कारण यह है कि इंक़लाबी लड़ाई बहुत लंबी खिंच गयी और बहुत छोटे से क्षेत्र में लड़ी गयी, ऐसी परिस्थितियों में जो पहले के किसी अंडरग्राउंड संघर्ष से कहीं अधिक मुश्किल थीं। रूसी बोलशेविक कहा करते थे कि एक अच्छा अंडरग्राउंड कार्यकर्ता दो साल तक चल सकता है लेकिन अगर मास्को में रहना उनके लिए असंभव हो जाता तो वे भागकर पेत्रोग्राद जा सकते थे, पेत्रोग्राद से ओडेसा जा सकते थे, उन करोड़ों नगरवासियों के बीच में जहाँ उन्हें कोई नहीं जानता था, उनके बीच वे अपने को इस तरह खो दे सकते थे कि कोई उनका पता न पा सकता। लेकिन हमारे पास तो सिर्फ प्राग है, प्राग प्राग जहाँ पर शत्रु के ज्यादातर गुप्तचर केन्द्रित हैं। इस सबके बावजूद हम बरसों से लड़ रहे हैं और यहाँ पर ऐसे-ऐसे साथी हैं जो पाँच साल से छिपे हुए काम कर रहे हैं और गेस्टापो उनका पता नहीं पा पाता। यह बीच इसी लिए संभव है कि हमने बहुत-सी बातें सीख ली हैं। हाँ, लेकिन इसका एक कारण यह भी है कि दुश्मन ने ताक़तवर और क्रूर होने के बावजूद तहस-नहस करने से ज्यादा कुछ नहीं सीखा है।

सेक्शन ११-अ में तीन आदमी हैं जो कम्युनिज्म के सबसे कट्टर संहारकों के रूप में प्रसिद्ध हैं और जिन्हें घर के दुश्मन के खिलाफ़ युद्ध में

वीरता का परिचय देने के लिए काले-सफेद-लाल फीते भी मिल चुके हैं। वे हैं फ्रीड्रिक, जैण्डर और 'मेरा कमीसार' जोजेफ़ बोएम। हिटलर के नात्सीवाद के बारे में कहने को उनके पास कुछ खास नहीं है, क्योंकि उसके बारे में उनकी कोई जानकारी ही नहीं है। वे किसी राजनीतिक सिद्धान्त के लिए इस लड़ाई में नहीं हैं, वे इसमें हैं अपनी खातिर। सब, अपने-अपने ढंग से।

जैंडर को—जो एक निहायत छोटा-सा बेहद कड़ुआ आदमी है—बाकी सब लोगों से ज्यादा जानकारी पुलिस के तरीक़ों की है, लेकिन उससे भी ज्यादा जानकारी उसे बनिये की तरह सौदा पटाने की है। कुछ महीनों के लिए उसका तबादला प्राग से बर्लिन का हुआ था, लेकिन जल्दी ही वह फिर तिकड़म के जोर से अपनी पुरानी जगह पर पहुँच गया। राइख की राजधानी में नौकरी उसके लिए तनज़ुली थी—और नक़द घाटा। अँधेरे अफ्रीका या प्राग में जर्मन हाकिम का जो रोब और रुतबा होगा वह बर्लिन में कहाँ, दूसरे ऐसी दूरदराजी जगहों में नकद प्राप्ति का डौल भी तो कहीं ज्यादा होता है। जैंडर बहुत मेहनती आदमी है; यह दिखलाने के लिए कि वह कितना ज्यादा काम करता है वह खाना खाते समय तहकीकात करता है, सवाल पूछता है। उसे अपने सरकारी काम का प्रमाण जुटाने की जरूरत पड़ती है जिसमें लोगों का ध्यान इस बात पर न जाय कि उसकी ऐसी दिलचस्पियाँ और भी बड़ी हैं जिनका कोई संबंध उसके सरकारी काम से नहीं है। रहम के काबिल है वह जो उसके हाथ में पड़ा, लेकिन उससे भी दुगनी रहम का हकदार है वह जिसके घर पर बैंक की पासबुक है या हुंडियाँ हैं। उस आदमी का अंत जल्दी आवेगा क्योंकि जैंडर बैंक बुकों और हुंडियों पर जान देता है। वह सबसे काबिल जर्मन अफसर समझा जाता है—उस खास दिशा में। इस मामले में वह अपने चेक सहायक —स्मोला—से थोड़ा भिन्न है क्योंकि स्मोला शरीफ डाकू है और

अगर तुम्हारा पैसा उसके हाथ लग जायगा तो तुम्हारी जान वह न लेगा।

फ्रीड्रिक लम्बा-सा, दुबला-पतला, कुछ पीला-सा आदमी है जिसकी आँखों और मुसकराहट में दुष्टता है। वह गेस्टापो के एक खुफिया की हैसियत से सन् ३७ में चेकोस्लोवाकिया आया था, उन जर्मन कम्युनिस्टों को पकड़ने और जर्मनी भेजने के लिए जिन्होंने हमारे देश में आकर शरण ली थी। उसकी लाशें बहुत भाती हैं। कोई निर्दोष भी है यह वह नहीं मानता। जो उसके दफ्तर की देहलीज लाँघता है वह मुजरिम है। उसे औरतों से यह कहना अच्छा लगता है कि उनके पति कंसेन्ट्रेशन कैंप में मर गये या मार डाले गये। उसे अपनी डेस्क की दराज में से मृत देहों की राख के सात पात्र निकालकर उस आदमी को दिखलाने में मजा आता है जिसका इम्तहान वह ले रहा है: मैंने खुद अपने हाथों से मार मार कर उन सातों को जहन्नुम रसीद किया था। अब आठवें तुम होगे।

अब उसकी डेस्क में आठ राखदान हैं क्योंकि जान जिज्का को पीटते पीटते उसने उसका दम निकाल लिया।

अपने अलग अलग मामलों के कागजात की फाइलें उलटना और हर बार यह कहना उसे अच्छा लगता है:

'फ़ैसल। मामला खारिज।'

पर औरतों को यातनाएँ देने में उसे सबसे ज्यादा रस आता है।

विलासपूर्ण जीवन बसर करने की जो चाह उसके हृदय में है, वह पुलिस की कार्रवाइयों में उसे बहुत मदद पहुँचाती है। अगर आपके पास एक खूबसूरत सजा-सजाया घर है या कोई अच्छा, मुनाफे का व्यापार है तो आपकी मौत बहुत जल्द आ जायेगी, और कुछ नहीं।

उसका चेक सहकारी नर्जर लंबाई में उससे दो मुट्ठा छोटा है। दोनों में बस इतना ही अन्तर है।

मेरे कमीसार, बोएम, को रुपये या लाशों से कुछ खास प्रेम नहीं है, गो उसकी सूची में भी लाशें पहले दो लोगों से शायद ही कम हों। वह एक सट्टेबाज़, किस्मत आज़मानेवाला आदमी है जो बड़ा आदमी बनना चाहता है। वह नेपोलियन रूम में काम करता था जहाँ हिटलर बहुत ही गुप्त बातचीत के लिए बेराँ से एकदम अकेले में मिलता था। जो कुछ बेराँ खुद हिटलर को न बतला पाता, उसे बोएम जोड़ देता। लेकिन वह इस चीज़ के मुकाबले में कुछ न था, यह आदमियों का शिकार करना, उनकी जिन्दगी और मौत का मालिक बन बैठना, पूरे पूरे खानदानों की मौत का हुक्म दे देना—इसकी बात ही और है!

यह न था कि वह सदा पूरे घरानों की हत्या करवाये ही तो कहीं जाकर उसे सन्तोष मिले; लेकिन उसे सदा यह कुरेदन होती थी कि कोई नयी लाजवाब बात पैदा करे, और यह चीज़ पूरे कुनबे की हत्या करने से भी ज्यादा बुरी हो सकती थी।

उसने खुफ़िया पुलिस के गोयन्दों का सब से बड़ा जाल खड़ा किया। वह शिकारी था, उसके पास शिकारी कुत्तों का सबसे बड़ा गिरोह था, और वह शिकार करता था। अकसर वह शिकार के मज़े के लिए ही शिकार करता। सवाल-जवाब, पूछताछ, इस काम से उसे सख्त कोफ्त होती थी; उसकी खास चीज थी लोगों को पकड़ना और फिर उन्हें फैसले की प्रतीक्षा में अपने सामने खड़ा रखना। एक बार उसने प्राग के दो सौ बस कंडक्टरों, मोटर ड्राइवरों और बस ड्राइवरों को पकड़ा और उन्हें सड़क के बीचोबीच भेड़ों की तरह हाँकते हुए ले चला, सड़क का चलना बन्द हो गया और आने जानेवालों का तमाम सिलसिला ही सख्त गड़बड़ में पड़ गया। लेकिन उसकी खुशी का कोई ठिकाना था! फिर उसने उनमें से डेढ़ सौ को छोड़ दिया, अपने मन ही मन में बहुत खुश कि डेढ़ सौ परिवार उसकी नेक-दिली के गुन गायेंगे।

आमतौर पर उसके मामले बड़े अनावश्यक से, छोटे-मोटे लेकिन पेचीदा और उलझे हुए होते थे। मेरी बात अलगं थी; मुझे तो उसने अकस्मात् पकड़ लिया था।

'तुम मेरे सबसे बड़े केस हो' वह अकसर मुझ से कहता और दिल से कहता। उसे इस बात का घमंड था कि उसके मामलों में से एक ऐसा भी है जिसका शुमार सबसे बड़े केसों में होता है! संभव है इस बात ने मेरी जिन्दगी थोड़ी बढ़ा दी हो। हम लोग अपनी पूरी शक्ति से और लगातार एक दूसरे से झूठ बोलते, लेकिन उसमें एक अन्तर था। वह यह था कि मैं जब झूठ बोलता तो यह समझ कर कि झूठ बोल रहा हूँ और वह बिना जाने-समझे झूठ बोलता, अपनी समझ में वह सच बात ही कहता लेकिन होती वह झूठ। जब कभी किसी झूठ का भाँडा फूटता तो हम उसे आँख की ओट कर देते, और हमारे बीच यह बिनकहा समझौता भी चलता कि हम फिर उस बात का जिक्र न उठायें। मेरा खयाल है कि सचाई का पता लगाने की उसे कुछ खास चिन्ता न थी, उसे चिन्ता सिर्फ इस बात की थी कि उसके सबसे बड़े केस पर कोई दाग़ न आने पाये।

तहकीकात के वक्त वह सिर्फ डंडों और लोहे की छड़ों ही का इस्तेमाल न करता। उसकी नज़र में आदमी जैसा होता उसके अनुसार वह अपने अस्त्र चुन लेता और अकसर डरवाने से ज्यादा बहलाने-फुसलाने पर जोर देता। उस पहली रात को छोड़ कर उसने फिर शायद कभी मुझे यातना नहीं दी। लेकिन अगर उसकी जरूरत पड़ती तो वह मुझे किसी और के हवाले कर देता।

इसमें सन्देह नहीं कि वह और सबों से ज्यादा पेचीदा मगर दिलचस्प आदमी था। उसकी कल्पना-शक्ति बहुत अच्छी थी और उसका इस्तेमाल करना भी वह जानता था। हम लोग अकसर कल्पना के घोड़ों पर सवार

होकर ब्रानिक के एक काल्पनिक सम्मेलन में पहुँच जाते जहाँ हम लोग एक बियर गार्डेन में बैठते और लोगों की भीड़ को गुजरते हुए देखते।

उनके बारे में सोचते-सोचते वह कहता :

'हमने तुम्हें पकड़ लिया, लेकिन देखो इससे उनकी जिन्दगी में कुछ फक नहीं पड़ा। वे अब भी वैसे ही घूमते हैं जैसे पहले घूमते थे ; अब भी पहले ही की तरह मुसकराते या अपनी तकलीफों के बारे में परीशान होते हैं। दुनियाँ का सारा कारबार उसी तरह चल रहा है, गोया तुम कभी थे ही नहीं! उनमें जरूर तुम्हारे कुछ पुराने पाठक होंगे—तुम्हारा क्या खयाल है, क्या तुम्हारी गिरफ्तारी से किसी के माथे पर एक भी शिकन ज्यादा आयी होगी ?'

कभी कभी पूरे दिन के सवाल-जवाब के बाद वह मुझे मोटर में बिठाल कर नेरुदा स्ट्रीट होता हुआ किले तक ले जाता :

'मैं जानता हूँ कि तुम्हें प्राग से मुहब्बत है। वह देखो ! तुम क्या फिर कभी वहाँ लौट कर नहीं जाना चाहते ? कितना खूबसूरत है प्राग—और तुम्हारे न रहने पर भी वह ऐसा ही खूबसूरत रहेगा।'

बाइबिल के लोभ दिलानेवाले सर्प का पार्ट वह अच्छा अदा करता। गर्मी की गहरी होती हुई शाम में कुछ यह भाव था कि प्राग में पतझड़ का मौसम शुरू हो गया। शाम नीलगूँ थी और उसमें पकती हुई अंगूरी लता का हलका धुँधलापन था, और था नशा अंगूर का सा। मेरी इच्छा हुई कि मैं प्रलय के दिन तक उसे इसी तरह देखा करूँ .....लेकिन मैंने उसे टोका :

'.....और तुम जब न रहोगे तब तो प्राग और भी ज्यादा खूबसूरत हो जायगा।'

वह जरा सा हँसा। उस हँसी में कमीनापन नहीं, उदासी थी। उसने कहा :

'तुम सिड्डी हो।'

वह अकसर उस शाम की बात पर लौट लौट आता।

'जब हम लोग न रहेंगे.....तब क्या तुम्हें अब भी हमारी जीत में विश्वास नहीं होता ?'

वह मुझ से पूछता था क्योंकि उसे खुद पूरा इत्मीनान न था। और वह बड़े ध्यान से, एकाग्र होकर मेरी बात सुनता जब मैं उसे सोवियत संघ की शक्ति और अजेयता के बारे में बतलाता।

यह मेरे आखिरी 'इम्तहानों' में से एक था।

गेलिसों की कहानी

सामनेवाली कोठरी के दरवाज़े के पास पतलून की गेलिस लटक रही थी। आदमियों के काम आनेवाली मामूली गेलिस। वह चीज़ जो मुझे कभी नहीं पसन्द आयी। लेकिन अब जब भी हमारी कोठरी का दरवाज़ा खुलता है तब हम बड़े चाव से उसे तका करते हैं—क्योंकि उसमें हमें आशा की किरण दिखायी देती है। पकड़ पाने पर वे चाहे तुम्हें मारते मारते अधमरा ही क्यों न कर डालें, मार ही क्यों न डालें, लेकिन इतना जरूर करेंगे कि तुम्हारी नेकटाई, बेल्ट या गेलिस जरूर ले लेंगे जिसमें तुम अपने आपको फाँसी न लगा सको (गो मरदूदों को मालूम नहीं कि तौलिये से भी बड़े मज़े में फाँसी लगायी जा सकती है)। मौत के ये भयानक औज़ार फिर जेल के दफ्तर में रक्खे जाते हैं, उस वक्त तक जब तक कि गेस्टापो की कोई छोटी-मोटी अदालत यह फैसला नहीं कर देती कि तुम्हें कहीं और भेजना है, काम पर, कंसेन्ट्रेशन कैंप या फाँसी के लिए। तब वे तुम को अन्दर बुलाते हैं और पूरे सरकारी रीति-रस्म के साथ तुमको वे चीज़ें लौटा देते हैं—लेकिन कोठरी में तुम उन्हें अपने साथ नहीं ले जा सकते। कायदा है कि वे चीज़ें कोठरी के दरवाजे के पास या उसके सामने के

जँगले पर लटका दी जायं, फिर वे वहीं लटकती रहती हैं जब तक कि तुम्हारा ट्रान्सपोर्ट छूटने का वक्त नहीं आता, जो कि इस बात का साफ सबूत होता है कि कोठरी का कोई आदमी एक ऐसे सफर की तैयारी कर रहा है जो कि उसका चाहा हुआ नहीं है।

सामनेवाली वह गेलिसें उस दिन वहाँ पर दिखायी दीं जिस दिन मुझे यह पता चला था कि गुस्टिना पर क्या बीतने वाली है। सामनेवाला मेरा यह दोस्त भी गुस्टिना ही के संग, उसी ट्रान्सपोर्ट में 'काम पर' भेजा जा रहा है। यह टोली अभी गयी नहीं है, यकायक जाना स्थगित करना पड़ा क्योंकि, सुनते हैं, वह जगह जहाँ ये लोग काम करने जा रहे थे, बमों से उड़ा दी गयी (यह भी एक बड़ी सुंदर संभावना होती है)। अब पता नहीं वे लोग कब जायँगे—आज शाम, शायद कल या शायद एक या दो हफ्ते बाद। गेलिसें अब भी सामने लटक रही हैं और मैं जानता हूँ कि जब तक वे मुझे उस जगह पर दिखायी देती हैं तब तक गुस्टिना यहीं प्राग में है। इसीलिए मैं उन्हें बहुत चाव से और बहुत प्यार से देखा करता हूँ गोया वे गुस्टिना को मदद पहुँचानेवाली जानदार चीज़ें हों। उनकी बदौलत उसे एक दिन, दो दिन, तीन दिन की मोहलत मिलती है.....कौन जानता है उन तीन दिनों में क्या हो जाय ? मुमकिन है उन्हीं में से एक दिन वह आज़ाद हो जाय।

यहाँ पर इसी तरह हम लोगों की जिंदगी चलती है। पिछला साल, पिछला महीना, आज, कल—हमारी आँखें लगातार उस आनेवाले कल पर लगी रहती हैं जिस पर ही सारी उम्मीदों का दारोमदार है। तुम्हारी किस्मत का फैसला हो चुका है, तुम्हें परसों गोली मारी जानेवाली है—लेकिन, ओह, अभी तो कल बीच में पड़ा है, क्या कुछ नहीं हो सकता ! कल तक तो जिन्दा रहो, मुमकिन है सारा नक्शा ही बदल जाय। सभी कुछ इतना डाँवाडोल है, कौन जाने कल क्या हो जाये ? कल बीत जाते हैं, हजारों जिन्दगी से हाथ धोते हैं और उनके लिए फिर कल नहीं

होता। लेकिन जो जिन्दा हैं वह न मरनेवाली उम्मीदों के सहारे जिये ज हैं—पता नहीं कल क्या हो, कल को किसने देखा है।

यह दिमागी हालत एक-से-एक फ़िज़ूल अफ़वाहों को जन्म देती है। हर हफ्ते लड़ाई के खात्मे के बारे में कोई गुलाबी कहानी चलती रहती है जिसे सभी खूब खीसें निकालकर मुसकराते हुए दोहराते रहते हैं। हर हफ्ते पांक्राट्स लोगों के कानों में कोई नयी अच्छी सनसनीखेज़ बात कह जाता है, जिसे हमलोग झट से सच मान लेते हैं। ऐसी बातों पर विश्वास कर लेने के खिलाफ़ तुम अपने आप से लड़ते हो; झूठी उम्मीदों को दबाते हो क्योंकि वह चरित्र को मजबूत नहीं करतीं, उल्टे अंत में कमजोर कर देती हैं। उम्मीद को कभी, किसी हालत में, झूठ की खूराक नहीं पहुँ-चानी चाहिए, उसे सदा सचाई का ही आधार देना चाहिए, वह सचाई जो साफ-साफ लड़ाई का अन्त उस रूप में देखती है जिस रूप में ही उसका अन्त हो सकता है। सत्य में बुनियादी विश्वास आदमी के अन्दर होता है। और यह विश्वास कि एक दिन ही सब कुछ है, निर्णय उसी के हाथ में है और सम्भव है कि वह एक दिन जो तुम्हें और मिला तुम्हें उस जिन्दगी, जिसके छूट जाने के खयाल से ही तुम्हें नफ़रत है, और उस मौत की चौहद्दी से बाहर ले आये जो तुम्हारे सामने खड़ी है।

आदमी की जिन्दगी में ऐसे दिन बहुत नहीं होते लेकिन फिर भी तुम उन्हें तेजी से, और तेजी से, जितनी तेजी से मुमकिन हो सके, खर्च करना चाहते हो। भागता हुआ, बेलगाम वक्त, जो खून की तरह बह जाता है और आदमी की जिन्दगी को खत्म कर देता है, यहाँ पर सबसे बड़ा दोस्त होता है। कैसी अजीब बात है!

आने वाला कल बीता हुआ कल हो गया है। परसों आज है—और फिर वह भी बीत जायगा। गेलिसें अब भी [illegible] कोठरी के दरवाज़े पर लटक रही हैं।

★

छठां अध्याय

मार्शल लॉ १९४२

★

मई २७, १९४३

ठीक एक साल पहले की बात है।

यातनाएँ देकर वे लोग मुझे 'सिनेमा' की ओर ले जा रहे थे। वह हम लोगों का रोज का रास्ता था : नंबर ४०० से नीचे खाने के लिए (खाना पांक्राट्स से आता था), फिर वापस चौथी मंज़िल पर। लेकिन उस दिन दोपहर में वे हमको फिर ऊपर नहीं ले गये।

बैठो और खाओ। बेंचें कैदियों से, जो अपने चमचों में और मुँह चलाने में व्यस्त हैं, भरी हैं। यहाँ यह तो बिल्कुल आदमियों जैसा रंग-ढंग मालूम होता है। अगर हम सब जो कल मर जायेंगे, यकायक कंकालों में बदल जायँ तो वह आवाज़ जो हमारे मिट्टी के बर्तनों पर चमचों के चलने से हो रही है हड्डियों की कड़कड़ाहट और जबड़ों की चटचट में बदल जायेगी। बस इतना है कि किसी को इस बात का खयाल नहीं आया और

न किसी को शक ही हुआ कि ऐसा भी हो सकता है। हम में से हर आदमी हफ्ता भर या महीना भर या सालों जिन्दा रहने के लिए पेट भर रहा था।

वहाँ के वातावरण को देखकर अनायास कहने का जी होता था : मौसम मुबारक हो। तब अचानक एक अजीब हवा का झोंका हमें लगा और बड़ी मनहूस खामोशी छा गयी। सिर्फ सन्तरियों के चेहरों से इस बात का कुछ अन्दाजा लगता था कि कोई खास असाधारण बात हो रही है। इसका सबूत यह था कि उन्होंने हमें बाहर निकाला, लाइन में खड़ा किया और पांक्राट्स की ओर ले चले। दोपहर को ही पांक्राट्स वापस : ऐसा तो पहले कभी नहीं हुआ। आधा दिन बिना यातनाओं के। हम लोग अपने आप से वे सवाल कर करके थक जाते हैं और हमें कोई जवाब नहीं मिलता। लगता है जैसे भगवान् की खास कृपा हो। लेकिन बात ऐसी नहीं है।

वहीं सायबान में हमें जेनरल एलियाश मिले जो प्रोटेक्टरेट के जमाने में प्रधान मंत्री थे और बाद को मार डाले गये। उनकी आँखें उद्विग्न हैं, संतरियों के झाड़झंखाड़ के बीच से उन्होंने मुझे देखा, पास आये और धीरे से कहा :

'मार्शल लॉ लगा है।'

मेरे मूक प्रश्न का उत्तर देने का मौका उनके पास न था। बहुत जरूरी बातचीत के लिए भी कैदियों के पास सेकंडों के भी टुकड़े ही होते हैं।

पांक्राट्स के संतरी हमारे पेचेक से जल्दी लौट आने पर बड़े अचंभे में थे। जो मुझे मेरी कोठरी तक ले गया उसे देखकर मेरे मन में इतना काफी विश्वास जगा कि जो कुछ मैंने सुना था मैंने उसे बता दिया। मुझे पता नहीं वह कौन है, लेकिन उसने सिर भर हिला दिया। उसे मार्शल लॉ के बारे में कुछ नहीं मालूम था—या शायद उसने मेरा सवाल

नहीं सुना। तो भी, शायद—और उससे मेरी परीशानी दूर हुई, वह परीशानी जो उससे सवाल पूछने के कारण मैं महसूस कर रहा था।

बहरहाल शाम को वह आया और उसने मेरी कोठरी के अन्दर झांका : 'तुमने ठीक कहा था। हेड्रिक की हत्या करने की कोशिश की गयी। वह बुरी तरह घायल हुआ है। प्राग में मार्शल लॉ है।'

दूसरे दिन उस समूचे गलियारे में उन्होंने हमें एक कतार में खड़ा किया और यातनाएँ देने के लिए ले चले। हमारे साथ हमारी पार्टी की केन्द्रीय समिति का आखिरी जीवित सदस्य कामरेड विक्टर साइनेक है। उसे फरवरी १९४१ में पकड़ा गया था। एस. एस. की वर्दी पहने एक दुबला पतला लम्बा-सा आदमी, जो जेलखाने की चाभियाँ रखता है, उसकी आँखों के आगे सफेद कागज़ का एक टुकड़ा नचाता है जिस पर मोटे मोटे अक्षरों में छपा हुआ है—

'रिहाई का हुक्मनामा।'

वह बहुत भोंडे ढंग से हँस रहा है :

'तो देखा तुमने, यहूदी के बच्चे, आखिर तुम बच ही गये। तुम्हारी रिहाई का हुक्मनामा! है क्यों नहीं.....' कह कर उसने अपनी उँगली गले पर फेरी और इस तरह बतलाना चाहा कि विक्टर का सिर उतार लिया जायगा। सन् १९४१ के मार्शल लॉ में फाँसी पानेवालों में ऑटो साइनेक पहला था। उसका भाई विक्टर सन् १९४२ के मार्शल लॉ का पहला शिकार है। फाँसी के लिए उसे वे माउटहाउज़ेन ले गये थे।

अब पांक्राट्स से पेचेक और पेचेक से पांक्राट्स रोज़ हज़ारों कैदियों के लिए मौत का रास्ता हो गया है। बसों में नात्सी सन्तरी 'हेड्रिक का बदला लेते हैं'। आध मील जाते जाते दर्जनों कैदियों के चेहरों से और मुँहों से खून बहने लगता है : पिस्तौल के कुंदों से उन्हें मारा गया है। जो मेरे संग जाते हैं उनका रास्ता अकसर जरा आराम से कट जाता है क्योंकि

मेरी दाढ़ी से खिलवाड़ करने में ही सब इतने उलझे रहते हैं कि दूसरों को पीटने-पाटने का वक्त ही उनके पास नहीं बचता ! मोटर धक्के देती हुई जब आगे बढ़ती है तो संतरी मेरी दाढ़ी पकड़कर लटक जाते हैं, यानी उससे वह वही काम लेते हैं जो मोटर में लगा चमड़े का फीता देता है ! यह खेल उनको खास तौर पर भाता है। अच्छा है, यातनाएं भुगतने के लिए यह अच्छी तैयारी हो जाती है। ये यातनाएं राजनीतिक परिस्थिति के अनुसार बदलती रहती हैं, लेकिन खत्म सदा एक ढंग से होती हैं : 'अगर कल तक तुम्हारी अक़्ल ठिकाने पर नहीं आयी, तो तुम्हें गोली मार दी जायगी।'

अब इस बात से बिलकुल डर नहीं लगता। एक शाम के बाद दूसरी शाम, वे सदा ही तो गलियारों में खड़े नाम पुकारा करते हैं। पचास, सौ, दो सौ आदमियों के हाथ पैर देखते-देखते कस दिये जायेंगे, उन्हें मोटर में डाला जायगा और बूचड़खाने के जानवरों की तरह कोबिलिसी ले जाया जायगा, झुंड के झुंड को एक साथ फाँसी लगेगी। उनके खिलाफ अभियोग ? पहला तो यही कि कोई भी बात साबित नहीं की जा सकी। वे पकड़े गये थे, किसी बड़े मामले से उनका कोई सम्बन्ध नहीं पाया गया, अब और तहक़ीक़ात के लिए उनकी कोई जरूरत नहीं है, इसलिए उन्हें फाँसी लगायी जा सकती है, कम से कम इतना काम तो उनसे लेना ही चाहिए ! हेड्रिक की हत्या के दो महीने पहले एक साथी ने एक व्यंग्यात्मक कविता लिख कर नौ आदमियों को सुनायी थी। अब सब के सब फाँसी वाली कोठरी में हैं—'हत्या का समर्थन करने के अपराध में'। एक औरत छः महीने पहले इस शक पर पकड़ी गयी थी कि वह ग़ैरकानूनी पर्चे बाँटती है। उसने कभी यह स्वीकार नहीं किया, और न इसका कोई सबूत ही है। फिर भी उन्होंने उसके भाई-बहनों, उसके भाइयों की पत्नियों और बहनों के पतियों को पकड़ लिया है और उन सब की हत्या करने जा रहे हैं क्योंकि 'संदिग्ध लोगों' के समूचे परिवार का संहार इस मार्शल लॉ का

मूल मंत्र है। एक डाकिया, जो गलती से पकड़ा गया है गलियारें में खड़ा इन्तजार कर रहा है कि अब उसे छोड़ दिया जायगा। उसका नाम पुकारा जाता है, और वे लोग उसे ठेलठालकर फाँसी के सज़ायाफ्ता लोगों की पाँत में खड़ा कर देते हैं, गाड़ी में बिठालकर ले जाते हैं और गोली मार देते हैं। दूसरे दिन उनको पता चलता है कि उनसे भूल हो गयी : उसी नाम के किसी और आदमी को गोली मारनी थी। लिहाज़ा उन्होंने उस दूसरे आदमी को भी गोली मार दी, और अब सारा मामला ठीक हो गया। अब किसके पास इतना वक्त धरा है कि मिलाता बैठे कि जिस आदमी को गोली मारी जा रही है वह सही आदमी है या नहीं ? और वक्त अगर हो भी तो उसकी जरूरत भी क्या जब कि धीरे धीरे सारे राष्ट्र को ही मार डालना उनका उद्देश्य है।

उस रात मैं 'पेशी' से बहुत देर में लौटा। देखता हूँ कि दीवार के पास ब्लाडिमीर वांचुरा (सबसे अधिक प्रतिभासंपन्न चेक उपन्यासकारों में से एक) खड़ा है, उसकी चीज़ों की एक छोटी सी पोटली उसके पैरों के पास रक्खी है। मैं उसका मतलब अच्छी तरह समझता हूँ। और वह भी समझता है। हम एक क्षण के लिए मज़बूती से हाथ मिलाते हैं। मैं ऊपर वाले गलियारे से अब भी उसे देख सकता हूँ, सिर ज़रासा झुकाये वह खड़ा है और उसकी आँखें दूर, हम लोगों की ज़िन्दगी से परे बहुत दूर कहीं ताक रही हैं। आध घण्टे बाद उसका नाम पुकारा गया.....

कुछ दिन बाद मिलोश क्रास्नी उसी दीवार की ओर मुँह किये खड़ा था, इंकलाब का एक बहादुर सिपाही जो पिछले साल अक्तूबर में पकड़ा गया था। यातनाएं और कालकोठरी उसे तोड़ नहीं सकी। चेहरे को थोड़ा सा दीवार से एक ओर को फेरे वह अपने पीछे खड़े संतरी को शान्तिपूर्वक कुछ समझा रहा है। वह अचानक मुझको देखता है, मुसकराता है, अलविदा कहने के लिए झटके से सर ऊपर को फेंकता है और संतरी से बदस्तूर बोलता जाता है :

'इस सबसे कुछ न होगा। मेरी तरह और भी बहुत से लोग अभी मरेंगे, लेकिन आखीर में हार तुम्हारी होगी.....'

फिर एक दिन और हम लोग दोपहर के वक्त, पेचेक बिल्डिंग में नीचे खड़े खाने का इन्तज़ार कर रहे थे। वे लोग एलियाश को लाये, उसकी बगल में एक अखबार दबा हुआ था। वह उसकी तरफ इशारा करता है और मुसकराता है, क्योंकि उसने अभी अभी पढ़ा था कि उन्होंने साबित कर दिया है कि हेड्रिक की हत्या में उसका हाथ है (बावजूद इसके कि पिछले आठ महीने से वह जेल में था)!

'खुराफात!' उसने कहा और खाने लगा।

उस शाम को हम लोगों के संग पांक्राट्स लौटते समय, वह दिल्लगी के लहजे में इसके बारे में बात करता है। लेकिन एक घंटे बाद वे उसे उसकी कोठरी से ले जाते हैं और कोबिलिसी भेज देते हैं।

लाशों का ढेर बढ़ता जा रहा है। अब वे लोग दर्सों में या सैकड़ों में नहीं हज़ारों में गिनती करते हैं। ताज़े खून की बू से इन दरिन्दों के नथने फड़कने लगते हैं। वे रात बड़ी देर तक और इतवारों को भी, 'काम' करते हैं। अब वे सब एस०एस० की वर्दियाँ पहनते हैं; यह उनका जश्न है, कत्ल का यह त्योहार। वे मजदूरों, स्कूल के मास्टरों, किसानों, लेखकों, अफसरों सब को मौत के घाट उतारते हैं; मर्दों औरतों और बच्चों को कत्ल करते हैं; पूरे पूरे कुनबों का सफाया कर देते हैं, गाँव के गाँव जला डालते हैं, उनका नामोनिशान मिटा देते हैं। बन्दूक की नली से निकली हुई सीसे की गोली की शकल में मौत प्लेग की तरह सारे देश में घूमती और सबको सुलाती चलती है।

लेकिन इस भयानक हालत में भी लोग जीते हैं।

विश्वास नहीं होता लेकिन लोग अब भी जीते हैं, खाना खाते हैं, सोते हैं, प्रेम करते हैं, काम करते हैं और ऐसी हज़ार चीजों के बारे में सोचते हैं जिनका कोई सम्बन्ध मौत से नहीं है। उनके दिमागों में कहीं

भयानक तनाव है, लेकिन उसे वे बर्दाश्त करते हैं। वे सिर नहीं झुकाते और न दम ही तोड़ते हैं।

मार्शल लॉ लगा था तो क्या, मेरा कमीसार मुझे ब्रानिक ले गया। जून के सुन्दर महीने की हवा नीबू और कीकर के फूलों की मीठी खुशबू से भारी हो रही थी। इतवार की शाम थी और मोटर के लिए नियत लाइन को छोड़ने के बाद सड़क इतनी चौड़ी न थी कि सैर-सपाटे से लौटनेवाले उन लोगों के रेले को संभाल सकती। वे सब बहुत खुश थे और शोर मचा रहे थे, दिन भर सूरज और पानी के आलिंगन में और अपने प्रेमी-प्रेमिका की बाँहों में गुजारने के बाद उनके अंगों में अब एक सुखद-सी, मीठी-सी, गुलाबी थकन थी। सिर्फ यह था कि मौत उनके चेहरों पर नहीं दिखायी देती, गो कि वह उनके बीच उनके संग संग चल रही थी और कभी कभी उनमें से एकाध का शिकार कर लेती थी। वे बिलकुल खरगोशों की तरह झूमते हुए चलते हैं और चलते चलते गिर पड़ते हैं, और चालाक भी वह उन्हीं की तरह हैं। बिलकुल खरगोशों की तरह! उनके बीच पहुँच जाओ और एक को खाने के लिए मार लाओ। ज़रा देर को वह सब कोने में दुबककर बैठते हैं, लेकिन फिर झट तमाम बाहर निकल आते हैं, अपनी खुशियों और परीशानियों समेत, जीवन के उल्लास से भरपूर।

जेल की घिरी-बँधी जिंदगी से उखाड़कर किसी ने मुझे यकायक आदमियों के इस हुजूम में लाकर खड़ा कर दिया और यह मीठा सुख पहले-पहल मुझे कड़वा लगा।

लगना चाहिए नहीं था, गो कि।

यहाँ पर मैं जो कुछ देख रहा हूँ वह जिन्दगी है और जहाँ से मैं अभी अभी चला आ रहा हूँ वह भी जिन्दगी है। चाहे कुछ ही क्यों न करो, जीवन को नष्ट नहीं किया जा सकता, हो सकता है कि किसी एक बिन्दु पर तुम उसे पीट पीट कर उसका भर्ता बना दो, लेकिन सौ दूसरी

जगहों से उसकी कोंपलें फूटेंगी। यह जिन्दगी है, और सदा मौत पर भारी पड़ती है। इसमें कड़वेपन की क्या बात है ?

और हम लोग जो कि यन्त्रणाओं के बीच जेल की कोठरियों में रहते हैं, सारी कौम से अलग किसी धात के बने हैं ?

कभी कभी मैं पुलिस की गाड़ी में बैठकर, जिसके संतरी काफी शराफत से पेश आते, अपनी पेशियों के लिए जाता। मैं खिड़की में से सड़क को देख सकता था, दूकानों की सजी खिड़कियों को देख सकता था, फूल बिकने की जगह देख सकता था, राह चलनेवालों को भीड़ देख सकता था, औरतों को देख सकता था। एक बार मैंने मन में कहा भी कि जिस दिन मुझे नौ जोड़ा हसीन टाँगें दिखायी देती हैं उस दिन मुझे फाँसी नहीं लगती। फिर मैं उन्हें देखने लगा, उनके अंगों के ढलाव को बारीकी से मिलाने लगा, टाँगों में बहुत गहरी दिलचस्पी ले लेकर उन्हें पास और फ़ेल करने लगा बगैर इस बात की ज़रा फिक्र किये कि उस पर मेरी जिन्दगी निर्भर थी, मानों यह सब सिर्फ कुछ रेखाओं की बात हो और उसके संग एक जिन्दगी का मसला गुँथा हुआ न हो।

ज्यादातर वे मुझे बहुत देर में वापस लाते। और डैड पेशेक सदा परीशान रहते कि मैं लौटूँगा भी कि नहीं। वह मुझे गले से लगाते और मैं उन्हें सब खबरें जो मैंने सुनी होतीं बता देता, जैसे कल रात कोबिलिसी में कौन कौन मारे गये। उसके बाद हमें भूख से मजबूर होकर सुखाकर रखी हुई तरकारियों का नफरत पैदा करनेवाला भुर्ता खाना पड़ता। तब हम कोई अच्छा मजेदार गाना गाने लगते या अगर गुस्से में हैं और तबियत गिरी हुई है तो चौपड़ खेलने लगते और थोड़ी देर के लिए जी बिलकुल बहल जाता। हमारे शाम के घंटे इसी तरह बीतते, जब कि यह अन्देशा पूरे वक्त रहता था कि अब हमारी कोठरी का दरवाजा खुला और हममें से किसी की मौत का परवाना सुनाया गया।

'तुम या तुम, नीचे चलो। अपनी सब चीजें ले लो। जल्दी, फौरन!'

मगर उस वक्त हममें से किसी की मौत का परवाना नहीं आया। उन भयानक घड़ियों में से हम जिन्दा निकल आये। अब जब हम उस वक्त की अपनी भावनाओं के बारे में सोचते हैं तो हमें अचंभा होता है। आदमी कैसी अजीब मिट्टी का बना होता है—हम लोग असह्य चीज़ें भी सह ले जाते हैं।

सह ले जायें मगर यह संभव नहीं कि ऐसी घटनाएँ हमारी जिन्दगी पर गहरे निशान न छोड़ जायं। वे हमारे दिमाग की झिल्ली के नीचे फिल्म के छोटे छोटे रोलों की तरह लिपटी पड़ी रहती हैं और बाद को असली जिन्दगी में—अगर तब तक हम लोग जिये—पागलपन की शकल में खुलती हैं। या शायद बाद में वे बड़े बड़े कब्रिस्तानों की शकल में खुलें या हरे हरे बागों की शकल में जिन्हें उस सब से महँगे, आदमी की जिंदगी के, बीज से लगाया गया है।

वह सब से अमूल्य चीज, एक न एक दिन जिसमें अँकुआ फूटेगा, जो एक न एक दिन गहगहाकर फूलेगी।

★

सातवां अध्याय

चित्र और रेखाएँ—२

★

पांक्चाट्स

जेलखाने में दो तरह की जिन्दगी होती है। आदमी को कोठरी में डाल कर बाहर से ताला भर दिया जाता है, और इस तरह सारी दुनिया से भयानक रूप से अलग कर दिया जाता है लेकिन फिर भी राजनीतिक बंदी तो दुनिया के साथ बहुत गहरे सम्बन्ध-सूत्र में जुड़े रहते हैं। दूसरी, कोठरियों के सामने लंबे गलियारे की जिन्दगी है, मन को तकलीफ पहुँचानेवाले अँधेरे-से गलियारों की वर्दीपोश जिन्दगी। बावजूद इसके कि इसमें छोटे-मोटे लोग, आकृतियाँ भरी होती हैं यह जिन्दगी कोठरियों की जिन्दगी से भी कहीं ज्यादा अकेली होती है। अब मैं उस जिन्दगी का जिक्र करना चाहता हूँ।

उस हिस्से का अपना भूगोल और इतिहास होता है। अगर न होता तो मैं उसका अध्ययन न कर सकता। पहले मैं स्टेज के सिर्फ उस सामने-

वाले हिस्से को जानता था जिसका मुँह हमारी तरफ है, उस प्रत्यक्षतः कठोर, कठिन सतह को जो कोठरी के रहनेवालों पर निरंतर अपना बोझ डालती रहती है। साल भर या छः महीने पहिले ऐसा ही लगता था। लेकिन अब मैं देखता हूँ कि उस सतह में इतनी बड़ी बड़ी दरारें हैं कि उनमें से आदमियों के चेहरे झाँकते नज़र आते हैं—वह चेहरे जिन पर तरस आता है, जो कुछ जानना चाहते हैं, या परीशान घबराये हुए चेहरे जिन्हें देखकर हँसी आती है। सब तरह के चेहरे, लेकिन हैं सब आदमियों के। उस धुँधली धुँधली-सी दुनिया के हर आदमी को शासन का तनाव एक शिकंजे की तरह दबाता है और इसी से उनकी जो भी मानव भावनाएँ हैं, वे उभर कर सामने आ जाती हैं। अकसर वह चीज उनमें कम ही होती है; मगर प्रत्यक्षतः कुछ में ज्यादा होती है कुछ में कम। उसी चीज के कम या ज्यादा होने से उनमें अपनी अपनी विशेषताएँ पैदा होती हैं और उनकी अलग अलग किस्में बन जाती हैं। हाँ यह तो है ही कि कभी कभी उनमें कुछ पूरे पूरे आदमी भी मिल जाते हैं। लेकिन दूसरों की मदद करने के लिए उन्हें इस शासन से पैदा तनाव की जरूरत न थी।

जेल कोई खुशी की जगह नहीं है लेकिन कोठरियों के सामने की दुनिया कोठरियों से भी ज्यादा अँधेरी होती है। कोठरियों में दोस्ती का वास होता है—और कैसी दोस्ती! वैसी ही जैसी कि लड़ाई के मोर्चे पर बहुत लंबे चलनेवाले खतरे के समय पैदा होती है, जब कि आज तुम्हारी जिन्दगी मेरे हाथ में हो सकती है और कल मेरी जिन्दगी तुम्हारे हाथ में। जो हो, इस हुकूमत के संतरियों में आपस में बहुत ही कम दोस्ती है। हो भी नहीं सकती। उनके चारों तरफ ओछी खुफियागीरी की हवा रहती है, वे सदा एक दूसरे की चुगली खाया करते हैं और उन्हें उन लोगों से सावधान रहना पड़ता है जिन्हें वे सरकारी तौर पर 'साथी' कह कर पुकारते हैं। उनमें से बेहतरीन लोग जो बिना दोस्ती के जी नहीं सकते, उनको यह चीज हमारी कोठरियों में मिलती है।

बहुत दिनों तक हम लोग एक दूसरे का नाम न जानते थे। मगर उससे कुछ नहीं बिगड़ता, हम लोगों ने खुद ही उनके नाम रख लिये थे। कुछ नाम हम लोगों ने उन्हें दिये, कुछ नामों का आविष्कार हमारे पूर्वजों ने किया था और कोठरी के संग वे भी हमें उत्तराधिकार में मिले। कुछ के अलग अलग कोठरियों में अलग अलग नाम थे—वे ऐसे लोग थे जो न अच्छे थे न बुरे, न इधर थे न उधर, जो एक कोठरी में कायदे से ज्यादा भी कुछ दे देते लेकिन वे ही दूसरी कोठरी में कैदियों के मुँह पर तमाचा मार देते। कैदियों से यह जो कुछ क्षणों का सम्पर्क होता है, यही कोठरी के रहनेवालों के मन पर चिरस्थायी छाप छोड़ जाता है, और इन छापों के ही आधार पर नाम रक्खे जाते हैं। बहरहाल, कभी कभी ऐसा भी होता है कि तमाम कोठरियाँ एक ही लक़ब से किसी को पुकारने लग जाती हैं, और यह होता है उन संतरियों के संग जिनमें अच्छी या बुरी कुछ बड़ी खास अपनी विशेषताएँ होती हैं।

आइए ज़रा इन लोगों को एक नज़र देखें। इन छोटी छोटी शकलों को! वह यों ही अचानक एक जगह नहीं इकट्ठा हो गये हैं : वे नात्सीवाद की राजनीतिक सेना का एक दस्ता हैं। उन्हें बहुत होशियारी से चुना गया है। वे इस हुकूमत के खंभे हैं, जिन पर उनका समाज टिका है—

'फ़र्स्ट-एड-वाला'

वह लम्बा, मोटा-सा एस. एस. का आदमी जिसकी कमजोर-सी पतली सी जनानी आवाज है, उसका नाम रियुस है; वह राइन के किनारे कोलोन के एक स्कूल में चौकीदार था। सभी जर्मन स्कूलों के चौकीदारों की तरह उसने भी फर्स्ट एड सीखा था और अकसर जेल के डाक्टर की जगह पूरी करता था। इस जगह वह पहला आदमी था जिससे मेरा संपर्क हुआ। वह मुझको घसीट कर कोठरी में लाया, ओठे पर मुझे लिटाया, मेरे घावों को देखा सुना और उन पर गीली पट्टियाँ रक्खीं,

पहली बार। शायद यह ठीक है कि उसने मेरी जान बचाने में मदद की! वह किस बात की अभिव्यक्ति थी? उसकी मनुष्यता की या उसके फर्स्ट एड के ज्ञान की? मैं ठीक नहीं कह सकता। मगर जब वह गिरफ्तार यहूदियों के दाँत तोड़ देता या उन्हें नमक या बालू के चमचे भर भर कर देता, (क्योंकि सब बीमारियों का यह एक अकसीर इलाज उनके पास था) तब यह निश्चय ही उसके नात्सीवाद की अभिव्यक्ति होती।

'स्मार्टी'

यह बातूनी, रहमदिल फेबियन† चेस्का बुडेजोविट्ज़े के शराब के कारखाने का एक ड्राइवर था। वह जब हमारा खाना लाता तो खूब मुसकराता हुआ कोठरी में दाखिल होता, और कभी हम लोगों को परीशान न करता। आप कभी विश्वास नहीं करेंगे कि वह घंटों हमारी कोठरी के दरवाजे के बाहर, हमारी बातों पर कान लगाये खड़ा रहता कि कोई छोटी सी बात भी मिल जाय तो उसे लेकर वह अपने किसी ऊँचे अफसर के पास दौड़ जाये।

'कोकलार'

वह भी बुडेजोविट्ज़े के शराब के कारखाने का मजदूर था। सुडेटन इलाके के जर्मन मजदूर यहाँ पर बहुत हैं। मार्क्स ने एक बार लिखा था : यह महत्व की बात नहीं है कि एक मजदूर व्यक्ति के नाते क्या सोचता या करता है; महत्व की बात यह है कि अपना ऐतिहासिक कर्तव्य पूरा करने के लिए मजदूर वर्ग को क्या करना चाहिए।' जिन लोगों को

---

† समाजवाद से उसके क्रान्तिकारी तत्व वर्ग संघर्ष को निकाल कर वैधानिक ढंग से समाजवाद की स्थापना का सपना देखनेवाले 'समाजवादियों' की एक किस्म—अनुवादक।

हम यहाँ देखते हैं वे अपने वर्ग के कर्तव्यों के बारे में खाक-बला कुछ भी नहीं जानते। अपने वर्ग से विच्छिन्न और परिस्थितियोंवश उसके विरोध में खड़े, वे सिद्धान्त की दृष्टि से त्रिशंकु के समान अधर में लटकते रहते हैं—आगे चलकर शायद सैद्धान्तिक ही नहीं शारीरिक दृष्टि से भी उनकी यही स्थिति होती है!

आराम से अपनी रोजी कमाने के लिए उसने नात्सियों का साथ किया। मगर अब उसे पता चलता है कि यह तो बहुत टेढ़ा मामला है, इसकी तो उसने कल्पना भी न की थी। तब से वह मुसकराना भूल गया है। उसने नात्सियों की जीत पर बाजी लगायी थी, मगर अब उसे लगता है कि उसने मुर्दा घोड़े पर बाजी लगायी थी! उसकी हिम्मत टूट गयी है। स्लिपर पहने, खामोशी से जब वह रात को गलियारे में चहलकदमी करता, तो अनजाने में ही लैंप के शेड की धूल पर अपने उदास विचारों के दाग छोड़ देता।

उनमें से एक पर उसने कविता की भाषा में लिखा था, 'हर चीज बदबू करती है' और आत्महत्या करने की सोची थी।

दिन के वक्त वह संतरियों और कैदियों दोनों को अपनी जल्दबाज, खरखरी आवाज में इधर उधर दौड़ाता रहता है—और यह सब खुद अपनी हिम्मत बनाये रखने के लिए।

रॉस्लर

लम्बा और दुबला, भद्दी, खुरदुरी, मोटी आवाज का रॉस्लर यहाँ के उन गिनती के लोगों में है जो खुलकर हँस सकते हैं। वह जाब्लोनेट्ज़ की एक कपड़े की मिल का मजदूर है। वह हमारी कोठरी में आ जाता है और घण्टों बहस करता है।

'मैं इसमें कैसे आ फँसा? दस साल तक मेरे पास कोई स्थायी काम

न था, और तुम सोच ही सकते हो हफ्ते में चार शिलिंग† में पूरे परिवार का खर्च चलाना हो तो जिन्दगी का नक्शा क्या होगा। फिर वे लोग आये और उन्होंने कहा : हम तुम्हें काम देंगे, हमारे संग चलो। मैं गया और उन्होंने मुझे काम दिया, मुझे और और सबों को ; अब हम लोगों की रोटी का तो ठिकाना हो गया, घर बनाकर रह तो सकते हैं, एक बार फिर साँस तो ले सकते हैं। समाजवाद ? बेकार चीज़ है। मैंने इसके बारे में पहले कुछ दूसरी ही कल्पना की थी, लेकिन यह जो कुछ है पहले से अच्छा है। नहीं है ? लड़ाई ? लड़ाई मैं नहीं चाहता था। मैं नहीं चाहता था कि दूसरे लोग मरें, मैं तो सिर्फ खुद जीना चाहता था।

'क्या ? मैं चाहूँ या न चाहूँ लड़ाई में मदद पहुँचा रहा हूँ ? तो करूँ क्या ? यहाँ मैंने किसी को कोई चोट पहुँचायी है ? अगर मैं चला जाऊँगा, तो दूसरे लोग, शायद मुझ से भी गये बीते, मेरी जगह ले लेंगे। इससे किसी का कुछ फायदा होगा ? लड़ाई के बाद मैं फिर अपने कारखाने वापस चला जाऊँगा.....

'तुम्हारा क्या खयाल है कौन जीतेगा ? हम लोग नहीं ? तुम लोग ? तो हम लोगों का क्या होगा ?

'खात्मा ? यह तो बहुत बुरी बात है। मैंने तो कुछ और ही कल्पना की थी।'

और वह लंबे लंबे थके हुए कदमों से कोठरी के बाहर चला जाता है।

आध घण्टे में वह फिर सोवियत संघ के बारे में एक सवाल लेकर लौट आता है।

---

† मोटे हिसाब से शिलिंग ग्यारह बारह आने का होता है—अनुवादक।

एक दिन हम लोग पांक्राट्स के बड़े गलियारे में खड़े उन लोगों का इन्तजार कर रहे थे कि आकर हमें पेशी के लिए पेचेक बिल्डिंग ले जायें। हमें रोज इस जगह दीवाल से माथा सटा कर खड़े रहना पड़ता था जिसमें हम यह न देख सकें कि हमारे पीछे क्या हो रहा है। उस दिन मैंने एक नयी आवाज सुनी :

'मैं कुछ नहीं देखना चाहता। मैं कुछ नहीं सुनना चाहता! तुम मुझ को नहीं जानते, लेकिन जल्दी ही जान जाओगे!'

मैं हँसा। इस कवायद में 'गुड सोल्जर श्वाइक' के गरीब बेवकूफ लेफ्टिनेंट ड्रूब का यह उद्धरण बहुत मौके का था। अब तक किसी ने यह हिम्मत नहीं दिखलायी थी कि इस मजाक को जोर से कहता। कतार में मेरे बगल में खड़े मेरे ज्यादा अनुभवी पड़ोसी ने मेरी पसली में उँगली चुभाकर इशारा किया कि हँसो मत, मुमकिन है तुम्हारा खयाल गलत हो; और यह बात हँसने के लिए न कही गयी हो। और सचमुच वह हँसने के लिए नहीं कही गयी थी!

वह शकल जिसकी आवाज हमने अपने पीछे सुनी थी, एस. एस. की वर्दी पहने एक पिद्दी-सा आदमी था, जिसे स्पष्ट ही श्वाइक के बारे में कुछ नहीं मालूम था। यह शकल लेफ्टिनेंट ड्रूब की तरह बात कर रही थी क्योंकि आध्यात्मिक रूप में वह उससे संबद्ध थी। यह शकल वितान पुकारने पर जवाब देती थी और बहुत दिनों तक नाम को थोड़ा-सा चेकोस्लोवाक रूप देकर चेकोस्लोवाक फौज में सार्जेंएट की हैसियत से काम कर चुकी थी। उसने बात ठीक कही थी, धीरे धीरे हम लोग उसे खूब अच्छी तरह जान गये और हम लोग सदा उसके बारे में उत्तम पुरुष एक वचन का ही प्रयोग करते थे—वह। सच बात तो यह है कि जब हमने मूर्खता, दुष्टता, अहम्मन्यता और सीधे-सादे कमीनेपन के उस अजीब संमिश्रण के लिए,

जो कि पांक्राट्स की हुकूमत के खास स्तम्भों में से था, कोई उपयुक्त नाम ढूँढ़ना चाहा तो हमारी अकल ने जवाब दे दिया।

जब हम उन ओछे, ज़लील, घमंडी और मौकेबाज़ लोगों के मर्म पर आघात करना चाहते तो कहते, 'वह सुअर के घुटने तक भी नहीं पहुँचता'—वह हमारा खास फ़िकरा था।. उस आदमी का दिमाग़ कितना छोटा होगा जिसे अपने नाटे क़द की वजह से यंत्रणा महसूस होती हो। वितान को यह यंत्रणा महसूस होती थी और वह हर उस आदमी से बदला लेता था जो उससे शारीरिक या मानसिक रूप में बड़ा होता—यानी हर किसी से।

मुक्कों-घूँसों से नहीं। इतनी उसमें हिम्मत न थी। जासूसी करके, चुगली खाकर। वितान की मनगढ़न्त के पीछे न जाने कितने कैदियों ने अपनी सेहत से हाथ धोया होगा, न जाने कितनों ने अपनी जान गँवाई होगी—क्योंकि तुम पांक्राट्स से किसी कन्सेन्ट्रेशन कैंप भेजे जाते हो या पांक्राट्स से निकल भी पाते हो, इन सब बातों का दारोमदार इस पर है कि तुम्हारे कार्ड पर क्या लिखा है।

जब वह शान में आकर मुर्गे की तरह गलियारे में अकेले चहलकदमी करता है तो उसे देख कर बड़ी हँसी आती है। जब कोई उसे नहीं भी देखता होता तब भी वह इसी तरह फूलकर चलता है। जब किसी आदमी से उसकी मुलाकात होती है तो उसे लगता है कि कहाँ कूदकर औरों से ऊपर जा बैठे। जब वह हम लोगों में से किसी से सवाल-जवाब करता है तब भी वह कुर्सी की बाँह पर बैठा रहता है और गोकि उस तरह बैठने में उसे तकलीफ ही होती है तो भी वह उसी तरह घंटे भर तक बैठा रह सकता है क्योंकि उस हालत में उसकी ऊँचाई तुमसे मुट्ठा भर ज्यादा हो जाती है। हमारे दाढ़ी बनाते वक्त जब वह ड्यूटी पर रहता है, तब वह या तो सीढ़ी पर खड़ा रहता है या बेंच पर ऊपर-नीचे क़वायद करता रहता है, और उसकी

जबान पर उसका मशहूर फ़िकरा : मैं कुछ नहीं देखना चाहता, मैं कुछ नहीं सुनना चाहता। तुम मुझे नहीं जानते.....'

सवेरे कसरत के वक्त वह सहन से अलग घास के एक छोटे से प्लाट पर जा बैठता है, क्योंकि वहाँ पर बैठकर वह सहन के बाकी सब लोगों से चार इञ्च ऊँचा हो जाता है। वह कोठरी में उसी शानो-शौकत से दाखिल होता है जिससे कि बादशाह दाखिल होता है, लेकिन वह फौरन कुर्सी पर जा खड़ा होता है जिसमें मुनासिब ऊँचाई से मुआयना कर सके।

उसे देखकर हँसी तो बहुत आती है लेकिन जब आदमी की जिंदगी का सवाल उठाता है तब तो तमाम गधे सरकारी अफसरों की तरह वह खतरनाक भी बहुत है। उसके गधेपन में एक सिफत और छिपी हुई है—उसे तिल का ताड़ बनाना आता है। उसे सिर्फ एक काम आता है, रखवाले कुत्ते का और इसीलिए कायदे कानून का छोटा-से-छोटा उल्लंघन भी उसकी दृष्टि में बहुत बड़ा हो जाता है, उसकी अहम्मन्यता के बराबर बड़ा। वह जेल के छोटे-से-छोटे नियम और आदेश की अवज्ञा की व्याख्या इस रूप में करता है कि उससे उसकी इस चेतना को खूराक पहुँचे कि वह भी कोई है। और फिर कौन इस बात का पता लगाता है कि उसके लगाये अभियोगों में कितनी सचाई है?

स्मेटांज़

स्मेटांज़ का बेडौल, भारी भरकम शरीर, कुंद, बुझा हुआ चेहरा और एकदम भावशून्य आँखें मूर्ति हैं उन व्यंग्य चित्रों की जो ग्रोज़ ने नात्सी स्टार्मट्रूपरों के बनाये हैं। वह पूर्वी प्रशिया की लिथुआनियन सीमा के पास ग्वाले का काम करता था, लेकिन अजीब बात है कि वह नेक जानवर गाय भी उस पर कोई असर न डाल सकी। ऊपर, लोग उसे जर्मन चरित्र का मूर्त रूप समझते हैं—वह कठोर है, फुर्तीला है, उसे रिश्वत नहीं दी जा सकती। वह उन थोड़े से लोगों में से है जो ट्रस्टियों से जिनसे गलियारे में

उसकी मुलाकात होती है अपने हिस्से से ज्यादा खाना नहीं माँगता, लेकिन.....

किसी जर्मन वैज्ञानिक ने, नाम नहीं याद आ रहा है, एक बार जानवरों की अक्ल इस तरह नापी थी कि वे कितने 'शब्द' बना पाते हैं। इस आधार पर उसने नतीजा निकाला था कि पालतू बिल्ली तमाम जानवरों से कम अक्ल वाली होती है—क्योंकि, ऐसा लगता है, वह सिर्फ १२८ 'शब्द' बना पाती है। लेकिन भई, स्मेटांज़ के मुकाबले में तो बिल्ली भी बहुत बढ़ी-चढ़ी विदुषी है क्योंकि स्मेटांज़ के मुँह से पांकाट्स ने आज तक चार से ज्यादा शब्द नहीं सुने :

'ए, दिमाग ठिकाने रखना !'

हफ्ते में दो या तीन बार उसे काम पर से अलग किया जाता। हर बार उसे इस बात से तकलीफ होती, लेकिन वह सदा इस छोटी-सी रस्म में कोई-न-कोई गड़बड़ी कर बैठता। एक बार मैंने जेल के सुपरिन्टेन्डेन्ट को उसे इसलिए डाँटते देखा था कि उसने खिड़कियाँ नहीं खोली थीं। गोश्त का वह ढेर, छोटी-छोटी गठीली टाँगों के सहारे एक बार आगे जाता था फिर पीछे आता था, पीछे आता था फिर आगे जाता था, उसका बोदा सर आगे की तरफ जरा झुका हुआ था, उसके मुँह के कोने इस कठिन कोशिश में गिरे हुए थे कि वह उस हुक्म को एक बार दोहरा दे जो उसके कानों ने अभी अभी सुना था...और फिर अचानक गोश्त का यह पहाड़ साइरेन* की तरह गरजने लगा और गलियारे भर में सब सकते में आ गये। किसी की समझ में न आया कि यह सब क्या और क्यों हो रहा है, खिड़कियाँ बदस्तूर बन्द रहीं और दो कैदी जो स्मेटांज़ के सबसे करीब थे, उनकी नाक से खून बहने लगा। सवाल को हल करने का यह उसका तरीका था।

---

* एक जानवर।

और यही उसका कायदा था। वह जिस किसी को भी पाता, मार चलता, मारते मारते मार तक डालता। इतना ही उसकी समझ में आता था। और कुछ नहीं। एक बार वह एक कोठरी में घुसा और उसके एक आदमी को मार दिया। कैदी बीमार था, जमीन पर गिर पड़ा और मारे तकलीफ के लोटने लगा। स्मेटांज़ ने कोठरी के बाकी लोगों को भी मजबूर किया कि वह भी उसकी तिलमिलाहट और ऐंठन की ताल पर उठें-बैठें। बीमार के थकने और उसकी ताकत खत्म होने के साथ साथ उसकी ऐंठन भी खत्म हो गयी। तब स्मेटांज़ कूल्हों पर हाथ रक्खे बेवकूफ आदमी की तरह मुसकराने लगा : वह बड़ा खुश था कि ऐसे पेचीदा मसले को उसने कैसी खूबी से हल कर लिया।

वह सचमुच आदिम काल का जंगली आदमी था जिसे उन तमाम बातों में से जो कि उन लोगों ने उसे सिखाने की कोशिश की थी सिर्फ एक बात याद थी—कि ज्यादातर मसले मार-पीट से हल हो जाते हैं।

आखिरकार इस जानवर के अन्दर भी कोई चीज टूटी। लगभग एक महीना पहले की बात है कि वह और क—जेल के गोल कमरे में बैठे हुए थे। क—उसे परिस्थिति समझा रहा था। इतना घुमा फिराकर तूल देकर हैरान हो होकर बात समझायी गयी कि वह स्मेटाँज़ की अक्ल में भी कुछ कुछ धँसी। तब वह खड़ा हुआ, कमरे का दरवाज़ा खोला, बहुत गौर से गलियारे को देखा। एक आवाज़ नहीं, रात की उस मृत्यु जैसी निस्तब्ध वेला में सभी सो रहे थे। उसने दरवाजा बन्द किया, सावधानी से ताला लगाया और धीरे से कुर्सी में गिर पड़ा :

'तो तुम्हारा खयाल है...?'

ठुड्ढी हथेली पर टिकाये वह बैठा था। उस भारीभरकम, पहाड़ जैसे शरीर में जो छोटी सी आत्मा थी उस पर एक बहुत भयानक बोझ आकर बैठ गया। बहुत देर तक वह सिर झुकाये बैठा रहा, फिर सिर उठाया और गहरी निराशा के स्वर में कहा :

'तुम ठीक कहते हो। हम नहीं जीत सकते...'

पिछले एक महीने से पांक्राट्स ने स्मेटांज़ की रण-गर्जना नहीं सुनी है। नये कैदी उसके घूँसे की नहीं जानते।

जेल संचालक

वह एक छोटा सा, सब-प्लैटून लीडर† था, सदा ठाठदार कपड़े पहने रहता, वह फिर चाहे फौजी वर्दी हो या शहरी पोशाक; देखने से बड़ा चिकमा-सा समृद्ध-सा लगता, और अपने आप पर बेहद मगन। उसे कुत्तों, शिकार और औरतों से प्रेम था—लेकिन उससे हमें क्या मतलब।

उसके चरित्र के दूसरे पहलू में—जिसका पांक्राट्स से सम्बन्ध है—यह बात थी कि वह बिलकुल अशिक्षित, गँवार, और मोटे रेशे का आदमी था। वह बिलकुल खास नात्सी छिछोरा था जो अपना रुतबा बनाये रखने के लिए किसी की भी कुर्बानी कर सकता है। वह पोलैंड का रहनेवाला है और उसका नाम सॉप्पा है, पता नहीं इस नाम का क्या मतलब है। सुनते हैं पहले वह लुहार का काम सीखता था, मगर उस ईमानदार पेशे का उस पर कोई असर नहीं दिखायी देता था। हिटलर की नौकरी करते उसे एक ज़माना हो गया था और इस वक्त उसका जो रुतबा है वह उसे खुशामद और साजिशों के जोर से मिला है। वह हर मुमकिन चालाकी से अपनी नौकरी की रक्षा करता है। उसे किसी कैदी या अपने किसी आदमी, बच्चों या बुड्ढों किसी के लिए कोई खयाल नहीं है और न उनके लिए दिल में कोई भाव है। पांक्राट्स के जेल कर्मचारियों के दिल में नात्सीवाद के लिए

---

† प्लैटून पैदल फौज का छोटा सा दस्ता होता है जिसमें साठ के लगभग आदमी होते हैं। उसका अफसर प्लैटून-लीडर; सब प्लैटून-लीडर उसका डिप्टी होगा।

कोई खास बात नहीं है, लेकिन उसमें से शायद ही कोई सॉप्पा जैसा भावनाशून्य आदमी हो। जेल का डाक्टर पुलिसमास्टर वाइज़नर वह अकेला आदमी है जिसको वह कुछ समझता है और जिससे वह अकसर बातचीत करता है। लेकिन लगता है कि उधर से ऐसी बात नहीं है।

सॉप्पा को सिर्फ अपनी चिन्ता रहती है। अपना वर्तमान पद, जिसमें वह लोगों पर राज करता है, उसने केवल अपने लिए हासिल किया है और अपने ही लिए वह अन्तिम क्षण तक वर्तमान सरकार की नमक-हलाली करेगा। वह शायद अकेला आदमी है जो कभी कभी यह सोचता है कि क्या मुक्ति का कोई और भी रास्ता है, मगर अब वह जानता है कि ऐसा कोई रास्ता नहीं है। नात्सीवाद का पतन उसका अपना पतन होगा, जो उसके ऐश्वर्यपूर्ण जीवन का अन्त कर देगा, उसके खूबसूरत मकान का, उसकी अपनी शानोशौकत का, जिसे बनाये रखने के लिए उसे मार डाले गये चेकों का कपड़ा इस्तेमाल करने में भी कोई हिचक न हुई।

हाँ, वह सचमुच उसका भी अन्त होगा।

जेल डाक्टर

पुलिसमास्टर वाइज़नर—पांक्राट्स के रङ्गमञ्च पर कैसा विचित्र अभिनेता। उसे देखकर अकसर ऐसा लगता है कि यहाँ के वातावरण में वह कुछ जमता नहीं—लेकिन उसके बिना भी तो पांक्राट्स की कल्पना नहीं की जा सकती। जब वह मरीज़ों के कमरे में नहीं होता तो अपने छोटे छोटे झूमते हुए कदमों से गलियारों में जैसे फिसलता-सा चला आता है—अपने से बात करता हुआ और अपने चारों तरफ की हर चीज पर गौर करता हुआ, हर वक्त गौर करता हुआ। वह एक परदेसी यात्री की तरह है जो यहाँ चला आया है और यहाँ के बारे में ज्यादा से ज्यादा तफसीलें बटोरकर अपने साथ ले जाना चाहता है। लेकिन ताले में चाभी डालने और गुपचुप कोठरी का दरवाजा खोलने में वह किसी भी चोर से कम नहीं है।

उसमें एक बहुत सूखे ढङ्ग का मज़ाक़ करने का मादा है, और उसी के बल पर वह ऐसी बातें कह जाता है जिनका गुह्यार्थ होता है, लेकिन वह ऐसी कोई बात नहीं कहता जिस पर तुम बाद में उसे पकड़ सको। वह लोगों की खुशामद करता है लेकिन किसी को अपनी खुशामद नहीं करने देता। वह देखता बहुत कुछ है लेकिन अपने संग किस्से नहीं लिये घूमता और न लोगों की बुराई करता है। अगर वह किसी ऐसी कोठरी में पहुँच जाता है जो धुएँ से भरी है, तो ज़ोर ज़ोर से नाक से सूँ सूँ करता है और कहता है :

'जी', और ज़ोर से चटखारा मारता है, 'कोठरी में सिगरेट पी जा रही है।' फिर ओंठ से चट से करता है और कहता है, 'सख्त मनाही है।'

मगर इस बात की रिपोर्ट वह नहीं करेगा। उसका चेहरा सदा परीशान रहता है और उस पर झुर्रियाँ पड़ी रहती हैं, मानों अन्दर ही अन्दर कोई सख्त तकलीफ उसे मथ रही हो। यह स्पष्ट है कि वह उस सरकार से कुछ लेना-देना नहीं चाहता जिसकी कि रोटी वह खाता है, जिसके शिकारों की वह दिनरात फिक्र रखता है। उसे इस सरकार में विश्वास नहीं है; वह इसे चिरस्थायी नहीं मानता और न कभी उसने माना। इसीलिए वह अपने परिवार को ब्रेसलाउ से प्राग नहीं लाया, गो राइख के बहुत थोड़े अफसर होंगे जिन्होंने अधिकृत देश में ठूँस ठूँसकर खाने का और नोचखसोट करने का यह मौका हाथ से जाने दिया हो। लेकिन जो लोग इस सरकार से लड़ रहे हैं उनसे भी हाथ मिलाना उसके लिए उतना ही असम्भव है। वह बिलकुल तटस्थ है, किसी ओर नहीं झुकता।

वह बहुत ईमानदारी से और सजग कर्तव्यबुद्धि से मेरी देखभाल करता। अपने ज्यादातर मरीज़ों के सङ्ग उसका यही सलूक है, और वह अकसर बहुत सख्ती से मना कर देता है कि वे कैदी जिन्हें बहुत ज्यादा यातनाएँ दी जा चुकी हैं, फिर और यातनाओं के लिए ले जाये जायँ। शायद इससे उसकी अन्तरात्मा शांत हो जाती है। बहरहाल कभी कभी

जब उसकी मदद की सबसे ज्यादा जरूरत होती है, वह मदद करने से इन्कार भी कर देता है। शायद तब जब वह बहुत डरा हुआ होता है।

साधारण नागरिक की खास एक किस्म का वह नमूना है,—आज की ताक़तों के अपने डर और फिर कल क्या होगा उसके डर के बीच एक-दम अकेला। वह हर तरफ समस्या हल करने के लिए आँखें दौड़ाता है, लेकिन वह हल उसे कहीं नहीं मिलता। चूहेदानी में फँसा हुआ अच्छा खासा मोटा चूहा है वह।

बुरी तरह फँसा हुआ : निकलने की कोई उम्मीद नहीं।

'फ्लिंक'

यह आदमी न तो एकदम न-कुछ है और न अभी उसका पूरा पूरा चरित्र बन पाया है। अभी वह दोनों हालतों के बीच है। अभी उसके पास वह साफ दृष्टि नहीं है कि यह कहा जा सके कि उसके पास अपना व्यक्तित्व है।

उस तरह के दो आदमी यहाँ पर हैं : सीधे-सादे, निष्क्रिय रूप से संवेदनशील भी; पहले तो वे उन भयानक बातों से डर गये जिनमें कि वे जा पड़े हैं, और अब वे उनसे निकल भागने की राह पाना चाहते हैं। वे किसी भी तरह का मानसिक आधार खोजते हैं, क्योंकि उन्हें अपने ऊपर भरोसा नहीं है। वे तर्कबुद्धि की अपेक्षा अपनी सहज अन्तश्चेतना से इस आधार को खोजते हैं। अगर वे तुम्हारी कोई मदद करते हैं तो उसमें भाव यही है कि तुम उनकी मदद करोगे। इन लोगों को मदद देना ठीक है—इस समय भी और भविष्य में भी।

पांक्राट्स के तमाम जर्मन अफसरों में यही दो हैं जो लड़ाई के मोर्चे पर भी हो आये हैं।

हनोअर ज्नोज्मो का एक दर्जी था जो बर्फ की मार से बीमार और बेकार होकर जल्दी ही पूरबी मोर्चे से लौट आया था : यह बात अलग है

कि उस बीमारी का सारा इन्तजाम उसने खुद किया था! अब वह श्वाइक की शैली में दार्शनिकों के समान बात करता है, 'युद्ध लोगों के लिए नहीं है' 'मेरे लिए उसमें कुछ नहीं'।

हॅयफ़र बाटा के जूते के कारखाने का एक प्रसन्नचित्त कारीगर है। वह फ्रांस के हमले में था, फिर अपनी फौजी ड्यूटी छोड़ कर भाग आया, बावजूद इसके कि उसे तरक्की मिलनेवाली थी। जब कभी वह किसी झंझट में पड़ता—और रोज़ ही ऐसी सैकड़ों झंझटें होतीं—तब वह 'ओह श्' कह कर और हाथ हिलाकर उसको टालने की कोशिश करता।

इन दोनों की किस्मत और भावनाएँ, दोनों ही बहुत कुछ एक सी थीं। लेकिन हॅयफ़र दोनों में ज्यादा निडर, ज्यादा स्पष्ट ढंग से अपनी बात कहनेवाला, और पूर्णतर व्यक्तित्व का आदमी था। लगभग सभी कोठरियों में उसका लकब 'फ्लिक' था।

जिस दिन वह ड्यूटी पर होता है वह दिन कोठरीवालों के लिए खैरियत से गुजरता है। वह तुम्हें ज़ोर से डपटता है तो साथ ही साथ आँख भी मार देता है, यह दिखाने के लिए कि उसका मतलब तुम्हें डपटना नहीं बल्कि नीचे बैठे हुए इंस्पेक्टर को सुनाना है कि वह कैदियों के संग कितनी सख्ती से पेश आता है। लेकिन सख्ती दिखलाने की उसकी ये नाटकीय कोशिशें बेकार जाती हैं। अब किसी को उसकी बात पर यक़ीन नहीं होता और कोई हफ्ता नहीं जाता कि उसे सज़ा न मिलती हो।

"ओह श्श्....." कह कर वह लापरवाही के अन्दाज़ से हाथ हिलाता है और फिर वही रफ्तार बेढंगी। वह अब भी संतरी नहीं, जूते के किसी कारीगर का नौजवान चञ्चल सहायक ही है जो कि वह पहले था। उसे कभी कभी कैदियों के संग बड़े आनन्दपूर्वक यहाँ तक कि मस्ती से गोटी खेलते पकड़ा जा सकता है। उसके एक मिनट बाद वह कैदियों को कोठरी में से गलियारे में खदेड़ देगा और कोठरियों का मुआयना

करेगा। अगर मुआयना बहुत देर तक चला और तुम्हें कुतूहल हुआ कि इतनी देर क्यों हो रही है और तुमने कोठरी के अन्दर झाँक कर देखा तो क्या देखोगे कि हजरत मेज पर बैठे, सिर बाँहों पर टिकाये सो रहे हैं। बहुत शान्ति से और बड़े मजे में सो रहे हैं। यहाँ उसे अपने अफसरों का डर नहीं रहता क्योंकि गलियारे में खड़े कैदी उसकी पहरेदारी करते हैं और कोई खतरे की बात होने पर उसे सावधान कर देते हैं। ड्यूटी के वक्त सोना उसके लिए जरूरी हो जाता है क्योंकि उसका रात का आराम उस लड़की की नजर हो जाता है जिसे वह दुनिया में सब से ज्यादा चाहता है।

नात्सीवाद की जीत होगी या हार? 'ओह, श्.....! तुम क्या यह सोचते हो कि यह सर्कस कयामत के दिन तक इसी तरह चलता रहेगा?'

अपनी गिनती वह उन लोगों में नहीं करता। यही उसकी सब से दिलचस्प बात है। इससे भी बड़ी बात यह है कि वह उन लोगों का होना नहीं चाहता और न है। अगर तुम किसी दूसरी जगह कोई गुप्त चिट्ठी भेजना चाहो तो उसे फ्लिंक के सिपुर्द कर दो। अगर तुम बाहर किसी को कुछ कहलाना चाहो, तो फ्लिंक तुम्हारा संदेसा बाहर ले जायगा। अगर तुम्हें किसी से बात करने की जरूरत हो जिसमें तुम उसे कायल कर सको कि वह बात ठीक नहीं है और इस तरह कुछ और लोगों की जानें बचा सको, तो फ्लिंक तुम्हें उसकी कोठरी में ले जायगा और बाहर खड़ा होकर पहरा देगा—अन्दर ही अन्दर फूल कर कुप्पा, वैसे ही जैसे शहर का छोकरा पुलिसवाले को बुत्ता देकर। अकसर उसे समझाना पड़ता है कि जरा होशियारी से काम ले—खतरे के बीच उसे खतरा कुछ बहुत मालूम नहीं होता। वह लोगों के संग जो भलाई करता है उसका असली महत्व क्या है, उसकी उसे जरा भी चेतना नहीं है। अपनी जान से जितना बन पड़ता है उतना कर देने से स्वयं उसके मन को शान्ति मिलती है, बस इतना है। लेकिन यह चीज उसके स्वाभाविक विकास में बाधक है।

अभी तक उसके व्यक्तित्व का निर्माण नहीं हुआ है, मगर हो रहा है।

'कोलिन'

मार्शल लॉ के दिनों की एक शाम की बात है। एस. एस. की वर्दी पहने जिस संतरी ने मुझे मेरी कोठरी में दाखिल किया, उसने बहुत ऊपरी ऊपरी ढंग से मेरे जेबों की तलाशी ली।

'क्या हालचाल हैं?' उसने धीरे से पूछा।

'मालूम नहीं। सुना है कल मुझे गोली मार दी जायेगी।'

'सुनकर डर लगा?'

'मैं पहले ही से जानता था।'

एक मिनट के लिए उसने यंत्रवत् मेरे कोट के सामनेवाले हिस्से पर हाथ दौड़ाया।

'मुमकिन है मार ही दें। मुमकिन है कल न मारें; शायद और कभी, शायद कभी नहीं। लेकिन ऐसे समय में...हर बात के लिए तैयार रहना ही ठीक है.....'

फिर वह चुप हो गया।

'लेकिन अगर ऐसा ही हो, तो क्या तुम किसी को कुछ कहलाना चाहोगे? या.....कुछ लिखना चाहोगे? तत्काल प्रकाशन के लिए नहीं, समझे न, भविष्य के लिए। तुम कैसे यहाँ आये, क्या किसी ने तुम्हारे साथ दग़ा की, कुछ लोगों का आचरण कैसा रहा। वही सब बातें, जो तुम जानते हो तुम्हारे सङ्ग खत्म नहीं हो जायेंगी।'

क्या मैं कुछ लिखना चाहूँगा? गोया उस चाह से ही मेरा सारा जिस्म सुलग न रहा हो!

एक मिनट में वह काग़ज़ और पेंसिल ले आया, मैंने खूब सावधानी

से उसे छिपा दिया जिसमें किसी भी मुआइने में वह उन लोगों के हाथ में न पड़े।

मगर बहुत दिन तक मैं उन्हें हाथ नहीं लगा सका।

यह इतनी बड़ी बात थी कि मुझे यक़ीन नहीं होता था। अपनी गिरफ्तारी के कुछ हफ्ते बाद इस अँधेरी इमारत में एक इन्सान से मुलाकात होना कैसी अद्भुत बात थी, और वह इन्सान उन लोगों की वर्दी में जो सिर्फ डपटना और मार पीट करना जानते हैं—उनकी वर्दी में एक इंसान। एक ऐसा दोस्त पाना जो तुम्हारी तरफ मदद का हाथ बढ़ाता है और इस बात में तुम्हारी मदद करता है कि तुम कम से कम एक पल के लिए उन लोगों से बात कर सको जो इस प्रलय के बाद भी जीते रहेंगे—और उन लोगों से भी जो नहीं रहेंगे। और ठीक उसी पल में जब कि वे गोली से उड़ाये जानेवाले लोगों का नाम पुकार रहे हैं, उन लोगों की संगत में जो खून पीकर मतवाले हो रहे हैं और उन लोगों के बीच जिनके गले डर के मारे रुँधे हुए हैं, जो अगर चिल्लाना चाहें भी तो नहीं चिल्ला सकते। ऐसी हालत में एक मित्र पाना—नहीं, यह सचमुच ऐसी बात है कि सहसा विश्वास नहीं होता। अगर यह बात सच नहीं है तो कम से कम चेतावनी तो है ही। लेकिन उस आदमी में कितना जबर्दस्त मनोबल होगा जो मेरी जैसी स्थिति में पड़े हुए आदमी की तरफ अपने आप मदद का हाथ बढ़ाता है! सचमुच कैसा असीम साहस!

कोई एक महीना गुजर गया। मार्शल लॉ उठा लिया गया था, डाँटना-डपटना खत्म हो गया था, उन सबसे भयानक घड़ियों की अब केवल स्मृतियाँ रह गयी थीं। शाम का वक्त था और मैं जब यातनाएँ भुगतकर लौटा तो उसी संतरी ने मुझे कोठरी के अन्दर किया।

'देखता हूँ कि तुम सह ले गये। सब ठीक था?' उसके चेहरे से जाहिर था कि उसे बड़ी फिक्र है।

मैं समझ गया कि उसका क्या मतलब है। उस सवाल ने मेरे दिल को बहुत गहराई से छुआ। हर बात से ज्यादा उस सवाल ने मुझे इस बात का पूरा यक़ीन दिला दिया कि वह सच्चा और ईमानदार है, कोई धोखा नहीं खेल रहा है। सिर्फ वही आदमी यह सवाल कर सकता था जिसे उसका नैतिक अधिकार हो। उस क्षण से मैं उसका विश्वास करने लगा; वह अब हम में से एक था।

पहली नजर में तो वह एक अजीब सा आदमी था। गलियारों में वह अकेला घूमता—खामोश, मुँह बन्द, चौकन्ना और चारों तरफ निगाह रखनेवाला। किसी ने कभी उसे डाँटते-डपटते नहीं सुना। और न मारते-पीटते देखा।

'फिर जब स्मेटांज़ इधर देखे तो तुम मुझे एक घूँसा मारना, मेरे कहने से।' दूसरी कोठरी में मेरे पड़ोसी उससे दरख्वास्त कर रहे थे कि कम से कम अपनी खातिर वह जरा और मुस्तैदी दिखलाये!

'उसकी जरूरत नहीं है,' उसने सिर हिलाते हुए कहा।

वह चेक छोड़ और कोई जबान न बोलता। उसकी सारी वज़ा-क़ता, चाल-ढाल, हर चीज से यह बात साफ थी कि वह बाकी सबसे भिन्न है, लेकिन अगर कहीं कोई तुमसे पूछ बैठता कि वह कौन सी बात है तो बतलाना तुम्हारे लिए कठिन हो जाता। वे लोग भी इस बात को महसूस करते थे लेकिन उसे पकड़ नहीं पाते थे।

जहाँ कहीं भी उसकी जरूरत होती है पता नहीं वह कैसे पहुँच जाता है। जहाँ लोगों में बेचैनी और घबराहट होती है वहाँ वह उन्हें शांत करता है। जहाँ लोग सिर लटकाकर बैठते हैं वहाँ वह उनकी हिम्मत बढ़ाता है। जब बाहर बहुत सी जानें खतरे में होती हैं और उन लोगों से हमारा संबंध टूट गया रहता है जो उनकी जान बचा सकते हैं, तो वह नये संपर्क पैदा करता है। बहुत छोटी छोटी, तफसील की, बातों में वह अपने

आपको नहीं उलझाता, वह बहुत कायदे से और बड़े पैमाने पर काम करता है।

यह कोई नयी बात नहीं है। शुरू से, जब से उसने नात्सियों की नौकरी की, तभी से यह बात उसके दिमाग़ में थी।

आडोल्फ़ कोलिस्की, चेक संतरी जिसकी हम बात कर रहे हैं, मोरेविया के एक पुराने चेक परिवार का है। ह्राडेक क्रालोव और फिर पांक्राट्स में चेक कैदियों पर पहरा रखने के काम के लिए जब उसने दरखास्त दी थी तो मसलहतन् उसमें अपने को जर्मन बतलाया था। जो लोग कि उसे जानते थे, उनके दिमाग में यक़ीनी उसके बारे में कड़वे विचार होंगे। चार साल बाद जर्मन जेल सुपरिन्टेन्डेन्ट कोलिस्की के मुँह के सामने घूँसा ले जाते हुए उसे धमकाता है :

'मैं वह चेकपना तुम्हारे अन्दर से निकाल दूँगा!'

अब नहीं, ज़रा देर हो गयी! सुपरिन्टेन्डेन्ट का खयाल गलत है। कोलिस्की का चेकपना निकालने भर से काम नहीं चलेगा, उसकी इंसानियत को ही पीस डालना पड़ेगा, तब शायद बात बने। वह एक जवाँमर्द है जिसने खूब समझ-बूझकर, अपनी मर्ज़ी से दुश्मन की नौकरी की जिसमें उसके घर में घुस कर वह उससे लड़ सके और दूसरों को लड़ने में मदद दे सके। हर वक्त के खतरे ने अगर उसके साथ कुछ किया है तो यही कि उसने उसके इरादे को और फौलाद बना दिया है।

हमारा

अगर ११ फरवरी १९४३ को सवेरे नाश्ते में उस काली सी चाय की जगह जो पता नहीं काहे की बनी थी उन्होंने हमें कोको दिया होता तो भी हमें इस चमत्कार का पता न चलता। क्योंकि उस सुबह एक दूसरा चमत्कार हुआ—एक चेक पुलिसमैन की वर्दी की झलक हमारी कोठरी के पास दिखायी दी।

सिर्फ झलक। हमें काले पतलून और लांगबूट का सिर्फ एक पैर दिखायी दिया। एक गहरी नीली आस्तीन का हाथ ताले के पास पहुँचा, कोठरी के दरवाजे को खोला फिर बन्द कर दिया, फिर गायब हो गया। यह सब इतनी तेज़ी से हुआ कि पन्द्रह मिनट बाद हमें इस बात का यकीन हो जाता कि ऐसी कोई चीज हुई ही नहीं।

पांक्राट्स में एक चेक पुलिसमैन! इस एक बात से क्या क्या नतीजे नहीं निकाले जा सकते :

दो घण्टे के अन्दर ही अन्दर हम नतीजे निकालने भी लगे थे। कोठरी का दरवाजा फिर खुला और एक चेक पुलिस की टोपी ने अन्दर झाँका और हमारे अचम्भे पर मुस्कराते हुए ओंठों ने कहा—

'छुट्टी!'

अब भूल की कोई गुंजाइश न थी। गलियारों में एस. एस. के संतरियों की खाकी-हरी वर्दी के बीच बीच कई काले धब्बे भी दिखायी देने लगे थे जो हमें बहुत जानदार चमकदार लगे। वे चेक पुलिस अफसर थे।

हमारे लिए इसकी क्या अहमियत हो सकती है! ये कैसे होंगे! कैसे भी हों, उनका यहाँ होना ही बहुत साफ जबान में बहुत सी बातें कहता है। उस हुकूमत का अन्त कितने पास होगा जिसे अब अपनी सबसे नाजुक मशीन में, अपने सबसे महत्वपूर्ण संगठन में जिस पर कि वह टिकी हुई है, उसी राष्ट्र के लोगों को लेना पड़ता है जिन्हें कि वह दबाकर रखना चाहती है! लड़ाई के मोर्चे पर उसे आदमियों की कितनी सख्त कमी होगी जो वह कुछ थोड़े से सैनिकों की लालच में अपनी पुलिस शक्ति कम करने को तैयार है! तुम्हारा क्या खयाल है, ऐसी हालत में यह हुकूमत कितने दिन चलेगी!

इसमें तो खैर कोई शक नहीं कि यहाँ पर वे सिर्फ चुने हुए आदमियों को भेजेंगे जो जर्मन संतरियों से भी गये-गुज़रे साबित होंगे, जिनकी चेत-

नता नष्ट हो गयी होगी और जीत में जिनका विश्वास खो गया होगा। लेकिन यह बात, सिर्फ यह बात कि एस. एस. की जगह चेक पुलिस ले रही है, इस बात का अकाट्य प्रमाण है कि अन्त अब पास है।

इस बात को हमने इस तरह से समझा।

हम लोगों ने जितना समझा था उससे कहीं ज्यादा चेक पुलिसमैन निकले। असलियत यह थी कि उस मशीन के पास अब चुनने-चुनाने की गुञ्जाइश ही न रह गयी थी, अब उसके पास उतने आदमी ही न थे जितनों की उसे अपनी हिफ़ाज़त के लिए जरूरत थी।

पांक्राट्स में पहली चेक वर्दी हमने ११ फरवरी को देखी।

दूसरे दिन हम लोग उन लोगों से परिचित होने लगे।

एक आता, कोठरी के अन्दर झांकता, चौखट पर खड़ा अस्थिरता-पूर्वक पैर आगे पीछे करता। फिर हमारी नजरों का जवाब यकायक बड़ी हिम्मत से देता वैसे ही जैसे बैयाँ बैयाँ चलनेवाला छोटा सा बच्चा एक बार किचकिचाकर जोर लगाये और उछल पड़े।

'कहिए, क्या हालचाल है जनाब ?'

हम लोग मुस्कराहट से जवाब देते, फिर वह भी जवाब में मुस्कराता। फिर फूट पड़ता :

'हम लोगों से खफा मत होइएगा। विश्वास कीजिए, हमें वहाँ उस चबूतरे पर चहलकदमी करना मंजूर, यहाँ आप लोगों पर पहरेदारी करना मंजूर नहीं। हमें यह काम करना पड़ा, लेकिन शायद—शायद इसका कुछ अच्छा नतीजा निकले.....'

वह बड़ा खुश होता जब हम लोग उसे बताते कि हम लोग उसके बारे में और उन लोगों के पांक्राट्स आने की बाबत क्या सोचते हैं। इस तरह हम लोग पहले क्षण से ही मित्र हो गये। उसका नाम वितेक था, सीधा-सा नेकदिल लड़का था—वह पहला चेक सिपाही था जिसकी

झलक हम लोगों ने अपनी कोठरी के दरवाजे के पास उस पहली सुबह देखी थी।

दूसरे का नाम तुमा था, वह पुराने ढंग का खास चेक सिपाही था। काफी खुरदुरे किस्म का और बड़ा शोर-गुल मचानेवाला लेकिन मूलतः अच्छा, नेक—वही किस्म जिसे हम लोग चेक प्रजातंत्र की जेल में 'पॉप' कहा करते थे। उसे अपनी स्थिति कुछ खास न जान पड़ती। इसके विपरीत वह बड़े आराम और बेफिक्री से रहता और शान्ति स्थापित करता। किसी कोठरी में वह किसी को रोटी पकड़ा देता या सिगरेट, राजनीति छोड़ कर किसी भी चीज के बारे में किसी के भी संग बैठ कर गप्प ठोंकता और वक्त गुजारता। यह सब वह बड़े स्वाभाविक ढंग से करता, बिना इस बात को छिपाये कि उसकी नजर में यही संतरी का काम है। इस बात के लिए पहली डाँट जो उसे पड़ी उससे वह और चौकन्ना तो हो गया, मगर बदला नहीं। वह अब भी पहले का वही पॉप था। उससे बड़ी कोई बात पूछने की हिम्मत न पड़ती लेकिन अगर वह आस-पास हो तो आसानी मालूम होती और साँस लेने में कठिनाई न होती।

तीसरा चेक पुलिसमैन गलियारे में चहलकदमी करता, तेवरियाँ चढ़ाये, खामोश, कुछ न देखता हुआ। उसके पास पहुँचने की जो कोशिशें होतीं उन पर वह कोई ध्यान न देता।

एक हफ्ते तक उसे गौर से देखने के बाद डैडी ने कहा, 'उसे चुनने से उन लोगों को कुछ खास फायदा नहीं हुआ। वह तो सब से असफल निकला।'

'या शायद सब से तेज़,' मैंने कहा, यों ही, बहस के लिए क्योंकि छोटी छोटी बातों का विरोध करना ही इस कोठरी की जिन्दगी का मिर्च-मसाला है।

दो हफ्ते बाद मुझे लगा कि उस चुप्पे आदमी ने कायदे के थोड़ा खिलाफ मुझे हलके से आँख मारी। मैंने भी उसी इशारे से उसे जवाब

दिया, और जेल में उस इशारे के एक हजार मतलब हो सकते हैं। लेकिन कुछ हुआ-गया नहीं। मुझे शायद धोखा हुआ।

खैर एक महीने बाद सारी बात साफ हो गयी। और यह चीज हुई बिलकुल वैसे ही जैसे रेशम का कोया फोड़कर तितली निकल आयी। त्योरियाँ चढ़ाये हुए वह कोया फूटा और उसमें से एक जीवित प्राणी निकला आया मगर वह तितली नहीं आदमी था।

'तुम स्मारक तैयार कर रहे हो' डैडी इसमें के कई रेखाचित्रों के बारे में कहते।

मेरी बहुत इच्छा है कि मैं वैसा कर सकूँ जिसमें मैं उन साथियों की स्मृति जीवित रख सकूँ जो यहाँ पर और बाहर सचाई और बहादुरी के साथ लड़े, और खेत रहे।

लेकिन मैं उन जीवित लोगों का भी स्मारक बनाना चाहता हूँ जिन्होंने मुशकिल से मुशकिल हालतों में ऐसी सचाई और बहादुरी से हमारी मदद की, जो किसी से भी कम नहीं है। मैं पांक्राट्स के भुतहे गलियारों में से कोलिस्की और इस चेक पुलिसमैन जैसे व्यक्तित्वों को जीवन के प्रकाश में लाना चाहता हूँ। इसलिए नहीं कि इससे उनका गौरव बढ़ेगा, बल्कि दूसरों के सामने उदाहरणस्वरूप क्योंकि मनुष्य का कर्तव्य इस लड़ाई के बाद खत्म नहीं हो जायगा और आदमी जब तक सही मानों में इन्सान नहीं बन जाते तब तक इंसान बनना हिम्मत और साहस की माँग करेगा।

पुलिसमैन यारोस्लाव होरा की कहानी बहुत छोटी-सी है। लेकिन उसमें एक पूर्ण मनुष्य के जीवन की कहानी मिल जाती है।

राडनिको देश के एक सुदूर कोने में एक खूबसूरत-सा मगर गरीब और उजाड़-सा इलाका है। उसका बाप शीशा बनाने का काम करता था, और उसका जीवन कठिन था। मुल्क में जब काम हो तो ऊब और थकान; और जब बेकारी घर बनाये तो गरीबी—यही उसकी जिन्दगी थी।

इसके दो ही नतीजे हो सकते थे : आदमी या तो घुटने टेक देता या एक बेहतर दुनिया के स्वप्न में गर्व से सिर ऊँचा करता। एक बेहतर दुनिया में विश्वास करने और उसके लिए लड़ने की खातिर उसका बाप कम्युनिस्ट हो गया। लड़कपन में यादों मई दिवस की परेड में साइकिलवाली टुकड़ी के संग पहियों में लाल फीता लपेटे घूमता। वह लाल फीता उसने वहीं छोड़ नहीं दिया बल्कि अपने दिल के भीतर कहीं रख लिया जब वह खराद-विभाग में काम करने गया, जो कि उसकी पहली नौकरी थी, स्कोडा के कारखाने में।

बेकारी का संकट आया, फिर फौजी नौकरी, फिर पुलिस की नौकरी का मौका। पता नहीं इस बीच उसके दिलवाला वह लाल फीता क्या कर रहा था—शायद लपेटकर कहीं रख दिया गया था, शायद भूल भी चला था—मगर खोया न था। एक दिन पांक्रांट्स में उसकी ड्यूटी लगायी गयी। वह कोलिस्की की तरह स्वेच्छा से नहीं आया था, एक उद्देश्य को लेकर, उसके हर पहलू को अच्छी तरह समझ-बूझकर। लेकिन पहली ही बार जो उसने कोठरी के भीतर झांका तो उसे एक उद्देश्य की और अपने कर्तव्य की चेतना हुई। फीता जो लिपटा हुआ रक्खा था अब खुला।

पहले उसे अपनी कर्मभूमि को अच्छी तरह समझना था और उसके मुकाबले में अपनी ताकत की नापजोख करनी थी। गहरे एकाग्र चिन्तन से उसके माथे पर बल पड़ जाते, कहाँ शुरू करे कैसे शुरू करे। वह कोई पेशेवर राजनीतिज्ञ नहीं, धरती का एक सीधा सच्चा पुत्र था। और उसके पास अपने बाप का तजुर्बा था ; वह चरित्र का एक दृढ़ केन्द्र था जिसके चारों ओर उसके संकल्प रूप ग्रहण करते। जब उसने संकल्प कर लिया तो उसके नाक भौं चढ़ाये हुए रेशम के कोये को फोड़कर एक इन्सान निकल आया।

अन्दर से वह बड़ा अच्छा आदमी था, अत्यन्त स्वच्छ, भावुक, और लजीला लेकिन जवाँमर्द। जिस चीज की बाजी लगाना जरूरी हो वह

लगा देता। छोटी और बड़ी सभी चीजें जरूरी होती हैं, लिहाजा वह छोटी चीजें भी करता है और बड़ी चीजें भी। वह खामोशी से काम करता है, बिना किसी भी तरह के दिखावे के, खूब धीरे धीरे, समझ-बूझकर मगर बिना डरे। यह सब कुछ उसके लिए इतना नैसर्गिक है, उसके भीतर का आदेश। यह चीज करनी ही है तो उसके बारे में बात करके क्या होगा?

बस इतनी-सी उसकी कहानी है। यह एक व्यक्ति की पूरी कहानी है जिसे आज तक कई लोगों की जानें बचाने का श्रेय प्राप्त है। पांक्राट्स में एक आदमी ने अपना मनुष्योचित कर्तव्य पूरा किया, इसीलिए आज वे जिन्दा हैं और बाहर काम कर रहे हैं। वह निजी तौर पर उन्हें नहीं जानता और न वे ही उसे जानते हैं। और न शायद कोलिस्की को ही वे जानते हैं, लेकिन आगे चल कर उनका परिचय होगा। इन दो काम करनेवालों ने झट से एक दूसरे को पा लिया और सेवा करने के जो मौके उन्हें मिले उनका अच्छे से अच्छा उपयोग किया।

उनके उदाहरण को याद रखना। ऐसे दो आदमियों का उदाहरण जिनकी अक़्ल उनके पास थी और जिनका दिल अपनी ठीक जगह पर था, और जिन्होंने दोनों का पूरा पूरा इस्तेमाल किया।

डैड स्कोरेपा

अगर कहीं तुम्हें मौक़े से तीनों एक संग दीख जायें, तो समझ लो कि तुमने मेलजोल और भाईचारे की जीती-जागती तसवीर देख ली—एस. एस. के सन्तरी कोलिस्की की खाकी-हरी वर्दी, चेक पुलिस होरा की गहरी नीली वर्दी और जेल के ट्रस्टी डैड स्कोरेपा की हलके रङ्ग की उदास सी वर्दी। वह तीनों एक संग कम ही दिखायी पड़ते हैं—बहुत कम। और उसका सरल-सा कारण यह है कि उनके दिल सदा एक साथ रहते हैं।

जेल के क़ायदे के अनुसार गलियारों की सफाई और खाना देने

आदि के काम 'सिर्फ ऐसे कैदियों को दिये जाने चाहिए जो बहुत ही विश्वसनीय, कायदे कानून की पाबन्दी करनेवाले और दूसरे कैदियों से एकदम अलग-थलग हों।' ऐसा कायदा है—मुर्दा कायदा, बिलकुल बेजान। ऐसा कोई ट्रस्टी न हो सकता है न हुआ है। कम से कम गेस्टापो की जेलों में तो नहीं। यहाँ पर तो ट्रस्टी माध्यम हैं जिनके ज़रिये जेल का कलेक्टिव आजाद दुनिया के संस्पर्श में आता है जिसमें कि वह जी सके, और कुछ कह-सुन सके। कोई सन्देसा बीच ही में रोक लिये जाने पर या कोई गुप्त चिट्ठी समेत पकड़े जाने पर न जाने कितने ट्रस्टियो ने जान गँवायी होगी! लेकिन जेल के संघ का नियम निर्ममतापूर्वक उनके उत्तराधिकारियों से माँग करता है कि वे भी उसी जान-जोखिम काम को करें। वे चाहे इस काम को हिम्मत से करें चाहे डरकर, लेकिन संघ के लिए काम उन्हें करना जरूर पड़ता है। बस इतना है कि जो जितना डरता है उसके लिए उतना ही ज्यादा खतरा होता है, और आगे पीछे वह जरूर पकड़ा जाता है—तमाम अंडरग्राउंड काम की ही तरह यहाँ भी वही नियम लागू होता है।

यह सबसे कठिन अंडरग्राउन्ड काम है, ठीक उन लोगों के नीचे जो सारी विरोधी ताकतों को जड़ से उखाड़ फेंकने पर तुले हैं, संतरियों की निगाह-तले, उन जगहों पर रहकर जहाँ कि वे तैनात किये जायँ, उन सख्त कायदों के मातहत जिनका बनानेवाला दुश्मन है—कठिन से कठिन परिस्थिति में यह काम करना होता है।

अंडरग्राउन्ड काम के बारे में बाहर तुमने जो कुछ भी सीखा हो, वह सब यहाँ नाकाफ़ी है, लेकिन तुम्हें करना पहले के बराबर या उससे भी ज्यादा पड़ता है।

जैसे बाहर गैरकानूनी काम में उस्ताद लोग होते हैं, वैसे ही यहाँ ट्रस्टियों में होते हैं। डैड स्कोरेपा तो बहुत ही मँजे हुए खिलाड़ी हैं, देखने में एकदम शान्त और नम्र, लेकिन काम में मछली की तरह फुर्तीले। सन्तरी उसकी तारीफ करते हैं—देखो कैसे धीरे धीरे इत्मीनान से अपने

काम में लगा रहता है, कितना भरोसे का आदमी है, बस अपने काम से काम, ऐसी किसी बात से कोसों दूर जो कायदे के खिलाफ जाती हो। वे दूसरे ट्रस्टियों को उसका अनुकरण करने को कहते!

हाँ, दूसरे ट्रस्टी उसका अनुकरण करते हैं! वह सचमुच ट्रस्टियों का मुखिया है जैसा कि कैदी चाहते ही हैं। वह बाहरी दुनिया के साथ संघ का संस्पर्श कायम रखने में सबसे शक्तिशाली, साथ ही सबसे संवेदनशील माध्यम है।

वह हर कोठरी के रहनेवालों को जानता है, हर आगन्तुक को पहले क्षण से जानता है—वह क्यों यहाँ आया, उसका संपर्क किन किन लोगों से है, बाहर उसका क्रान्तिकारी आचरण कैसा था और उसके दोस्तों का कैसा था। वह हर 'केस' का गहरा अध्ययन करता है और उन्हें सुलझाने की कोशिश करता है। यह चीज जरूरी हो जाती है क्योंकि वह बाहर के लोगों को बचाना और कभी कभी उन्हें अच्छी सलाह देना चाहता है।

वह दुश्मन को भी जानता है। हर सन्तरी को गौर से परखता है, उसकी आदतें, उसकी कमजोरियाँ, उसकी ताकत की बातें, उसकी किस बात पर निगाह रखना चाहिए, उससे क्या काम लिया जा सकता है, कैसे उसे चकमा देना चाहिए, कैसे उसे भरमाना चाहिए। संतरियों की बहुत सी विशेषताएँ जिनका मैंने इस्तेमाल किया है, डैड स्कोरेपा ने मुझे बतायी थीं। वह उन सबको जानता है, उन सबकी अच्छी और ठीक ठीक परिभाषा दे सकता है। ये सब बातें उस आदमी के लिए जरूरी हैं जो आजादी से गलियारों में घूमना और अच्छी तरह अपना काम करना चाहता है।

मगर सबसे बढ़कर, स्कोरेपा अपना कर्तव्य खूब अच्छी तरह समझता है। वह एक कम्युनिस्ट है जो जानता है कि हर क्षण उसे एक कम्युनिस्ट की तरह रहना चाहिए, और ऐसी कोई जगह या वक्त नहीं है जब वह हाथ पर हाथ धरकर बैठ सके। मैं समझता हूँ कि यहाँ इस बड़े से बड़े खतरे

के बीच और सख्त से सख्त दबाव में उसे उसके योग्य सबसे अच्छी जगह मिली है। यहाँ पर उसने विकास भी किया है।

उसमें अद्‌भुत लचीलापन है; हर रोज़ हर घंटे नयी परिस्थितियाँ पैदा होती हैं जिनको हल करने के लिए नये तरीक़े निकालने पड़ते हैं। ये तरीक़े वह बहुत फ़ुर्ती से और बड़ी चालाकी से निकालता है। कभी कभी एक मिनट से भी कहीं कम वक्त मिलता है। उतने ही में वह कोठरी के दरवाजे पर दस्तक देता है, दरवाजे के छोटे से छेद में से एक अच्छी तरह तैयार किया हुआ सन्देसा सुनता है और उसे गलियारे के दूसरे सिरे पर की कोठरी में बिलकुल साफ साफ और ठीक ठीक पहुँचा देता है, उस एक क्षण में जब कि उसका संतरी नीचे जाता है और उसकी जगह पर दूसरा संतरी सीढ़ी चढ़कर ऊपर आता है, उस एक छोटे क्षण में। वह बड़ा चौकस आदमी है और कभी घबराता नहीं। जेल की सैकड़ों चिट्ठियाँ उसके हाथ से आयी गयी होंगी, लेकिन आज तक एक नहीं पकड़ी गयी, और न कभी किसी ने उस पर शक किया।

वह अपने सहज ज्ञान से जान जाता है कि कौन कठिनाई में है, किसे बाहर की परिस्थिति के बारे में चार शब्द सुनाकर हिम्मत बढ़ाने की जरूरत है। वह जानता है कि किसे वह अपनी उन खास गम्भीर वात्सल्यपूर्ण आँखों से देखकर प्रोत्साहित कर सकता है, कब निराशा को हराने के लिए ताकत की जरूरत होती है। वह जानता है कि किसे हिस्से से ज्यादा एक रोल या एक बड़ा चमचा शोरबा देना चाहिए जिसमें भूख की सज़ा के अगले दौर का सामने करने के लिए उसके शरीर में ताकत रहे। वह ये सब बातें अपने लम्बे और गहरे तजुर्बे और कोमल भावनाओं के द्वारा जान जाता है—और फिर जो जरूरी होता है वह करता है।

यह है डैड स्कोरेपा। एक सैनिक, ताकतवर और निडर। एक असल इन्सान।

मैं तुम लोगों से जो कि किसी दिन इसे पढ़ोगे कहना चाहता हूँ कि

स्कोरेपा सिर्फ एक इन्सान नहीं, बेहतरीन किस्म का ट्रस्टी है, जो उस काम को, जिसकी माँग अत्याचारी शासन उससे करता है, पीड़ितों की सेवा में बदल देता है। यहाँ पर सिर्फ एक डैड स्कोरेपा है लेकिन दूसरे इन्सानी साँचे के और लोग भी हैं जो इंकलाब को मदद पहुँचाते हैं और उतनी ही जितनी कि वह। मैं उन सबके, जो यहाँ पांक्राट्स में हैं और पेचेक बिल्डिंग में, स्केच खींचना चाहता था, लेकिन अफसोस है कि अब सिर्फ कुछ घंटे बचे हैं—जो कि बहुत थोड़ा है 'उस गाने के लिए जिसे गाने में इतना थोड़ा सा समय लगता है लेकिन जिसके पीछे जीवन का इतिहास इतना लम्बा है।'

अब सिर्फ कुछ और नामों के लिए वक्त है (बहुतों में से कुछ उदाहरण) जिन्हें याद करना चाहिए :

'रेनेक'—जोज़ेफ टेरिंग्ल बहुत सख्त, गर्म, कुर्बानियोंवाला आदमी है जो पेचेक बिल्डिंग और उसके अन्दर सङ्घर्ष के बहुत से इतिहास के सङ्ग गुँथा हुआ है वैसे ही जैसे उसका नेकदिल लंगोटिया यार, जो बेरविदू।

डाक्टर मिलोश नेडवेड, खूबसूरत और शरीफ नौजवान जिसने हमारे कैदी साथियों की रोज मदद करने की कीमत ओसवाइकिम में अपनी जिन्दगी से चुकायी।

आर्नोस्ट लारेंज़, जिसकी पत्नी इसलिए मार डाली गयी कि पति ने अपने साथियों के संग विश्वासघात करना मंजूर नहीं किया। उसने एक साल देर से मरना कबूल किया जिसमें कि वह अपने दोस्तों, नम्बर ४०० के ट्रस्टियों और उनके पूरे संघ को बचा सके।

वाशेक रेज़कू, जिसके अद्भुत उल्लास को कोई नहीं मार सका।

बन्द मुँह की, अद्भुत लगन की एनी विकोवा, जिसे मार्शल लॉ के दिनों में मार डाला गया।

स्प्रिंगर, वह चतुर, सदा मगन रहनेवाला 'लाइब्रेरियन' जो अपना जरूरी काम करने के लिए सदा रास्ता निकाल लेता था।

ब्लेक, वह कोमल शरीर का युवक.....

ये सिर्फ उदाहरण हैं, बानगियाँ।

व्यक्तित्व, बड़े या छोटे, लेकिन सदा वास्तविक चरित्र—केवल आकृतियाँ नहीं, कभी नहीं।

आठवां अध्याय

इतिहास का एक टुकड़ा

★

९ जून १९४३

मेरी कोठरी के सामने एक पेटी टँगी है। मेरी पेटी। इस बात का चिह्न कि जल्दी मुझे भेजा जायगा। कभी रात को वे मुझे राइख ले जायँगे, मुकदमा चलाने के लिए—और फिर इसी तरह। मेरी जिन्दगी के आखिरी टुकड़े में से समय आखिरी कौर काट लेता है। पांक्राट्स के चार सौ ग्यारह दिन आश्चर्यजनक तेजी से बीत गये हैं। अब और कितने दिन बाकी हैं? कैसे दिन? और कहाँ बीतेंगे वे?

जो भी हो, और कहीं शायद ही मुझे लिखने का मौका मिले। इसलिए यह मेरी आखिरी गवाही है। इतिहास का एक टुकड़ा जिसका प्रत्यक्षतः मैं ही अकेला जिन्दा गवाह हूँ।

फरवरी १९४१ में उन्होंने चेकोस्लोवाकिया की कम्युनिस्ट पार्टी की

पूरी केन्द्रीय समिति को गिरफ्तार कर लिया—और उनसे एक सीढ़ी नीचे के तमाम नेताओं को जो हम लोगों के चले जाने पर मोर्चे की सँभाल करनेवाले थे। यह कैसे हुआ कि एक ऐसा जबर्दस्त पहाड़ यों अचानक हमारे सिर पर गिर पड़ा, अभी तक इसका रहस्य पूरी तरह नहीं खुल सका है। शायद किसी दिन खुलेगा, जब गेस्टापो के कमीसार पकड़े जायेंगे और उन्हें बोलने के लिए मजबूर किया जायगा। पेचेक बिल्डिंग के एक ट्रस्टी की हैसियत से मैंने इस भेद को पाने की बहुत कोशिश की लेकिन बेकार। इसमें निश्चय ही किसी जासूस का हाथ है, और हमारी तरफ की बेहद लापरवाही तो है ही। दो साल तक सफलतापूर्वक छिपे छिपे काम करने से साथियों की चौकसी जाती रही थी। हमारा गैरकानूनी संगठन हद से ज्यादा फैल गया; नये कार्यकर्ता बराबर लिये जा रहे थे—बहुत से ऐसे भी जिन्हें रोक रखना चाहिए था जिसमें कि अगर कुछ होता तो वे पहली टोली की जगह ले सकते। सेलों का हमारा जाल इतना उलझ गया कि उस पर किसी तरह का नियंत्रण रखना असम्भव हो गया। हमारी पार्टी की केन्द्रीय समिति पर जो हमला हुआ, स्पष्ट ही, बहुत पहले से और बहुत अच्छी तरह उसकी तैयारी की गयी थी और वह हुआ ठीक उस वक्त जब दुश्मन सोवियत संघ पर हमला करने जा रहा था।

पहले मुझे नहीं मालूम था कि हममें से कितने जाल में फँस गये। पहले की योजना के अनुसार मैं इस बात की प्रतीक्षा करता रहा कि अभी लोग मुझसे संपर्क कायम करने की कोशिश करेंगे, लेकिन वह प्रतीक्षा बेकार थी। एक महीने बाद यह बात बिलकुल साफ थी कि कोई बहुत बड़ी घटना हो गयी है और मुझे सिर्फ इस बात की प्रतीक्षा करते नहीं बैठे रहना चाहिए कि बाहर का कोई आदमी मुझसे संपर्क कायम करेगा। लिहाज़ा मैंने भीतर ही संपर्कों की खोज शुरू की, और दूसरों ने भी यही खोज शुरू की।

पहला सदस्य जो मुझे मिला हॉन्ज़ा विसकोचिल था, मध्य बोहेमिया

के इलाके का अध्यक्ष। उसमें पहल करने की शक्ति बहुत थी और अभी से उसके पास 'लाल अधिकार' का प्रकाशन पुनः जल्द से जल्द चालू करने के लिए कुछ सामग्री मौजूद थी जिसमें पार्टी बिना पत्र की न हो जाय। मैंने मुख्य संपादकीय लिखा, लेकिन फिर हम इस निश्चय पर पहुँचे कि सब सामग्री जिसका बाकी हिस्सा मैंने नहीं देखा था, 'नई पत्र'—के नाम से छपे, 'लाल अधिकार' के नाम से नहीं। दूसरी पार्टियों ने भी नियमित संस्करणों की जगह ऐसे ही जब-तब छपनेवाले पत्र निकाले थे।

बाद के महीनों में कुछ छापेमार कार्रवाई हुई। हमला जबर्दस्त था सही, चोट भी जबर्दस्त थी लेकिन उससे पार्टी मर नहीं सकती थी। सैकड़ों नये काम करनेवालों ने उन कामों को उठा लिया जिन्हें नेता अधूरा छोड़कर चले गये थे, खेत रहे थे। उनके ताज़े जोश और लगन की बदौलत पार्टी के बुनियादी संगठन में कोई गड़बड़ी नहीं आने पायी और न पस्तहिम्मती या निष्क्रियता ही घर करने पायी। लेकिन सञ्चालन करनेवाली केन्द्रीय शक्ति न थी और छापेमार दलों के काम में डर इस बात का था कि ठीक उस समय जब कि ऐक्यबद्ध, दृढ़, संगठित नेतृत्व की आवश्यकता होगी, उस वक्त यह नेतृत्व न मिलेगा—उस वक्त जब कि दुश्मन सोवियत रूस पर हमला करेगा।

मैंने 'लाल अधिकार' की एक प्रति में किसी अनुभवी राजनीतिक कार्यकर्ता का हाथ देखा। उसे किसी छापेमार सेल ने प्रकाशित किया था। मुझे कहते हुए अफसोस हो रहा है कि नई पत्र का हमारा एक अंक जो निकला था वह कुछ बहुत सफल न था; लेकिन दूसरों ने उसमें इस बात का प्रमाण तो पाया कि सहयोग करने के लिए और भी कोई है। लिहाज़ा हम दोनों दल एक दूसरे से संपर्क कायम करने की कोशिश में लग गये।

यह वैसा ही था जैसे कोई किसी को एक बहुत घने जंगल में ढूँढ़े। हमें एक आवाज सुनायी देती और हम उसकी तलाश में निकल जाते।

तब ठीक आवाज बहुत धीमे से एक बिलकुल दूसरी दिशा से आती सुनायी देती। हमको जो भीषण क्षति हुई थी उससे अब पार्टी में सब लोग अत्यन्त सतर्क और खूब चौकन्ने थे कि कहीं किसी जाल में न जा फँसें। पहली केन्द्रीय समिति के दो सदस्य जो एक दूसरे को खोज रहे थे उन्हें बहुत से इम्तहान पास करने पड़े और बहुत सी रुकावटें रास्ते से अलग करनी पड़ीं—जो सब उन लोगों की लगायी हुई थीं जिन पर उन्हें विश्वास था और जिन्होंने वह चीज़ इस बात का पक्का इतमीनान करने के लिए की थी कि उनमें से कोई धोखा तो नहीं खेल रहा है। मेरे रास्ते में सबसे बड़ी अड़चन यह थी कि मैं नहीं जानता था कि मैं किसे ढूँढ़ रहा हूँ—और न वही जानता था कि केन्द्रीय समिति का कौन सदस्य उससे मिलने की कोशिश कर रहा है।

आखिकार हमें एक आदमी मिला जो हम दोनों को जानता था और हम दोनों की गारंटी ले सकता था। वह एक बहुत अच्छा सा नौजवान आदमी था, डाक्टर मिलोश नेडवेड, जो हमारा पहला संदेशवाहक बना। वह मुझे बिलकुल अकस्मात् मिल गया। जून १९४१ के दूसरे हफ्ते में मैं बीमार पड़ा और मैंने लिडा को डाक्टर नेडवेड को ढूँढ़कर बाक्सा के घर लाने के लिए कहा जहाँ कि मैं छिपा हुआ था। वह फौरन आया और हमारी बातचीत में उसने बहुत डरते डरते मुझे बतलाया कि उससे उस आदमी का पता लगाने के लिए कहा गया है जिसने मई पत्र का यह सम्पादकीय लिखा था। उसे इस बात का सपने में भी गुमान न था कि वह आदमी मैं हूँ क्योंकि उधर के तमाम लोगों को इस बात का यकीन था कि मैं पकड़ा गया और शायद खत्म कर दिया गया।

हिटलर ने २२ जून १९४१ को सोवियत रूस पर हमला किया। उसी शाम हाँज़ा विस्कोचिल और मैंने एक पर्चा निकाल कर बतलाया कि चेकोस्लोवाकिया के लिए उसका क्या मतलब है। ३० जून को आखिरकार मेरी मुलाकात उस आदमी से हुई जिसे मैं इतने दिनों से ढूँढ़ रहा

था। वह मेरे दिये हुए पते पर आया क्योंकि वह जानता था कि वह किससे मिलने जा रहा है। मैं अब तक नहीं जानता था कि वह कौन है। ग्रीष्म की रात थी, हवा एकेशिया के फूलों की खुशबू से तर—सचमुच प्रेमी-प्रेमिका के अभिसार की रात। हममें से कोई बोले, इसके पहले हमने खिड़की पर पर्दा गिरा दिया। फिर मैंने रोशनी जलायी और हम दोनों गले मिले। वह हॉन्ज़ा ज़ीका था।

फरवरी १९४१ में पूरी केन्द्रीय समिति नहीं पकड़ी गयी थी। एक अकेला सदस्य अब भी बाकी था—ज़ीका। यों तो मैं उसे बहुत दिनों से जानता था और बहुत चाहता था। लेकिन हम लोगों ने एक दूसरे को अच्छी तरह जाना अब जब संग काम शुरू किया। वह छोटा-सा, गोल-मटोल आदमी था, सदा मुसकराता रहता, बहुत अच्छा मज़ाकिया आदमी लेकिन पार्टी के काम में बड़ा दृढ़व्रती, कठोर और क्षमाहीन। जो काम उसे करना है उसके सिवा वह कुछ न जानता न जानना चाहता। अपना कर्तव्य पूरा करने के लिए उसने अपने सारे सुख-ऐश्वर्य से मुँह मोड़ लिया था। वह जनता को प्यार करता था और जनता उसे प्यार करती थी। लेकिन किसी की गलती को आँख की ओट करके उसने कभी किसी को अपना नहीं बनाया।

कुछ ही मिनटों में हम लोगों ने बातें तय कर लीं। और कुछ ही दिनों में मेरी मुलाकात, नयी केन्द्रीय समिति के एक तीसरे आदमी से हुई जिसके संपर्क में ज़ीका मई के महीने से था, हॉन्ज़ा चेर्नी। वह बहुत ही ज़ोरदार आदमी था, जनता की तरफ उसका रुख बहुत ही अच्छा था। वह स्पेन में लड़ा था, फिर युद्ध शुरू होने पर फेफड़े में घाव लिये नात्सी जर्मनी पार करके वह देश लौटा था। वह सदा एक सैनिक ही रहा—योग्य, अंडरग्राउंड काम का अच्छा तजुर्बेकार और हमेशा पहल करनेवाला।

महीनों के कठिन संघर्ष ने हमको बहुत अच्छा कामरेड बना दिया। अपने स्वभाव और अपनी विशेष शिक्षा-दीक्षा से हम एक दूसरे

के पूरक थे। ज़ीका था संगठनकर्ता, यथार्थवादी, छोटी से छोटी बात पर अड़नेवाला, इतना कि चिढ़ होती, और वह कभी लम्बी-चौड़ी बातों के जाल में न फँसता। वह हर रिपोर्ट की गहरी से गहरी छानबीन करता जब तक कि उसका पूरा महत्व उसकी समझ में न आ जाता, हर प्रस्ताव को हर संभव दिशा से जाँचता और तब दल के हर निर्णय को सहानुभूति-पूर्वक लेकिन दृढ़ता से पूरा करता।

चेर्नी के जिम्मे तोड़फोड़ और सशस्त्र विद्रोह की तैयारियों का काम था। वह फौजी भाषा में सोचता, उसकी आविष्कार बुद्धि तेज थी, वह बहुत व्यापक रूप में, बड़े पैमाने पर योजना बनाता, अनथक परिश्रम करता और नये लोगों और नये साधनों की खोज में उसे सदा सफलता मिलती।

मैं था पत्रकार, राजनीतिक आंदोलनकारी, अपनी सूँघने की शक्ति पर विश्वास करनेवाला। कभी कुछ विचित्र सी बातें कहता; संतुलन और एकता पर बेहद जोर देता।

हमने एक एक के जिम्मे ये जो काम बाँटे थे, यह असल में जिम्मेदारियाँ बाँटी थीं, काम नहीं। सदा मिलना और सलाह मशविरा करना कठिन था इसलिए स्वतन्त्र कार्य या निश्चय करने की जरूरत पड़ने पर हम सभी एक दूसरे के विभाग का काम करते और उसका उत्तरदायित्व भी अपने ऊपर लेते। फरवरी के महीने में पार्टी पर जो हमला हुआ उसने हमारे सारे संपर्क सूत्र छिन्न-भिन्न कर दिये, और उन्हें कभी पूरी तरह ठीक नहीं किया जा सका। किसी किसी क्षेत्र में संगठन आमूल नष्ट कर दिया गया था; दूसरे तैयार हुए थे लेकिन उनसे संपर्क कायम करना नामुमकिन साबित हुआ। इसके पहले कि हम उनसे कोई संबंध स्थापित कर सकते, बहुत से कारखानों के सेल, कहीं कहीं तमाम जिले और इलाके के संगठन, महीनों अलग अलग कार्य करते रहे। हम ज्यादा से ज्यादा

उम्मीद यह कर सकते थे कि हमारा केन्द्रीय मुखपत्र उन्हें मिलता है और वे उसमें बतायी हुई सामान्य नीति का पालन करते हैं।

काम करना कठिन था, जब कि हमारे पास रहने के लिए भी जगहें न थीं। अपनी पहले की जगहें हम काम में ला नहीं सकते थे क्योंकि इस बात का पूरा अंदेशा था कि दुश्मन की उस पर हमेशा कड़ी निगाह रहती होगी। पहले हमारे पास पैसा न था और बिना राशन कार्ड के अनाज मिलना मुशकिल होता और राशन कार्ड लेने जाते तो हमारा सारा भेद ही खुल जाता। इन तमाम अड़चनों का सामना हमें उस वक्त करना पड़ा जब कि तैयारी करने और नये सिरे से ढाँचा खड़ा करने का वक्त बीत चुका था, जब कि हमें आगे बढ़कर लड़ाई में बाकायदा हिस्सा लेना था क्योंकि सोवियत रूस पर हमला हो चुका था।

दुश्मन से अन्दरूनी मोर्चे पर लड़ने का काम हमारा है, कारखानों में तोड़फोड़ की छोटी-मोटी लड़ाइयाँ। केवल अपने बलबूते पर नहीं बल्कि जहाँ तक संभव हो समूचे चेक राष्ट्र की संगठित शक्ति से। १९३९ से ४१ तक के तैयारी के सालों में पार्टी छुप कर काम करती रही, सिर्फ जर्मन पुलिस से ही नहीं बल्कि चेक राष्ट्र से भी। खूनी दमन के बावजूद पार्टी को दुश्मन के खिलाफ़ अपना संगठन मजबूत और सख्त बनाना था, उसमें से त्रुटियाँ दूर करनी थीं और उसके साथ ही साथ अपने देशवालों का विश्वास भी जीतना था। इसका मतलब था उन लोगों के पास जाना जो किसी पार्टी के न थे ; जो भी आजादी के लिए लड़ने को पूरी तरह तैयार हो उससे नाता जोड़ना, समूचे देश को संघर्ष के लिए आह्वान देना और सीधे सीधे उनसे बातचीत करना जो अब भी सकुचा रहे थे।

सितंबर १९४१ के आरंभ तक हम यह तो नहीं कह सकते थे कि हमने अपना टूटा हुआ संगठन फिर से खड़ा कर लिया है लेकिन यह हम जरूर कह सकते थे कि अब हमारे पास एक मजबूत अच्छी तरह संगठित

कार्यकर्ताओं की एक टोली थी जो बड़े बड़े काम उठा सकने की क्षमता अपने में रखती थी। अब पार्टी के प्रचार आन्दोलनों की ओर लोगों का ध्यान खिचने लगा। तोड़फोड़ भी बढ़ा, सभी जगह कारखानों में हड़तालें हो रही थीं। सितंबर के अन्त में उन लोगों ने हेड्रिक को हमारे पीछे लगाया।

मार्शल लॉ का पहला दौर हमारे उत्तरोत्तर क्रियाशील होते हुए प्रतिरोध को नहीं तोड़ सका। हाँ, उसने उसकी गति को जरूर कम कर दिया और पार्टी को नये घाव लगाये। सब से गहरा धक्का प्राग जिले को और युवकों के संगठन को लगा था। हमारे और कई नेता खेत रहे, जो पार्टी के लिए इतने कीमती थे—जान क्रेचो, श्टान्ज़ल, मिलोश क्रास्नी और बहुत से और।

लेकिन यह तो हर चोट के बाद पता चलता था कि पार्टी कैसी अमर है। कोई कार्यकर्ता अगर मारा जाता तो लगने को चाहे ऐसा लगता कि कोई उसकी जगह कैसे भर सकेगा, लेकिन उसकी जगह लेने के लिए दो या तीन आ जरूर जाते। नया साल आते आते फिर हमारा एक मजबूत संगठन खड़ा हो गया। फरवरी १९४१ के संगठन की तरह व्यापक वह नहीं था, इसमें सन्देह नहीं, लेकिन तो भी दुश्मन की चुनौती कबूल करने की उसमें पूरी ताकत थी, किस्मत का फैसला करनेवाली लड़ाई की चुनौती। उस काम में हम सभी लोगों का हाथ था, लेकिन उसका मुख्य श्रेय हॉन्ज़ा ज़ीका को जाता है।

हमारे प्रकाशन-कार्य के प्रमाण कमरों में, तहखानों में, साथियों की गुप्त फाइलों में मिलेंगे, इसलिए उसके बारे में यहाँ बात करना व्यर्थ है।

हमारे अखबार बहुत बिकते थे और बहुत पढ़े जाते थे; केवल पार्टी के सदस्य ही नहीं देश भर के लोग उन्हें पढ़ते थे। वे या तो प्रेस में छापे जाते थे या साइक्लोस्टाइल पर। कई 'टेकनिकल केन्द्रों' से जो सब

एक दूसरे से गुप्त और बिलकुल अलग थे, वे काफी बड़ी संख्या में प्रकाशित होते। प्रकाशन का काम करनेवाली कोई टोली यह नहीं जानती थी कि दूसरी टोली में कौन काम करता है या वह कहाँ काम करती है। यह भी कोई नहीं जानता था कि उनके आदेश आदि और लेख कहाँ से आते हैं। लड़ाई की परिस्थिति के अनुसार जितना तेज काम करना आदमी के लिए मुमकिन था, वे उतना तेज काम करते। उदाहरण के लिए हमने कामरेड स्तालिन का २३ फरवरी १९४२ का फौजी हुक्मनामा छापा और और २४ की शाम को अपने पाठकों के हाथ में पहुँचा दिया। छापनेवाले साथियों ने बहुत अच्छा काम किया, वैसे ही जैसे डाक्टरों की टेकनिकल टुकड़ी ने और फुक्स लॉरेन्ज़ नाम की संस्था ने, जो अपना एक पर्चा निकालती थी जिसका नाम था 'दुनिया हिटलर के खिलाफ'। दूसरे पर्चों का ज्यादातर मसाला मैं खुद तैयार करता था, जिसमें दूसरे खतरे में न पड़ें। मेरे न रहने पर मेरी जगह लेनेवाला बहुत पहले ही तैयार कर लिया गया था। मेरे पकड़े जाते ही उसने फौरन काम सँभाल लिया, और अब भी कर रहा है।

काम के लिए जितना आसान से आसान ढाँचा हम खड़ा कर सकते थे वह हमने खड़ा किया, जिसमें किसी भी काम में कम से कम लोग फँसें। हमने खबरें लाने ले जाने के उस पेचीदा सिलसिले को खत्म कर दिया, जो फरवरी १९४१ में हमारी केन्द्रीय समिति को बचा भी न सका, उल्टे विश्वासघात के खतरे को जिसने और बढ़ा दिया। इससे हम सब लोग निजी तौर पर तो ज्यादा खतरे में पड़ गये, लेकिन पार्टी की मशीन अधिक सुरक्षित हो गयी। भविष्य में अगर पार्टी को कोई गहरी चोट लगी भी तो वह उसे अपंग न कर सकेगी, जैसा कि फरवरी में हुआ।

इसी लिए जब मैं पकड़ा गया तो केन्द्रीय समिति पूर्ववत् कार्य करती रही। मेरी जगह लेनेवाला आदमी मेरी जगह पर पहुँच गया और मेरे निकटतम सहयोगियों को भी अन्तर नहीं पता चला।

हॉन्ज़ा ज़ीका २७ मई १९४२ की रात को पकड़ा गया। वह भी बिलकुल अकस्मात्। वह हेड्रिक की हत्या के बाद की पहली रात थी, जब दुश्मन की सारी ताक़तें तमाम प्राग में छापे मार रही थीं। वे स्ट्रेशोविस के मकान में, जहाँ ज़ीका छुप कर रहता था, घुस गये। उसके कागज-पत्तर सब झूठे नाम से बने-बनाये अपनी जगह पर बिलकुल दुरुस्त थे और अगर उसने वह हरकत न की होती तो मुमकिन था उन्हें कुछ पता भी न चलता। लेकिन चूँकि वह उस नेक परिवार के लोगों की जान खतरे में नहीं डालना चाहता था जिन्होंने उसे शरण दी थी, चुनांचे उसने दूसरी मंजिल की एक खिड़की से कूद कर भागने की कोशिश की। वह गिरा, उसकी रीढ़ की हड्डी में सख्त चोट आयी और उसे जेल के अस्पताल ले जाया गया। अठारह दिन की तलाशी और फोटों की फाइलों के मिलान के बाद वे साबित कर सके कि वह कौन है और तब वे उसे उस मरती हुई हालत में यातनाएँ देने के लिए पेचेक बिल्डिंग ले गये। वहाँ उससे मेरी आखिरी मुलाकात हुई, जब वे लोग मुझे उसके पास ले गये। हम लोगों ने हाथ मिलाया और हवा में जैसे किरणें बिखेरता हुआ वह मुसकराया, अपनी खुली हुई, बेबाक, मुहब्बत की मुसकराहट। और कहा :

'अपनी फिक्र करना, जूलो !'

उसके मुँह से बस इतनी बात वे सुन सके। उसने एक शब्द और नहीं कहा। मुँह पर कुछ चोटें खाने के बाद वह बेहोश हो गया और दो घंटे में मर गया।

मुझे उसकी गिरफ्तारी की खबर २९ मई को लगी थी। बाहर के लोगों से हमारे संपर्क के माध्यम अच्छी तरह काम कर रहे थे। उनके जरिये हमने अपने अगले कदम, जहाँ तक सम्भव था, तय कर लिये थे। बाद में हॉन्ज़ा चेर्नी ने भी उनकी ताईद की। वह हमारा आखिरी निश्चय था जो हमने सङ्ग सङ्ग पार्टी की ओर से लिया था।

हॉन्ज़ा चेर्नी १९४२ के ग्रीष्म में पकड़ा गया। लेकिन इस बार अकस्मात् नहीं, जान पोकोर्नी द्वारा भयंकर अनुशासन-भङ्ग के कारण, जान पोकोर्नी जिसका सीधा सम्बन्ध हॉन्ज़ा से था। पोकोर्नी ने टोली के एक जिम्मेवार कार्यकर्ता की तरह आचरण नहीं किया। कई घंटे की यातनाओं के बाद—काफी कठोर यातनाएँ, इसमें सन्देह नहीं मगर उसने क्या गुलगुले पाने की उम्मीद की थी?—कई घंटे की यातनाओं के बाद वह घबरा उठा और उसने उनको उस मकान का पता बता दिया जहाँ वह चेर्नी से मिला था। वहाँ से उन्होंने हॉन्ज़ा का पता लगाना शुरू किया और कुछ दिन बाद वह गेस्टापो के हाथ आ गया।

जैसे ही वे उसे अन्दर ले आये, वे मुझे घसीट कर ले गये कि मैं उसे पहचानूँ।

'तुम इसे जानते हो?'

'नहीं, मैं नहीं जानता।'

न उसने ही माना कि वह मुझे जानता है। इसके बाद उसने किसी भी सवाल का जवाब देने से साफ इन्कार कर दिया। उसके पुराने जख्मों ने लम्बी यातना से उसकी रक्षा की। वह जल्दी ही बेहोश हो गया। वे लोग उसे दूसरी बार यातना के लिए ले जायें, इसके पहिले ही हमने उसे अच्छी तरह परिस्थिति समझा दी और उसने उसी के अनुसार कार्य किया।

वे उसके मुँह से कोई बात नहीं निकलवा सके। उन्होंने उसे बहुत दिन तक जेल में रक्खा, इस इंतजार में कि उन्हें कुछ और नयी गवाही मिले तो वे उसका मौन तोड़ें। मगर वे हॉन्ज़ा चेर्नी को तोड़ नहीं सके।

कैद ने उसमें कोई परिवर्तन नहीं किया। वह सदा साहसी तत्पर और प्रसन्न रहा—दूसरों को भविष्य की ओर इशारा करता हुआ जब कि स्वयं उसके भविष्य का इशारा सीधे मौत की तरफ था।

अप्रैल के अन्त में वे उसे अचानक पांक्राट्स से ले गये। पता नहीं कहाँ। यहाँ पर लोगों के इस तरह से अचानक ग़ायब हो जाने का मतलब बुरा होता है। मुमकिन है कि मेरा खयाल गलत हो, लेकिन मुझे अब उम्मीद नहीं है कि मैं फिर हॉन्ज़ा चेनीं को देखूँगा।

हम सदा मौत को मानकर चलते थे। हम जानते थे कि गेस्टापो के हाथ में पड़ने का मतलब अन्त है। और हमने पकड़े जाने के बाद भी उसी के अनुसार आचरण किया, अपने अन्तःकरण में भी और दूसरों के संग अपने संबंधों में भी।

स्वयं मेरे नाटक का अन्त अब पास है। मैं वह अन्त नहीं लिख सकता क्योंकि मैं अभी नहीं जानता वह क्या होगा। और अब यह नाटक नहीं है। जिन्दगी है।

असलियत की जिन्दगी में तमाशा देखनेवाले नहीं होते। तुम सब उसमें हिस्सा लेते हो। अब नाटक के अन्तिम अंक पर पर्दा उठता है। मैं तुम सब को प्यार करता था, दोस्तो। होशियार!

९ जून १९४३ } —जूलियस फूचिक

★

ख़ौफ़ की परछाइयाँ

घर का भेदी

★

[बरसात की एक इतवार की दुपहर। खाने के बाद, पति, पत्नी और लड़का। नौकरानी अन्दर आती है।]

नौकरानी : श्रीमान और श्रीमती क्लिमबिट्श जानना चाहते हैं कि आप घर पर हैं या नहीं ?

पति (तीखी आवाज में) : नहीं।

[नौकरानी बाहर जाती है।]

पत्नी : तुम्हें खुद टेलीफोन का जवाब देना चाहिए था। उन्हें मालूम है कि हम इतनी जल्दी कहीं नहीं जा सकते।

पति : क्यों नहीं जा सकते ?

पत्नी : क्योंकि बारिश हो रही है।

पति : यह कोई वजह नहीं है।

पत्नी : हम कहाँ जा सकते हैं, यह सवाल वे फ़ौरन अपने आप से पूछेंगे।

पति : पचासों जगहें हैं जहाँ हम जा सकते हैं।

पत्नी : तो फिर हम लोग जाते क्यों नहीं ?

पति : कहाँ ? यह भी तो सुनूँ ?

पत्नी : अगर बारिश न हो रही होती ।

पति : अगर बारिश न भी हो रही होती तो भी हम लोग आखिर कहाँ जाते ?

पत्नी : पहले लोगों से मेल-मुलाकात के लिए तो जा सकते थे ।

[खामोशी]

पत्नी : टेलीफ़ोन का जवाब न देकर हमने अच्छा नहीं किया । अब वह इस बात को समझ जायेंगे कि हम उनसे नहीं मिलना चाहते ।

पति : समझ जाने दो, हमारे ठेंगे से ।

पत्नी : यह अच्छा नहीं मालूम पड़ता कि हम भी ऐसे वक्त में उनसे किनारा करें जब सभी ऐसा ही कर रहे हैं ।

पति : हम उनसे किनारा तो कर नहीं रहे हैं ।

पत्नी : तो फिर उनको यहाँ आने क्यों नहीं देते ?

पति : क्योंकि इस क्लिमब्रिट्श के बच्चे से मुझे बड़ी ऊब मालूम पड़ती है ।

पत्नी : पहले तो तुम्हें उससे ऊब नहीं मालूम पड़ती थी ।

पति : पहले ! यह हर वक्त अपने 'पहले' का किस्सा छेड़कर मुझे मत तङ्ग किया करो ।

पत्नी : जो हो । इतना तय है कि पहले तुम उससे मिलने से इसी-लिए नहीं इनकार कर सकते थे कि स्कूल निरीक्षण बोर्ड ने उसके ऊपर मुकदमा दायर कर दिया है ।

पति : तो तुम्हारा कहने का मतलब है कि मैं कायर हूँ !

[खामोशी]

पति : अच्छा तो उन्हें टेलीफ़ोन करके बतला दो कि बारिश की वजह से हम लोग अभी लौट आये हैं ।

[पत्नी बैठी रहती है]

पत्नी : मैं लेम्क्स से यहाँ आने के लिए कह दूँ ?

पति : जिसमें वे यहाँ आकर हमें बतायें कि हम हवाई बेड़े में काफ़ी दिलचस्पी नहीं लेते ?

पत्नी : (लड़के से) क्लॉज़स हेनरी, खुदा के वास्ते रेडियो बंद करो।

[लड़का अखबार देखने लग जाता है]

पति : कितनी मुसीबत की बात है कि आज पानी बरस रहा है। लेकिन ऐसे मुल्क में रहा भी तो नहीं जा सकता, जिसमें पानी बरसना एक मुसीबत की बात हो।

पत्नी : इस तरह की बातें बकना अक़्लमन्दी है ?

पति : अपने घर की चहारदीवारी में मैं जो चाहे कह सकता हूँ। अपने ही घर में मैं किसी को अपना मुँह नहीं बन्द करने दे सकता...

[नौकरानी क़हवा लेकर अन्दर आती है। जब
तक वह कमरे में है, ख़ामोशी
छायी रहती है।]

पति : क्या हमारे लिए ऐसी नौकरानी रखना ज़रूरी है, जिसका बाप ब्लॉक वार्डेन हो ?

पत्नी : मेरा खयाल है हम लोग इस बात पर काफी बहस कर चुके हैं। आखिरी जो बात हमने कही थी वह यह थी कि ऐसी नौकरानी रखने के फायदे भी हैं।

पत्नी : अपनी माँ से मैं जो कुछ कहती हूँ...

[नौकरानी कहवा लिये हुए फिर अन्दर आती है]

पत्नी : सब चीजें यहीं छोड़ दो, एरना। मैं सब ठीक कर लूँगी। तुम जा सकती हो।

नौकरानी : धन्यवाद, श्रीमतीजी ! (जाती है)

लड़का (अख़बार पर से आँख उठाते हुए) : पापा, क्या तमाम पादरी ऐसा ही करते हैं ?

पति : क्या ?

लड़का : यही जो यहाँ लिखा है ।

पति : तुम पढ़ क्या रहे हो आखिर ?

[वह उसके हाथ से अख़बार छीन लेता है ।]

लड़का : हमारे दल-नायक ने हमसे कहा है कि हमें अखबार की सारी बातें जाननी चाहिए ।

पति : तुम्हारे दल-नायक का कहना मेरे लिए कानून नहीं है । तुम क्या पढ़ो, क्या न पढ़ो, यह मेरे तै करने की चीज है ।

पत्नी : क्लॉज़स हेनरी, ये दस फेनिंग लो और अपने लिए, जो मनमें आये, खरीद लो ।

लड़का : लेकिन पानी बरस रहा है ।

[अनिश्चय की बेचैनी से वह खिड़की के पास इधर-उधर करता रहता है ।]

पति : अगर वे पादरियों के मुकदमों की खबरें छापना बन्द नहीं करते तो मैं अखबार लेना बन्द कर दूँगा ।

पत्नी : और आखिर लोगे कौन-सा अखबार ? सभी में तो यही खबरें रहती हैं ।

पति : अगर सभी अखबारों में ऐसी गन्दगी रहती है तो मैं अखबार पढ़ना बन्द कर दूँगा । जहाँ तक यह जानने की बात है कि दुनिया में कहाँ क्या हो रहा है, मेरा कोई खास नुकसान न होगा, यह मैं जानता हूँ ।

पत्नी : इसमें तो कोई बुरी बात नहीं कि वे सफाई करते हैं ।

पति : सफाई ! यह तो सरासर राजनीति है, बस ।

पत्नी : खैर जो हो, इससे हमारा तो कुछ आता-जाता नहीं, हम तो प्रोटेस्टैंट हैं ।

पति : मगर लोगों के लिए तो यह महत्वहीन बात न होगी कि उनके दिमाग में धर्म हमेशा के लिए गन्दगियों के साथ जोड़ दिया जाय।

पत्नी : तो ऐसी हालत में आखिर उन्हें क्या करना चाहिए ?

पति : क्या करना चाहिए ! मान लो, वे एक बार अपने ही मकान की सफाई करें। ब्राउन हाउस में भी तो सब पाक-साफ नहीं हैं, जहाँ तक मैं जानता हूँ।

पत्नी : लेकिन कार्ल, इससे तो हमारे राष्ट्र के स्वास्थ्य का ही पता चलता है !

पति : स्वास्थ्य ! खूब स्वास्थ्य है यह भी। अगर यही स्वास्थ्य हो तो मैं बीमारी पसन्द करता हूँ।

पत्नी : तुम आज बहुत चिड़चिड़े हो रहे हो ? स्कूल में कुछ हुआ है क्या ?

पति : स्कूल में क्या होता ? और बराय मेहरबानी मुझे हरदम यह मत कोंचती रहा करो कि मैं चिड़चिड़ा हो रहा हूँ। क्योंकि यही कोंचना आदमी को सबसे ज्यादा चिड़चिड़ा बना देता है।

पत्नी : हमें हरदम न झगड़ते रहना चाहिए कार्ल। पहले...

पति : मैं इसी का इन्तजार कर रहा था..... पहले ! मैं नहीं चाहता कि मेरे बच्चे का दिमाग खराब किया जाय। मैं न तो पहले ही यह चाहता था, न अब चाहता हूँ।

पत्नी : लेकिन वह गया कहाँ ?

पति : मैं क्या जानूँ ?

पत्नी : तुमने उसे जाते देखा ?

पति : नहीं ?

पत्नी : समझ में नहीं आता कहाँ चला गया। (पुकारती है) क्लॉज़स हेनरी !

[लड़के को आवाज देती हुई वह कमरे के बाहर जाती है और लौट आती है।]

पत्नी : वह सचमुच चला गया।

पति : क्यों न जाता ?

पत्नी : मूसलाधार पानी बरस रहा है।

पति : लड़के के कभी-कभी बाहर चले जाने से तुम आखिर इतना घबरा क्यों जाती हो ?

पत्नी : हम लोग किस चीज के बारे में बात कर रहे थे ?

पति : उसका इससे क्या ताल्लुक ?

पत्नी : इधर तुम्हारा काबू अपने ऊपर नहीं रह गया है।

पति : मैं तुम्हें बताना चाहता हूँ कि तुम्हारा यह कहना गलत है कि अपने ऊपर मेरा काबू नहीं रह गया है। लेकिन अगर ऐसा हो भी तो इसका लड़के के चले जाने से क्या ताल्लुक ?

पत्नी : तुम अच्छी तरह जानते हो कि वे कान लगाये सुनते रहते हैं।

पति : तब ?

पत्नी : वह अगर दूसरे से यही बातें कहे ? तुम तो खुद जानते हो कि कैसी बातें वे नौजवानों के दिमाग में ठूँसते रहते हैं। उनसे हर चीज की रिपोर्ट देने को कहा जाता है। अजब बात है कि वह इतने चुपके से खिसक गया।

पति : क्या ?

पत्नी : तुमने उसे बाहर जाते नहीं देखा ?

पति : काफी देर तक तो वह खिड़की के पास बेचैनी से टहल रहा था।

पत्नी : मैं जानना चाहती हूँ कि उसने हम लोगों की कितनी बातें सुनीं ?

पति : मगर वह यह तो जानता ही है कि रिपोर्ट होने पर लोगों से कैसा सलूक किया जाता है।

पत्नी : तुम्हें उस लड़के का किस्सा नहीं मालूम जिसके बारे में शुल्क्स ने हम लोगों को बताया था ? सुना जाता है कि उसका बाप अब भी कैंप में है। काश कि हम जानते वह कब गया।

पति : यह सब बेकार की बात है।

[वह दूसरे कमरे में दौड़कर लड़के को पुकारता है।]

पत्नी : मैं तो सोच भी नहीं सकती कि वह बगैर किसी से कुछ कहे यों चला भी जा सकता है। वैसा लड़का नहीं है वह।

पति : मुमकिन है वह अपने स्कूल के किसी दोस्त से मिलने गया हो ?

पत्नी : उस सूरत में वह मुमरमान के यहाँ ही हो सकता है। मैं टेलीफोन करती हूँ।

[टेलीफोन करती है]

पति : मेरी समझ में हम लोग नाहक ही इतने डरे हुए हैं।

पत्नी : (टेलीफोन पर) मैं हूँ, फ्राउ फुर्क। आप अच्छी तो हैं फ्राउ मुमरमान ? क्लॉज़स हेनरी आपके यहाँ तो नहीं है ? नहीं ? मालूम नहीं कहाँ चला गया वह लड़का। आप मुझे यह बतला सकती हैं फ्राउ मुमरमान कि हिटलर यूथ की मीटिंगों का कमरा इतवार को तीसरे पहर खुला रहता है या बन्द ? हाँ ? बहुत शुक्रिया। वहाँ पता लगाने के लिए मैं उन्हें फोन करूँगी।

[वह टेलीफोन रख देती है। दोनों खामोश बैठे रहते हैं]

पति : उसने सुन भी क्या लिया होगा, आखिर ?

पत्नी : क्या तुमने अखबार के बारे में बात की थी। ब्राउन हाउस के बारे में तुम्हें वह बात न कहनी चाहिए थी। राष्ट्रीय चीजों के खिलाफ वह कुछ नहीं सुन सकता।

पति : ब्राउन हाउस के बारे में तुम्हारी समझ में मैंने क्या कहा ?

पत्नी : तुम भूल गये होगे। यही कि वह जगह ऐसी नहीं है जहाँ हर चीज पाक-साफ हो।

पति : तो फिर इसे कोई आलोचना थोड़े ही कह सकता है। मैंने 'सब चीज पाक साफ नहीं है' नहीं कहा बल्कि संशोधित करके मैंने कहा 'सब चीज एकदम पाक साफ नहीं है।' दोनों में अन्तर है। और खासा बड़ा अन्तर है। वह एक सस्ती सी, चलती हुई बात है। बोलने का लहजा कह लो। इसका मतलब तो सिर्फ यह है कि वहाँ भी कुछ चीजें ऐसी हैं जो हमेशा और हर हालत में ऐसी नहीं होतीं जैसी कि फ्यूरर उन्हें देखना चाहता है। साथ ही मैंने जान-बूझकर इस बात पर जोर दिया कि मैंने जो बात कही है वह एक सन्देह से ज्यादा कुछ नहीं है। इसी बात पर जोर देने के लिए मैंने, जैसा कि मुझे अच्छी तरह याद है, कहा कि मुझे लगता है कि उस जगह पर सभी चीजें एकदम पाक-साफ नहीं हैं। 'एकदम' शब्द का इस्तेमाल अपनी बात का वज़न सँभालने के लिए ही मैंने किया था। 'ऐसा लगता है' न कि 'ऐसा है'। मैं यह कहने की स्थिति में नहीं हूँ कि उस जगह पर ऐसी कोई खास चीज है जो कि पाक-साफ नहीं है। इसका तो कोई सबूत नहीं है। इंसान की कमजोरियाँ होती हैं, इससे ज्यादा तो मैंने कुछ कहा नहीं और सो भी ज्यादा से ज्यादा मुलायम ढंग से, बहुत अगर मगर के साथ। और मैं ही क्यों एक बार खुद फ्यूरर ने इस विषय पर अपनी टीका को मुझसे कहीं ज्यादा पैने तरीके पर सबके सामने पेश किया था।

पत्नी : मैं तुम्हें नहीं समझ पाती। तुम्हें मुझसे तो इस तरह की बात करने की कोई जरूरत नहीं है।

पति : काश कि न होती! मुझे इस बात का जरा भी इत्मीनान नहीं है कि तुम खुद बहस की गरमी में घर की चहारदीवारी के अन्दर कही गयी हम लोगों की आपस की बातों को हर ऐरे ग़ैरे नत्थू खैरे से नहीं कहती डोलतीं। मेरी बात को गलत न समझना! मेरा कहने का यह जरा भी मतलब नहीं है कि तुम अपने पति के खिलाफ छिछोरी शिकायतें और

बदगुमानियाँ फैलाती हो, उसी तरह जैसे कि मैं एक पल के लिए इस बात को नहीं मान सकता कि हमारा लड़का अपने बाप के ही खिलाफ किसी से कुछ कहेगा। लेकिन दुर्भाग्य की बात तो यह है कि बुरा काम समझकर भी किया जा सकता है और नासमझी में भी।

पत्नी : अब बन्द करो तुम यह सब खुराफात! दूसरे की परवाह छोड़कर अब तुम्हें खुद अपनी जबान पर काबू रखना चाहिए। घंटों से यही याद करते करते मेरा माथा फटा जाता है कि तुमने हिटलरी जर्मनी में न रह सकनेवाली बात ब्राउन हाउस की चर्चा के पहले कही या बाद में?

पति : मैंने ऐसी कोई बात कही ही नहीं!

पत्नी : तुम तो मुझसे इस तरह बात कर रहे हो जैसे मैं ही पुलिस हूँ। अगर मैं यों परेशान हो रही हूँ तो सिर्फ यह याद करने के लिए कि आखिर लड़के ने हम लोगों को क्या क्या कहते सुना।

पति : 'हिटलरी जर्मनी' शब्द तो मैं जानता तक नहीं।

पत्नी : और तुमने ब्लॉक वार्डेन को जो गालियाँ सुनायीं और यह कहा कि अखबारों में तमाम झूठ भरा होता है और अभी अभी हवाई हिफाजत के बारे में जो तुमने अपनी राय जाहिर की, वह सब भूल गये? ठीक तो है, वह लड़का एक भी बात ऐसी नहीं सुनता जिसमें किसी न किसी चीज को बुरा भला न कहा गया हो! ऐसी बातें सुनने से किसी भी नौजवान दिमाग को नुकसान छोड़ फायदा थोड़े ही पहुँच सकता है और जब कि फ्यूरर बार-बार इस बात पर जोर दे रहा हो कि जर्मनी के नौजवान ही जर्मनी के भविष्य हैं। यह तो ठीक है कि हमारा लड़का ऐसा नहीं है कि भागा-भागा जाय और लोगों से रिपोर्ट करे। इस बात का खयाल करने से मेरा कलेजा मुँह को आता है।

पति : और जो हो, बदले की भावना उसमें है।

पत्नी : पर आखिरकार वह किस चीज का बदला लेना चाहता है ?

पति : कौन जाने। कुछ न कुछ रहता ही है हमेशा। शायद इसी लिए कि मैंने उससे उसका मेंढक छीन लिया था।

पत्नी : लेकिन वह तो एक हफ्ते की बात हो गयी।

पति : मगर वह ऐसी चीजें भूलता नहीं।

पत्नी : तुमने मेंढक उससे नाहक क्यों छीन लिया था ?

पति : क्योंकि वह उसके लिए मक्खियाँ तो पकड़ता न था, उसे भूखों मार रहा था।

पत्नी : पर उसे और भी तो कितना काम करना रहता है।

पति : इसकी जिम्मेदारी क्या मेंढक के ऊपर है ?

पत्नी : पर इसके बारे में तो उसने फिर कुछ कहा नहीं और मैंने अभी उसे दस फेनिंग दिये। उसे अपनी जरूरत की सब चीजें मिल जाती हैं।

पति : मिल तो जाती हैं, पर वह घूँस है।

पत्नी : क्या मतलब ?

पति : कुछ भी, मगर हद हो गयी ! हे परमेश्वर ! कैसे वह किसी से इस बात की उम्मीद रखते हैं कि वह नौजवानों को पढ़ाये-लिखाये आदमी बनाये। मुझे तो नौजवानों से डर लगता है।

पत्नी : पर तुम्हारे खिलाफ कोई शिकायत तो है नहीं।

पति : शिकायत हर आदमी के खिलाफ है, हर आदमी पर शक किया जाता है। यह शक कि 'मुझपर शक किया जाता है' हड्डियाँ सर्द कर देने लिए काफी है।

पत्नी : लेकिन यह तो सभी को मानना होगा कि एक जरा से बच्चे की गवाही एतबार के काबिल नहीं होती। वह तो अपनी ही बात का मतलब ठीक से नहीं समझ पाता।

पति : यह तो तुम्हारा खयाल है न? लेकिन कोई बात साबित करने के लिए भला गवाही की जरूरत उन्हें कब से पड़ने लगी?

पत्नी : अपनी बातों का और कोई मतलब हम लोग नहीं सोच सकते? क्या यह नहीं हो सकता कि उसने तुम्हारी बात को बिल्कुल गलत समझा हो। मेरी बात समझ रहे हो?

पति : मैंने क्या कहा, मुझे तो यह तक याद नहीं। इस सब की वजह यही निगोड़ी बारिश है। इससे तबीयत एकदम मुरझा जाती है। और चाहे जो हो इसमें भी भला किसी को शक हो सकता है कि जर्मन राष्ट्र आज जो आध्यात्मिक उन्नति अनुभव कर रहा है, मै उसके मूल्य को कम करने वाली बात कह ही नहीं सकता। मैंने तो सन् ३२ में ही भविष्य-वाणी कर दी थी।

पत्नी : कार्ल, उसकी चर्चा का अब समय नहीं है। हमें अपनी कहानी फौरन बना डालनी चाहिए, इसी दम। एक मिनट भी खोने का समय अब नहीं है।

पति : क्लॉजस हेनरी ऐसा कर सकता है, यह मानने को मेरा जी नहीं करता।

पत्नी : अच्छा तो पहली चीज है ब्राउन हाउस और वहाँ की गंदगियाँ।

पति : लेकिन गन्दगियों की तो बात भी मैं जबान पर नहीं लाया।

पत्नी : तुमने कहा कि अखबार में तमाम गन्दगियाँ भरी रहती हैं और तुम उसे लेना बन्द कर दोगे।

पति : हाँ अखबार में, ब्राउन हाउस में नहीं।

पत्नी : तुम्हारे कहने का मतलब यह भी तो हो सकता है कि तुम्हें पादरियों की गन्दगियाँ नापसंद हैं। और यह कि ये ही पादरी जिन पर आज मुकदमा चल रहा है, असलियत में ब्राउन हाउस के बारे में तरह-तरह की गलत बातें फैलाने के लिए जिम्मेदार हैं; और यह कि वह जगह बिल्कुल

ठीक हो ऐसा नहीं लगता; और यह कि उन्हें घर की सफाई अब तक कर चुकनी चाहिए थी। तुमने लड़के को रेडियो बन्द करके अखबार लेने के लिए भी तो इसी खयाल से कहा कि तुम समझते हो तीसरी राइख के नौजवानों के लिए यह जानना जरूरी है कि उनके चारों ओर तमाम दुनिया में क्या हो रहा है ?

पति : मैं इस सबसे कुछ काम न बनेगा।

पत्नी : कार्ल, तुम्हें इस वक्त हिम्मत से काम लेना चाहिए। तुम्हें मजबूत होना चाहिए, जैसा कि लीडर हमेशा...

पति : मैं न्यायालय में कैसे खड़ा हो सकूँगा जब मेरे रक्त-मांस से बना मेरा लड़का ही मेरे खिलाफ गवाही दे रहा हो ?

पत्नी : इस बात पर अब उस दृष्टिकोण से विचार न करो।

पति : क्लिमबिट्श परिवार से किसी प्रकार का सामाजिक सम्बन्ध रखकर हम लोगों ने बड़ी भूल की।

पत्नी : पर उन्हें अब तक तो कुछ हुआ नहीं है।

पति : यह तो ठीक है; मगर उनके खिलाफ जाँच-पड़ताल तो हो रही है।

पत्नी : अगर वे तमाम लोग जिनके खिलाफ कभी न कभी जाँच-पड़ताल हो चुकी है, निराश हो जायँ.....।

पति : तुम्हारा क्या खयाल है : क्या वाडेंन हम लोगों पर शक करता है ?

पत्नी : यानी अगर कोई उससे हमारे बारे में पूछताछ करने आये ? उसके जन्मदिन पर हम लोगों ने उसे सिगार का एक बाक्स दिया था और नये साल की खुशी में हमने जो रकम उसे भेंट की थी, वह भी खासी थी।

पति : हमारे पड़ोसी गॉफ़ परिवार ने उसे पन्द्रह मार्क दिये थे !

पत्नी : मगर वे इस सन् '३२ में भी फोरवॉर्ट* पढ़ते हैं और मई १९३३ में उन्होंने अपने मकान पर एक काला-सफेद-लाल झंडा टाँगा था।

[टेलीफोन की घंटी बजती है]

पति : फोन !

पत्नी : मैं ले लूँ ?

पति : तुम्हीं जानो !

पत्नी : कह सकते हो फोन करनेवाला कौन है !

पति : दूसरी बार घंटी बजने तक रुको।

[वे इन्तजार करते हैं। फोन की घंटी फिर नहीं बजती।]

पति : हमारी जिन्दगी भी क्या है !

पत्नी : कार्ल।

पति : तुमने मेरे लिए विभीषण जना है। वह मेज़ पर बैठा बैठा अपना शोरबा पीता है और हमारी तमाम बातें सुनता रहता है, और नोट लेता रहता है अपने जन्मदाताओं की ही बातों का। क्या खूब घर का भेदी है।

पत्नी : तुम्हें ऐसा न कहना चाहिए।

[खामोशी]

पति : तुम्हारा क्या खयाल है, हमें कुछ तैयारी करनी चाहिए ?

पत्नी : तैयारी करना ही शायद ठीक होगा।

पति : आयरन क्रास† लगा लेना अच्छा होगा शायद ?

---

* जर्मन सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी का मुख-पत्र।

† हिटलरी राज में वीरता का पदक।

पत्नी : जरूर, जरूर, कार्ल !

[वह उसे निकालता है और काँपते हाथों से लगाता है ।]

पत्नी : लेकिन स्कूल में तो तुम्हारे खिलाफ कोई शिकायत नहीं है ?

पति : मैं क्या जानूँ ? वे लड़कों को जो कुछ पढ़ाना चाहें, मैं सब पढ़ाने के लिए तैयार हूँ ; मगर आखिर वे लड़कों को पढ़ाना चाहते क्या हैं, यह भी तो मालूम हो ? काश मुझे हर चीज के बारे में पहले से यह मालूम हो जाता ! अब मैं क्या जानूँ कि वे बिस्मार्क को कैसा बताना चाहते हैं ? उस पर से नयी स्कूली किताबें तैयार करने में जब उन्हें इतनी देर लग रही है ! तुम उस नौकरानी को और दस मार्क नहीं दे सकतीं ? वह भी हमेशा हमारी बातें सुना करती है ।

पत्नी (सिर हिलाती है) : और हिटलर की वह फोटो ? उसे तुम्हारी मेज के ऊपर टाँग दूँ ? ज्यादा भली दीखती है ।

पति : हाँ, हाँ ।

[पत्नी फोटो को स्थानांतरित करने लगती है ।]

पति : लेकिन अगर लड़के ने बाद में कहा कि हमने जान बूझ कर उसकी जगह बदली है, तो इसका मतलब होगा कि हमारे दिल में चोर है ।

[पत्नी फोटो को फिर अपनी पुरानी जगह में टाँग देती है]

पति : वह दरवाजे की आवाज थी न ?

पत्नी : मैंने नहीं सुनी ?

पति : हाँ वही थी ।

पत्नी : कार्ल !

[वह उसकी छाती से लग जाती है]

पति : अपनी तबियत को यों बे-काबू न होने दो । मेरे बैग में कोई-सा अंडरवियर रख दो ।

[मकान का दरवाजा खड़कता है। पति-पत्नी संत्रस्त और स्तम्भित, कमरे के एक कोने में अगल-बगल खड़े हैं। कमरे का दरवाजा खुलता है और लड़का दाखिल होता है। उसके हाथ में कागज का एक बैग है। खामोशी]

लड़का : क्या हुआ ?

पत्नी : तुम कहाँ थे ?

[लड़का चाकलेट के पैकेट की तरफ इशारा करता है।]

पत्नी : तुमने सिर्फ चाकलेट लिये ?

लड़का : और क्या ले सकता था ?

[वह चाकलेट खाता हुआ कमरा पार करता है और बाहर चला जाता है। उसके माँ बाप की आँखें कुछ खोजती-सी उसका पीछा करती हैं।]

पति : वह सच बोल रहा है क्या ?

[पत्नी कंधा उचकाती है।]

★

चार चित्र

★

१

[मज़दूर की कोठरी। एक औरत जिसके दो बच्चे हैं। एक नौजवान मज़दूर दम्पति जो मिलने आये हैं। औरत रोती है। सीढ़ी पर पैरों की आवाज़ सुन पड़ती है। दरवाज़ा खुला है।]

औरत : उसने सिर्फ इतना ही तो कहा था कि हम लोगों को इतनी कम मज़दूरी मिलती है कि हमेशा भूखों मरने की नौबत आयी रहती है। और बिलकुल ठीक ही तो कहा उसने। इस बुढ़िया को फेफड़े की बीमारी है और हम लोग इसके लिए दूध तक नहीं खरीद सकते। कहीं उन्होंने उसे कुछ कर तो नहीं दिया ?

[नात्सी सैनिक एक बड़ा-सा बकस लाते हैं और उसे फ़र्श पर रख देते हैं।]

नात्सी सैनिक : देखो, किसी किस्म का गुलगपाड़ा मचाने की कोशिश मत करना। निमोनिया किसी को भी हो सकता है। ये रहे तुम्हारे काग़ज़ात। काग़ज़ात बिलकुल ठीक हैं। समझाये देता हूँ, कोई बेवकूफ़ी का काम न कर बैठना।

[नात्सी सैनिक चला जाता है ।]

बच्चा : अम्माँ, बाबू इसके अन्दर हैं क्या ?

मज़दूर (बकस को इधर-उधर से देखते हुए) : टीन का है ।

बच्चा : इसे हम खोल नहीं सकते क्या ?

मज़दूर (गुस्से में) : हाँ, हाँ, क्यों नहीं । औज़ारोंवाला बकस कहाँ है ?

[औज़ार ढूँढ़ता है । उसकी जवान पत्नी उसे रोकती है ।]

पत्नी : मत खोलो, हांस ! सब तुम्हें भी पकड़ लेंगे, बस ।

मज़दूर : मैं देखना चाहता हूँ कि उन्होंने उसके साथ क्या किया है । वे डरते हैं कि कोई देख न ले, नहीं यों टीन के बकस में बन्द करके न लाते । मुझे छोड़ दो, मैं देखूँगा ।

पत्नी : मैं तुम्हें नहीं खोलने दूँगी । तुमने सुना नहीं, वे क्या कह रहे थे ?

मज़दूर : उसे देख तो लें हम लोग, कम से कम । तुम क्या कहती हो ?

औरत (अपने बच्चे का हाथ पकड़े पकड़े टीन के बकस तक जाती है) : हांस, अभी मेरे एक भाई है जिसे वे पकड़ सकते हैं । वे तुम्हें भी पकड़ सकते हैं । बकस बन्द ही रहने दो । हमें देखने की कोई जरूरत नहीं है । हम उसे भूलेंगे नहीं ।

२

[कंसेंट्रेशन कैम्प । बारक की दीवारों के बीच थोड़ी-सी खुली जगह । अभी रोशनी नहीं हुई है । किसी को कोड़े मारे जाने की आवाज सुन पड़ती है । फिर एक नात्सी सैनिक एक

कैदी को कोड़े मारता दिखलाई पड़ता है। एक नात्सी सैनिक का दल-नायक कोड़े मारनेवाले की ओर पीठ किये खड़ा सिगरेट पी रहा है। फिर वह चला जाता है।]

नात्सी सैनिक (थककर एक पीपे पर बैठ जाता है): अब शुरू करो काम! (कैदी जमीन पर से उठता है और अस्थिर शरीर से पाखाना साफ करने लग जाता है।)

नात्सी सैनिक: सूअर, जब तुमसे सवाल किया जाता है तो यह कहने में तुम्हारा क्या जाता है कि मैं कम्युनिस्ट नहीं हूँ? तुम्हारी ठोंकाई होती है और मेरा पास छिन जाता है। यह कोई नहीं देखता कि मैं किस बुरी तरह थका हुआ हूँ। वे क्लापरोट को यह काम क्यों नहीं सौंप देते? उसे तो इसमें बड़ा मजा आता है। अगर वह बदमाश रंडीबाज फिर बाहर आये (कान लगाकर सुनता है) तो तुम कोड़ा लेकर उससे जमीन को पीटने लग जाना। समझे?

कैदी: जी।

नात्सी सैनिक: और यह सब सिर्फ इसलिए कि मैं तुम कुत्तों को कोड़े मारते-मारते थक गया हूँ, मेरा मन खराब हो गया है। समझे?

कैदी: जी!

नात्सी सैनिक: देखो!

[बाहर पैरों की आवाज सुन पड़ती है और नात्सी सैनिक कोड़े की ओर इशारा करता है। कैदी उसे उठा लेता है और जमीन को पीटने लग जाता है। चूँकि कोड़ों की फटकार असली मार की तरह नहीं है; इसलिए नात्सी सैनिक पास पड़ी हुई टोकरी की ओर सुस्ती से इशारा करता है। और कैदी उसी को पीटने लग जाता है। बाहर पैरों की आवाज थम जाती है। नात्सी सैनिक घबड़ाकर झटपट उठ खड़ा होता है, कैदी के हाथ से कोड़ा छीनकर उसे मारना शुरू कर देता है।]

कैदी (धीमी आवाज में) : पेट पर नहीं।

[नात्सी सैनिक उसे घूसों पर मारता है। उसका दल-नायक अंदर झाँकता है।]

दलनायक : पेट पर मारो।

(नात्सी सैनिक कैदी को पेट पर मारता है।)

२

[दो नात्सी सैनिक जाड़े की इमदादी चीजों का एक पैकेट लेकर एक बुढ़िया के मकान में आते हैं। बुढ़िया और उसकी लड़की एक मेज़ के पास खड़े हैं।]

पहला नात्सी सैनिक : यह लो, मा, फ्यूरेर ने तुम्हारे लिए भेजा है।

दूसरा नात्सी सैनिक : अब तुम यह नहीं कह सकतीं कि उसे तुम्हारी फिक्र नहीं है।

बुढ़िया : शुक्रिया, शुक्रिया ; एनी, इसमें आलू हैं। और एक ऊनी जंपर। और सेब।

पहला नात्सी सैनिक : और फ्यूरेर के पास से एक खत, जिसमें कुछ है, खोल के देखो तो जरा !

बुढ़िया (चिट्ठी खोलती है) : पाँच मार्क ! अब कहो एर्ना ?

पहला नात्सी सैनिक : जाड़े की इमदाद !

बुढ़िया : अब तुम्हें मेरे हाथ से एक सेब खाना ही पड़ेगा बेटा, और तुम्हें भी। क्योंकि तुम्हीं दो तमाम सीढ़ियाँ चढ़कर हमारे लिए ये चीजें लाये। बात यह है कि तुम्हें खिलाने को मेरे पास और कुछ नहीं है। आओ यह साथ-साथ खायें।

[वह एक सेब में मुँह मारती है। लड़की को छोड़कर और सब सेब खाते हैं।]

बुढ़िया : तुम क्यों नहीं खातीं एर्ना, और देखो वैसी रोनी सूरत बना कर मत खड़ी रहो ! देख ही रही हो कि अब वैसा बुरा हाल नहीं है, जैसा कि तुम्हारा आदमी कहता है।

पहला नात्सी सैनिक : वह क्या कहता है ?

लड़की : वह कुछ नहीं कहता। बुढ़िया फिजूल बक रही है।

बुढ़िया : हाँ, कोई खास बुरी बात नहीं। बस यही कहता है, जैसा कि सभी कहते हैं, कि चीजें इधर जरा महँगी हो गयी हैं। [सेब से लड़की की ओर इशारा करती है] और इसने खर्चे की कापी से हिसाब लगाकर पता चलाया कि पिछले साल के मुकाबले में इस साल खाने की चीजों पर उसे एक सौ तेईस मार्क अधिक खर्च करने पड़े। क्यों ठीक है न, एर्ना ! [देखती है कि नात्सी सैनिक उसकी बात पर कुछ नाराज-से दिखायी पड़ते हैं।] मगर इसके लिए आखिर किया भी क्या जा सकता है जब कि तमाम गोला-बारूद तैयार करना हो, है न ? क्या बात क्या है ? मैंने कोई बुरी बात कह दी क्या ?

पहला नात्सी सैनिक : औरत, तू अपने खर्चे की कापी कहाँ रखती है ?

दूसरा नात्सी सैनिक : और किन-किन लोगों को दिखाती है ?

लड़की : मैं उसे हमेशा घर ही पर रखती हूँ। मैं उसे किसी को नहीं दिखाती।

बुढ़िया : खर्चे की कापी रखना तो कोई गुनाह नहीं है।

पहला नात्सी सैनिक : और जो वह तरह-तरह की भयानक कहानियाँ फैलाया करती है, वह भी तो कोई गुनाह नहीं है न ?

दूसरा नात्सी सैनिक : और यह भी तो है कि जब हम लोग अन्दर

आये तो मैंने उसको बहुत खुश होकर हाइल हिटलर कहते नहीं सुना। क्यों, तुमने सुना ?

बुढ़िया : मगर उसने हाइल हिटलर कहा और मैं भी कहती हूँ— हाइल हिटलर !

दूसरा नात्सी सैनिक : यह मार्क्सवादियों का अच्छा खासा अड्डा मालूम पड़ता है, क्यों ऐलबर्ट ? हमें उस हिसाब की कापी को एक बार ज़रा देखना है और इसलिए तुम ज़रा हमारे साथ तो चलो अपने मकान तक।

[वह लड़की की बाँह पकड़ लेता है।]

बुढ़िया : मगर उसका तीसरा महीना है ! तुम्हारी इच्छा...तुम उसके साथ ? इतने पर भी कि तुम वह पैकेट लाये और हमने तुमसे सेब लिये ? फिर भी ?! मैं तुम्हें बतला रही हूँ कि उसने हाइल हिटलर कहा। हाय परमेश्वर, अब मैं क्या करूँ ! हाइल हिटलर ! हाइल हिटलर !

[सेब उगल देती है। नात्सी सैनिक लड़की को ले जाते हैं।]

बुढ़िया (अब भी क़ै करते हुए) : हाइल हिटलर !

४

[खेत। रात। सूअर के बाड़े के सामने खड़े होकर किसान अपनी पत्नी और दो बच्चों से कहता है।]

किसान : मैं तुम्हें कभी इसमें न घसीटना चाहता था, मगर तुम चिपकी रहीं और अब तुम्हें अपना मुँह बन्द रखना होगा। नहीं तो तुम्हारा बाप लैंड्सबर्ग जेल पहुँच जायगा और तमाम जिन्दगी वहीं सड़ेगा। अपने जानवर को भूख लगने पर हम उसे खाने को देते हैं तो कुछ बुरा तो नहीं करते। परमात्मा भी तो नहीं चाहता कि उसकी सृष्टि में कोई भूखा रहे। इसे भूख लगी नहीं कि लगती है चिल्लाने और मुझे बर्दाश्त

नहीं कि मेरी सुअरी भूख के मारे खेत में चिल्लाये। और वे हैं कि मुझे उसको खिलाने नहीं देते। क़ानून इसके खिलाफ है। मगर तब भी मैं उसे खिलाऊँगा, जरूर खिलाऊँगा। क्योंकि मैं अगर उसे खिलाता नहीं तो वह मर जायगी और मुझी को इसका नुकसान सहना पड़ेगा।

पत्नी : वही तो मैं भी कहती हूँ। हमारा दूध हमारा है और हम उसका क्या करें, क्या न करें, यह बतलानेवाले ये साले कौन हैं? यहूदियों को तो उन्होंने खोज-खोजकर निकाल बाहर किया। पर सरकार तो सबसे बड़ी यहूदी है और पादरी हाइन्ज़ ने हम लोगों से कहा भी तो था : जो बैल तुम्हारे लिए अनाज उपजाता है उसे मारना मत। उन्होंने एक तरह से इशारा किया कि चौपायों को खाना देते जाना चाहिए। कोई हमने तो उनकी चौसाला योजना बनायी नहीं और न किसी ने हमसे उसके बारे में पूछा ही।

किसान : बिलकुल ठीक। न वे किसानों के लिए हैं और न किसान उनके लिए। यह भी अच्छी रही, मैं अपना अनाज उनके हवाले कर दूँ और फिर चारे के लिए खुद ही चढ़ी हुई कीमत दूँ और यह सब सिर्फ इसलिए कि गुंडे तोपें खरीद सकें।

पत्नी : पादरी हाइन्ज़ कहते हैं : शान्ति से रहो, किताब में यही लिखा है।

किसान : टोनी, तुम जरा वहाँ तारों के पास तो खड़े हो जाओ और मेरी, तुम चरागाह में निकल जाओ [और फिर अपने चारों ओर देखता हुआ डरता-डरता बाड़े की ओर जाता है। उसकी पत्नी भी डरी हुई, चारों तरफ देखती है।]

किसान (सुअर के आगे सानी पटकते हुए) : तुम मज़े में खाओ लीना। हाइल हिटलर! भाड़ में जाय ऐसी सरकार जिसमें जानवर भूखे रहें।

रेडियो का वक्त

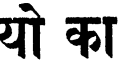

[एक कारखाने में शाप सुपरिन्टेन्डेण्ट का दफ्तर। एक रेडियो अनाउन्सर हाथ में माइक्रोफ़ोन लेकर एक अधेड़ मज़दूर, एक बुड्ढी मज़दूरनी और एक कमउम्र मज़दूरनी से बातचीत करता है। इन लोगों से पीछे की ओर एक कारखाने का अफ़सर और नात्सी सैनिक की पोशाक पहने एक मोटा तगड़ा आदमी खड़ा है।]

अनाउन्सर—हम लोग पहियों की गड़गड़ाहट और इधर-उधर आने-जाने वाली चीजों की चरमराहट के बीच खड़े हैं। हमारे चारों ओर बहुत जांफिशानी से और मन लगाकर काम करनेवाले भाई हैं जो अपनी प्यारी पितृभूमि की जरूरत की चीजें मुहय्या करने में लगे हुए हैं। आज इस समय सुबह हम फुक्स स्पिनिंग मिल्स लिमिटेड में हैं और गोकि काम मुश-किल और अङ्ग अङ्ग को थका देने वाला है तब भी हमारे पास जितने लोग खड़े हैं उनमें सभी के चेहरे पर प्रसन्नता और सन्तोष लहरा है। लेकिन हम अपने साथियों को खुद ही बोलने का मौका देना चाहते हैं। [बुड्ढे मजदूर से] आप इस कारखाने में इक्कीस बरस काम कर चुके हैं। क्या नाम है आपका, हर.....?

बुड्ढा मजदूर : सडैलमायर।

अनाउन्सर : हर सडैलमायर! यह क्या बात है कि हमें यहाँ प्रसन्न और सन्तुष्ट चेहरे ही दीख रहे हैं?

बुड्ढा मजदूर [सोचकर] : वह हर वक्त आपस में हँसी दिल्लगी किया करते हैं।

अनाउन्सर : हाँ, यही बात है। और इसी तरह के हँसी मजाक के वातावरण में काम बहुत सहूलियत से होता है, क्यों? राष्ट्रीय समाजवाद किसी तरह की निराशा का नाम नहीं जानता, तुम्हारे कहने का मतलब यही है न? पहले तो ऐसा कभी नहीं होता था। नहीं होता था न?

बुड्ढा मजदूर : नहीं कभी नहीं।

अनाउन्सर : तुम्हारे कहने का मतलब है कि वाइमार प्रजातन्त्र* के समय में कुछ था ही नहीं जिसमें हर मजदूर हँसता खुश होता। तब वे पूछा करते थे हमारे काम का क्या उद्देश्य है?

बुड्ढा मज़दूर : हाँ, ऐसे कुछ लोग हैं जो यह कहते हैं।

अनाउन्सर : क्या कहा! ओह, हाँ, तुम्हारा इशारा उन लोगों की तरफ़ है जो हमेशा गड़बड़ मचाये रहते हैं और यहाँ वहाँ छिटफुट पाये जाते हैं। मगर ऐसे लोगों की तादाद कम ही होती है, क्योंकि हमारे राष्ट्र की बागडोर एक बार फिर मज़बूत हाथों में चली जाने से राष्ट्र लगातार उन्नति करता जा रहा है। तुम्हारे कहने का यही मतलब था न? हाँ फ्राउलाइन, क्या नाम है तुम्हारा.....?

मजदूरनी : श्मिट।

अनाउन्सर : फ्राउलाइन श्मिट। हमारी किस बड़ी लोहे की मशीन पर तुम काम करती हो?

---

* हिटलर के आगमन के पहले की पूँजीवादी जनतांत्रिक सरकार।

मजदूरनी : [जैसे रटा हुआ पाठ सुना रही हो] और फिर अपने काम की जगह को सजाने का काम भी तो है; उसमें हमें बड़ा आनन्द आता है। हमने आपस में चन्दा करके फ्यूरेर की तस्वीर मँगायी है और हमें अपने जिरेनियम के पौधों पर भी घमण्ड है। उन्होंने कारखाने के नीरस वातावरण में जान डाल दी है—यह फ्राउलाइन किंज़ का सुझाव था।

अनाउन्सर : अच्छा तो तुम लोग अपने काम की जगह को खेतों के उन हसीन बच्चों, फूलों से सजा रही हो ? जब से जर्मनी की क़िस्मत ने पलटा खाया, तब से कारखाने में और भी तब्दीलियाँ हुई होंगी।

अफ़सर : नहानघर।

मज़दूरनी : नहानघर की बात डिक्टेटर साहब, हर ब्राउश्ल को ख़ुद सूझी और हम उनका शुक्रिया अदा करना चाहते हैं। कोई भी उन ख़ूबसूरत नहानघरों में जाकर नहा सकता है, अगर बहुत ज्यादा भीड़ न हो और आने-जाने का रस्ता ही बन्द न हो जाय।

अनाउन्सर : शायद सभी पहले पहुँचने की कोशिश में रहते हैं। काफी पुरलुत्फ ठेल-ठाल रहती होगी, क्यों ?

मजदूरनी : पाँच सौ बावन लोगों के लिए सिर्फ़ छः कमरे हैं। हर रोज़ अच्छा खासा दंगा मचा रहता है। बहुतों को तो उसकी ज़रा-सी परवाह नहीं है।

अनाउन्सर : लेकिन सब काम बड़ी सहूलियत से होता चलता है। और हम कुछ बातें हर...क्या नाम है ?

मज़दूर : मान।

अनाउन्सर : मान ? अच्छा तो हर मान, आपका क्या खयाल है ? कारखाने में जो बहुत-सी नयी-नयी तरकीबें हुई हैं, उनसे आपके साथी मज़दूरों पर कैसा असर पड़ा है ?

मज़दूर : यानी ?

अनाउन्सर : यानी, आपको इस बात की खुशी है न कि तमाम कलें चलने लगी हैं और सब लोग काम में लगे हुए हैं ?

मज़दूर : हाँ।

अनाउन्सर : और इस बात की भी कि हफ्ते के आखीर में हर शख्स अपनी तनख्वाह का लिफ़ाफ़ा ले आता है ? हमें यह न भूलना चाहिए।

मज़दूर : हाँ।

अनाउन्सर : पहले ऐसा नहीं था। वाइमार प्रजातन्त्र के समय बहुत से साथियों को भीख के तल्ख टुकड़े तोड़ने पड़ते थे और तनख्वाह भी कितनी कम मिलती थी।

मज़दूर : साढ़े अठारह मार्क और कोई कटौती नहीं।

अनाउन्सर : (बनावटी हँसी हँसकर) : हा हा हा ! अच्छी मज़ाक़ की बात कही ! कटौती के लिए तब था ही क्या ?

मज़दूर : अब तो खूब गुंजायश है कटौती की। [कारख़ाने का अफ़सर आगे बढ़ता है। स्टार्मट्रुपर की वर्दीवाला मोटा आदमी भी।]

अनाउन्सर : और इस तरह फ्यूरेर के राज्य में सब को नौकरी मिली और सब अपनी रोज़ी कमाने लगे। तुम बिल्कुल ठीक कहते हो....क्या नाम है तुम्हारा ? अब कोई कल बेकार नहीं पड़ी है और आडोल्फ़ हिटलर के जर्मनी में किसी आदमी को बेकार नहीं रहना पड़ता। [वह मज़दूर को माइक्रोफोन से खींचकर अलग करता है] दिमाग़ और हाथ से काम करने वालो, मिलकर अपनी प्यारी जर्मन पितृभूमि के पुनर्निर्माण के लिए आगे बढ़ो। हाइल हिटलर !

चुनाव

★

[मार्च २९, १९३६ । चुनाव का बड़ा कमरा । दीवार पर रङ्गीन कपड़े की एक बड़ी सी चौड़ी पट्टी जिस पर लिखा है : "जर्मन राष्ट्र को रहने के लिए जगह चाहिए (आडोल्फ हिटलर)" स्टार्मट्रुपर चारों तरफ खड़े हैं ; चुनाव कमेटी के लोग भी स्टार्मट्रुपरों की वर्दी में हैं । दो स्टार्मट्रुपर एक बुढ़िया और एक चालीस बरस के अंधे आदमी को लेकर आते हैं । वे दोनों फटे पुराने कपड़े पहने हैं ।]

—(बतलाता है) : पिछली लड़ाई में इस वोटर की आँखें नहीं रही थीं ।

[सब हिटलरी सैलूट के साथ खड़े होते हैं ।]

सब : हाइल हिटलर !

स्टार्मट्रुपर (जो इन लोगों को लाया है) : जेकब केहरर, ३४ थमर्स-बर्गर ऐली, और उसकी माँ फ्राउ आना केहरर ।

[दोनों को मतदानपत्र और लिफाफे दिये जाते हैं ।]

बुढ़िया (पास खड़े हुए नागरिकों से) : इसका मतलब क्या दूसरी लड़ाई है ?

[कोई जवाब नहीं देता । एक स्टार्मट्रुपर खाँसता है ।]

चुनाव-अध्यक्ष (बुढ़िया से) : मुझे इत्मीनान है कि तुम अपने लड़के को बता दोगी कि उसे किस जगह पर सही करना है। [स्टार्मट्रुपरों की ओर मुड़ते हुए; लेकिन असल उद्देश्य पास खड़े वोटरों को सुनाना है] इस आदमी ने लड़ाई में अपनी आँखें खोयी हैं। मगर उसे किस जगह सही करना है उसे वह ठीक ठीक ढूँढ़ लेगा। हमारे बहुत-से देशभाइयों के लिए वह आदर्श हो सकता है। उसने राष्ट्र के भले के लिए खुशी-खुशी, हँसते हँसते अपनी आँखों की बलि चढ़ायी है। और जब एक बार फिर उसका फ्यूरेर उसे आवाज देता है तो उसे फिर जर्मनी की इज्जत के लिए वोट करने में रत्ती भर हिचक नहीं होती। अपने राष्ट्र-प्रेम से उसे रुपया-पैसा या जायदाद, कुछ नहीं मिली। यह तो आप उसके कोट को एक बार देख कर ही अच्छी तरह समझ सकते हैं। हमारे उन बहुत से देश भाइयों को जो हरदम भुनभुनाया करते हैं इस बात पर ग़ौर करना चाहिए कि आखिर वह कौन-सी ताकत है जो इस आदमी को वोट देने के लिए खींचकर लाती है ! (वह बुढ़िया को वोट डालनेकी जगह दिखलाता है) वहाँ जाओ !

[बुढ़िया हिचकिचाते हुए अपने अंधे बेटे को वोट डालने की जगह पर ले जाती है। फिर एक बार संदेह के कारण रुक जाती है और अपने चारों तरफ देखती है। सब स्टार्मट्रुपर उसे घूरते हैं। वह डर जाती है। डरी हुई, पीछे मुड़-मुड़कर देखती हुई वह वोट डालने की जगह पर पहुँचकर अपने अंधे लड़के को अंदर खींच लेती है।]

दुर्घटना !

★

[एक मजदूर काम से लौटने पर अपनी पड़ोसिन औरत को वहाँ पाता है।]

पड़ोसिन : गुडईवनिंग, हर फेन। मैं तुम्हारी बीवी से रोटी उधार लेना चाहती थी, पर वह तो बाहर चली गयी।

आदमी : मैं तुम्हारी मदद कर सका, इसकी मुझे बड़ी खुशी है, फ्राउ डीज़। मुझे जो काम मिला है, उसके बारे में तुम्हारा क्या खयाल है?

पड़ोसिन : हाँ, अब तो सब को काम मिल रहा है। तुम तो मोटर के नये कारखाने में हो न? बममार बनाने में लगे होगे?

आदमी : और क्या।

पड़ोसिन : अब तो स्पेन में उनकी जरूरत है।

आदमी : खाली स्पेन ही क्यों?

पड़ोसिन : क्या-क्या चीज़ें दी जा रही हैं, इसकी अजब-अजब बातें सुनी जाती हैं। बड़े शर्म की बात है।

आदमी : जरा अपनी जबान पर लगाम लगाओ!

पड़ोसिन : अब तुम भी उन्हीं में के हो गये क्या?

आदमी : मैं किसी का नहीं हूँ। मैं अपना काम करता हूँ। आखिर मार्था है कहाँ ?

पड़ोसिन : अच्छा हो कि मैं तुम्हें एक बुरी खबर सुनने के लिए तैयार कर दूँ। जब मैं यहाँ आयी तब डाकिया यहाँ पर था। उसने तुम्हारी बीवी को एक खत दिया जिससे वह बहुत बेचैन हो गयी। मैंने तो फिर शरमन के यहाँ से रोटी उधार लेने की सोची।

आदमी : सच ! [पुकारता है] मार्था !

[उसकी बीवी अन्दर आती है। वह गमी के कपड़े पहने है]

आदमी : क्या हुआ तुम्हें ? कौन मर गया ?

बीवी : फ्रैंज़। खत आया है।

[खत थमा देती है]

पड़ोसिन : हे परमेश्वर ! क्या हुआ था ?

आदमी : एक दुर्घटना हो गयी।

पड़ोसिन : [सन्देह के स्वर में] वह उसका था न ?

आदमी : हाँ।

पड़ोसिन : और दुर्घटना से उसकी मृत्यु हुई ?

आदमी : हाँ, स्टेटिन में। इसमें लिखा है, फौजी मैदान में रात की प्रैक्टिस के वक्त।

पड़ोसिन : तुम समझते हो दुर्घटना में उसकी जान गयी ? मुझ से तो तुम यह कह नहीं सकते।

आदमी : मैं तुम्हें सिर्फ वह बतला रहा हूँ जो इसमें लिखा है। खत मैदानी हेडक्वार्टर से आया है।

पड़ोसिन : इधर तुम्हारे पास उसके खत आ रहे थे ? स्टेटिन से ?

आदमी : मार्था, इतनी पागल न बनो। इससे कोई फायदा नहीं।

बीवी : [सिसकियाँ भरते हुए] हाँ, यह मैं जानती हूँ।

पड़ोसिन : कितना अच्छा था तुम्हारा भाई। तुम्हारे लिए कहवा तैयार कर दूँ ?

आदमी : बहुत अच्छा हो अगर कर सको, फ्राउ डीज़ !

पड़ोसिन [बर्तन खोजती हुई] : ऐसी खबरों से धक्का लगता ही है।

बीवी : तुम नहा-धो लो हरबर्ट। फ्राउ डीज़ इसका क़तई बुरा न मानेंगी।

आदमी : इसकी तो कोई खास जल्दी नहीं।

पड़ोसिन : और स्टेटिन से वह तुम्हें बराबर खत भेजता रहा ?

आदमी : उसके खत हमेशा स्टेटिन से आते थे।

पड़ोसिन [मतलब भरी निगाहों से] : अच्छा, तो यह बात है। वह भी दक्खिन था ?

आदमी : क्या मतलब दक्खिन ?

पड़ोसिन : दूर दक्खिन ही में तो प्यारा-प्यारा स्पेन है।

आदमी : [अपनी बीवी को फिर सिसकते देखकर] अपने को काबू में करो, मार्था ! और तुम्हें फ्राउ डीज़ इस तरह बात न करनी चाहिए।

पड़ोसिन : मैं तो सिर्फ यह जानना चाहती हूँ कि तुम जब अपने साले की लाश लाने जाओगे तो वे तुमसे क्या कह देंगे ?

पति : मैं स्टेटिन नहीं जा रहा हूँ।

पड़ोसिन : ढाँकने-तोपने में वे लोग बड़े उस्ताद हैं। वह इसकी बड़ी शेखी भी मारते हैं कि उनकी कोई बात जनता के कानों तक नहीं पहुँचती। शुल्टहाइस सलून में एक आदमी इस बात की बड़ी शेखी मार रहा था कि देखो, कैसी सफाई से हमने युद्ध की तमाम बातें छुपा ली हैं। जब कोई बममार किसी हवामार तोप की मार में आ जाता है और उसमें बैठे हुए लोग छतरियाँ लेकर कूद पड़ते हैं तो दूसरे बममारों के लोग उन पर मशीनगनों से गोलियाँ बरसाते हैं। हाँ, वे अपने ही आदमियों को गोलियों

से मारते हैं जिसमें वे लाल सैनिकों को यह न बता पायें कि वे किस मुल्क के हैं।

पत्नी [जिसकी तबीयत भीतर ही भीतर बिगड़ती जा रही है।] : मुझे जरा पानी पिलाओ हरबर्ट। मेरी तबीयत न जाने कैसी हो रही है।

पड़ोसिन : तुम यों ही काफी उत्तेजित हो, तुम्हें और उत्तेजित करना मेरा उद्देश्य नहीं था। लेकिन देखो, कैसी खूबी से वे तमाम बातों पर पर्दा डाले रहते हैं! वह यह बात अच्छी तरह जानते हैं कि वे जुर्म कर रहे हैं और उन्हें अपने युद्ध को अँधेरे में ढँककर ही रखना है। यहाँ भी वही बात है। प्रैक्टिस के लिए की गयी उड़ान में मरा! जानते हो काहे की प्रैक्टिस कर रहे हैं वे लोग? युद्ध की, युद्ध की!

पति : इतनी जोर से तो न बोलो खुदा के वास्ते (पत्नी से) तबीयत सँभली कुछ?

पड़ोसिन : तुम भी उन्हीं में से हो जो हर बात में मुँह सिये रहते हैं। इसी का इनाम आया है उस खत में।

पति : अब बन्द करो यह!

पत्नी : हरबर्ट!

पड़ोसिन : तुम मुझे चुप रहने को इसीलिए न कहते हो कि अब तुम्हें नौकरी मिल गयी है। पर तुम्हारे साले की भी तो नौकरी लग गयी थी। पर तुम जो चीज़ें अपने मोटर के कारखाने में बनाते हो, उन्हीं में से एक से तो उसका हादसा हो गया।

पति : अब तुम बहुत आगे बढ़ी जा रही हो फ्राउ डीज़। मैं वह चीज़ बनाता हूँ! दूसरे क्या बनाते हैं आखिर ज़रा यह भी तो सुनूँ? तुम्हारा आदमी क्या बनाता है? क्यों? वह शायद लड़ाई के लिए नहीं है! वह तो सिर्फ रोशनी करने के लिए है। उससे क्या रौशन करते हैं वह? टैंक या जहाज शायद या शायद वैसा ही एक बममार, लेकिन वह तो सिर्फ बल्ब बनाता है। या खुदा। ऐसी भी कोई चीज है जो लड़ाई के काम न

आती हो ? मुझे नौकरी कहाँ मिलेगी अगर मैं हरदम यही सुमिरिनी जपा करूँ—लड़ाई के काम में नहीं ! भूखों मरूँ ?

पड़ोसिन [विराम] : मैं तुम्हें भूखों मरने को तो कहती नहीं। तुम्हें नौकरी जरूर करनी चाहिए। मैं तो सिर्फ उन मुजरिमों की बात कह रही थी; यह अच्छा काम दिया उन्होंने तुम्हें !

पति [गम्भीर स्वर में] : मार्था, तुम्हें ये तमाम काले-काले मातमी कपड़े न पहनने चाहिए। उन्हें यह पसंद नहीं।

पड़ोसिन : उन्हें लोगों का सवाल करना भी पसंद नहीं।

पत्नी [शान्ति से] : तुम्हारा क्या मतलब, मैं ये कपड़े उतार डालूँ?

पति : हाँ, नहीं यह नौकरी भी हाथ से जायगी।

पत्नी : मैं नहीं उतारूँगी।

पति : यानी ?

पत्नी : मैं नहीं उतारूँगी। मेरा भाई मर गया है। मैं उसका मातम मना रही हूँ।

पति : मा के मरने में अगर रोज़ ने इसे खरीदा न होता और तुम्हारे पास यह चीज न होती तो तुम मातम मनाना चाहतीं भी तो न मना पातीं।

पत्नी [चीखते हुए] : कोई मुझे मातम मनाने से नहीं रोक सकता ! वह अगर उसे कत्ल कर डालते हैं तो मुझे कम से कम रोने की आजादी तो हो ! ऐसा तो कहीं देखा ही नहीं। ऐसी बर्बर चीज दुनिया में कभी देखी ही नहीं गयी। इनसे खूनी मुजरिम और नहीं।

पड़ोसिन [पति मौन है] : मगर फ्राउ फेन !

पति [फटी-सी आवाज में] : अगर तुम इस तरह बात करोगी तो हमारी और भी दुर्गत होगी, सिर्फ नौकरी ही से हाथ न धोना पड़ेगा।

पत्नी : वे आवें और मुझे पकड़ लें। औरतों के लिए भी तो कंसेंट्रेशन कैम्प बनाये हैं उन्होंने। उनका मन हो तो मुझे ठूँस दें उसमें क्योंकि

मैं इस बात को भूल नहीं सकती कि उन्होंने उसे मार डाला है। स्पेन में उसकी क्या ज़रूरत थी भला ?

पति : स्पेन की बात मत करो।

पड़ोसिन : अपनी बात से ही तुम मुसीबत में फँस जाओगी फ्राउ फेन!

पत्नी : हम अपना मुँह सिये रहें, क्योंकि तुम्हारी नौकरी छूट जायगी अगर हम ऐसा न करेंगे, क्यों ? क्योंकि हम भूखों मर जायेंगे अगर उनके लिए बममार तैयार न करें ! जो हो मरना तो हमें है ही, फ्रैंज़ की तरह। उन्होंने उसे भी तो जगह दी। जमीन के नीचे छः फीट। उतनी जगह तो उसे यहाँ भी मिल सकती थी !

पति [उसका मुँह बन्द करने की कोशिश करता है] : खामोश, समझीं ? इससे कुछ न होगा।

पत्नी : तो किससे होगा ? ऐसा कुछ करो जिससे हो !

खैराती अस्पताल

★

[खैराती अस्पताल का एक वार्ड। एक नया मरीज़ लाया गया है। एक नर्स मरीज़ के बिस्तरे के सिरे पर रक्खी हुई स्लेट में उसका नाम लिखती है। पास के बिस्तरे पर दो मरीज़ आपस में बात कर रहे हैं।]

पहला मरीज़ : यह कैसा आदमी है ?

दूसरा मरीज़ : मैंने इसे पहले भी देखा था—चीरफाड़वाले कमरे में, जहाँ पट्टियाँ वगैरः बाँधी जाती हैं। मैं उसके स्ट्रेचर के पास ही बैठा हुआ था। मैंने उससे सवाल किया तो उसने कोई जवाब नहीं दिया, गो तब वह होश में था। उसका तो सारा शरीर ही जैसे एक बड़ा सा घाव है—

पहला मरीज़ : तो तुमने उससे पूछा नहीं इसके बारे में ?

दूसरा मरीज़ : कैसे पूछता। मैंने घाव को उस समय देखा न जब उस पर पट्टी बाँधी जाने लगी।

एक नर्स : चुप हो जाओ, प्रोफेसर आ रहे हैं।

[सर्जन कमरे में दाखिल होता है। उसके पीछे-पीछे विद्यार्थी और नर्सें आती हैं। वह एक बिस्तर के पास पहुँचकर रुक जाता है और एक छोटा-मोटा भाषण दे डालता है]

सर्जन : यहाँ पर यह एक बहुत अच्छा केस है जिसे देखने से यह साबित होता है कि बीमारी के भीतरी कारणों को हर वक्त जानने और खोजने में न लगे रहने से डाक्टरी डाक्टरी न रहकर झाड़-फूँक हो जाती है। इस मरीज के तमाम लक्षण न्यूरैलजिया के हैं और इसी आधार पर बहुत दिनों तक उसका इलाज भी हुआ। मगर सच बात यह है कि उसे रेनोज़ डिज़ीज़ है जो उसे दबाई हुई हवा की मशीनों पर काम करने से लग गयी दूसरे शब्दों में, यह रोग उसे अपने काम की वजह से लगा है। और अब जाकर कहीं उसे ठीक इलाज मिला है। यह मरीज़ इस बात का प्रमाण है कि किसी मरीज़ को केवल एक मरीज़ समझना कितना गलत है। उसके बारे में यह सवाल भी पूछना चाहिए कि यह मरीज कहाँ का है, उसे यह रोग कहाँ लगा, इलाज के बाद वह कहाँ जायगा। अच्छे डाक्टर को कौन कौन सी बातें जरूर जाननी चाहिए ? पहली बात ?

पहला विद्यार्थी : सवाल करना।

सर्जन : दूसरी बात ?

दूसरा विद्यार्थी : सवाल करना।

सर्जन : तीसरी बात ?

तीसरा विद्यार्थी : सवाल करना, प्रोफेसर साहब।

सर्जन : ठीक, सवाल करना। और खास तौर पर...

तीसरा विद्यार्थी : सामाजिक परिस्थितियों के बारे में, प्रोफेसर !

सर्जन : अपने मरीज के निजी जीवन को समझने से कभी न डरना चाहिए गो हमारा दुर्भाग्य है कि अच्छी बातें उसमें हमें शायद ही कहीं मिलें। अगर किसी आदमी को मजबूर होकर ऐसा पेशा अख्तियार करना पड़ता है जो उसकी तन्दुरुस्ती को तुरत या कुछ दिन बाद चौपट कर देगा, तो हमें कहना पड़ेगा कि वह भूख से बचने के लिए मरा— यह बात सुनने में बुरी मालूम होती है इसीलिए पूछने में भी बुरी मालूम होती है।

[वह नये मरीज के पास आता है। विद्यार्थी और नर्सें पीछे पीछे हैं।]

सर्जन : इसे क्या बीमारी है ?

[हेड नर्स उसके कान में कुछ फुसफुसाती है।]

सर्जन : ओह !....समझा....

[वह अनमने ढंग से मरीज की परीक्षा करता है।]

सर्जन (लिखता है)। पीठ और जाँघों पर छिलने के निशान। पेडू में खुला घाव। उसकी हालत के बारे में और कोई बात ?

हेड नर्स (पढ़ती है) : पेशाब में खून जाता है।

सर्जन : अस्पताल में दाखिल होने पर उसका निदान क्या हुआ था ?

हेड नर्स : बायाँ गुर्दा फटा हुआ।

सर्जन : उसका एक्सरे करना होगा।

[चलने को मुड़ता है।]

तीसरा विद्यार्थी (जो मरीज का हाल लिख रहा है) : रोग का कारण प्रोफेसर ?

सर्जन : उसमें क्या लिखा है ?

हेड नर्स : इसमें 'सीढ़ी से गिरना' रोग का कारण बताया गया है।

सर्जन (लिखवाता है) : सीढ़ी से गिरना। उसके हाथ बिस्तर से क्यों बँधे हुए हैं ?

हेड नर्स : मरीज दो बार अपनी पट्टियाँ नोचकर फेंक चुका है प्रोफेसर।

सर्जन : क्यों ?

पहला विद्यार्थी (धीमी आवाज में) : मरीज कहाँ से आया है और वापस कहाँ जायगा ?

[सब के सिर उसकी ओर मुड़ जाते हैं।]

सर्जन (गला साफ करते हुए) : मरीज को बेचैनी की हालत में मॉर्फिया देना। (दूसरे बिस्तर के पास पहुँच जाता है।) क्यों ? तबियत अच्छी है ? घबराओ मत, जल्दी ही तुम्हारी ताकत लौट आयेगी।

[मरीज के गले की परीक्षा करता है।]

एक विद्यार्थी (दूसरे विद्यार्थी से) : मजदूर। ओरैनियनबुर्ग* से यहाँ भेजा गया है।

दूसरा विद्यार्थी (ताने के लहजे में) : इसे किसी दूसरे पेशे से रोग लगा है शायद !

★

---

* नात्सी जर्मनी का एक बहुत बदनाम कंसेन्ट्रेशन कैम्प। —अनु०

भूल-सुधार

★

[वुर्टेमबर्ग के एक कस्बे का चौक जिसमें छोटी छोटी कुछ दूकानें हैं। मञ्च के पीछे की तरफ गोश्त की और आगे की तरफ दूध की दूकान है। जाड़े की सुबह है, अँधेरा छाया हुआ है। गोश्त की दूकान तो अब भी बन्द है मगर दूध की दूकान में रोशनी है और कुछ गाहक बाहर खड़े इन्तजार कर रहे हैं।]

गरीब नागरिक : आज फिर न होगा मक्खन, मेरी समझ में !

औरत : अपने मर्दुए की कमाई से जो पाव-आध पाव मैं खरीद सकती हूँ, उतना तो कम से कम होना ही चाहिए।

नौजवान : बन्द करो यह भुनभुनाना, समझे तुम लोग ! जर्मनी को तोपों की जरूरत है, मक्खन की नहीं—यह तुम अच्छी तरह जान लो। उन्होंने यह बात बहुत साफ तौर पर कह दी है।

औरत (डरती हुई) : और ठीक भी तो है।

[खामोशी]

नौजवान : राइनलैंड पर कब्जा हम लोग मक्खन से कर सकते थे भला ? जब यह शानदार चीज हुई तब तो सब उसके साथ थे, लेकिन

जब उसके लिए कुछ कुर्बानी करने को कहा जाता है तो सबकी नानी मरती है।

दूसरी औरत : इतना गरम मत पड़ो। हम सभी कुर्बानियाँ कर रहे हैं।

नौजवान (अविश्वासपूर्वक) : जरा मैं भी तो सुनूँ !

दूसरी औरत (पहली औरत से) : वे जब चन्दा माँगने आते हैं तो तुम कुछ नहीं देतीं क्या ?

[पहली औरत सिर हिलाकर हामी भरती है।]

दूसरी औरत : देखा ? वह भी देती है, और हम भी देते हैं, अपनी खुशी से।

नौजवान : मैं ये सब लटके खूब समझता हूँ। फ्यूरेर को जब अपने बड़े बड़े कामों के लिए ढेर से पैसों की जरूरत होती है, उस वक्त भी सब एक एक फेनिंग को दाँत से पकड़ते हैं। जाड़े की सहायता के लिए सिवाय फटे चीथड़ों के और कुछ जैसे उनके हाथ से छूटता ही नहीं। उनका बस चले तो सुअर की तरह चिल्लायें जिसमें कोई समझे कि यह घर नहीं सुअर का बाड़ा है। लेकिन हमारे पास सब के नम्बर हैं। वह मोटा ब्योपारी जो नम्बर ग्यारह में रहता है, उसने तो सचमुच हमें एक जोड़ा घुड़सवारी के जूते दिये थे और सो भी फटे हुए !

गरीब नागरिक : कुछ लोग काफी चौकन्ने नहीं रहते !

[दूध की दूकानवाली औरत अन्दर से एक सफेद एप्रन पहने निकलती है।]

दूकानवाली औरत : अब एक मिनट में सब ठीक हो जायगा। (दूसरी औरत से) सुबह मुबारक, फ्राउ रूल। तुमने सुना कुछ ? कल रात को वे उस लड़के लेटनर को यहीं बगल के घर से ले गये।

दूसरी औरत : वही गोश्तवाला ?

दूकानवाली : हाँ, उसी का लड़का।

दूसरी औरत : लेकिन वह तो एस० ए० * का मेंबर था न ?

दूकानवाली : था तो, और उसका बाप तो सन् २९ से ही पार्टी † में है। कल संयोग से वह जानवरों के नीलाम के सिलसिले में शहर से बाहर था नहीं तो वे उसे भी पकड़ ले जाते।

दूसरी औरत : उन्होंने जुर्म क्या किया था ?

दूकानवाली : गोश्त की कीमत चढ़ा दी थी। इधर काफी दिनों से उसे कहीं कुछ मिलता तो था नहीं। नतीजा हुआ कि उसके गाहक टूट टूटकर दूसरी दूकानों पर जाने लगे। फिर वह क्या करता, उसने चोरी का गोश्त खरीदना शुरू किया। और सो भी, सुना है, यहूदियों से।

नौजवान : तुम चाहती हो इतने पर भी वे उसे न पकड़ते ?

दूकानवाली : वह हमेशा सबसे जोशीले लोगों में था। तुम नम्बर सत्रहवाले उस बुड्ढे ज़ाइसलर को जानती हो ? उसने ज़ाइस्लर को पकड़वा दिया क्योंकि वह फोलकिशर बियोबाख्तर ‡ नहीं खरीदता था। वह बहुत सी लड़ाइयाँ देखे हुए आदमी है।

दूसरी औरत : उसे सचमुच बड़ा ताज्जुब मालूम होगा लौट के आने पर।

गरीब नागरिक : कुछ लोग सचमुच काफी चौकन्ने नहीं रहते !

दूसरी औरत : लगता है उनकी दूकान आज न खुलेगी।

दूकानवाली : यही तो चाहिए ! पुलिसवाले एक बार अन्दर-बाहर से

---

* नात्सियों का एक सैनिक-संगठन।

† नात्सी पार्टी।

‡ नात्सी पार्टी का मुखपत्र।

अच्छी तरह देख भर लें, फिर तो उनका कुछ न कुछ खुचड़ लगा ही रहता है। लगा रहता है न ? और उस पर से दुनिया का यह हाल कि जमीन आसमान एक कर देने पर चीज मिलती हैं। हमें तो अपनी चीजें कोआपरेटिव से मिल जाती हैं : अब तक तो कोई मुशकिल आयी नहीं है। (जोर से आवाज लगाती है) क्रीम आज नहीं है ! (भीड़ में असंतोष) शायद लेटनर का भी रेहननामा इस मकान पर है। उन्हें शायद यह उम्मीद थी कि रेहननामा कट जायगा, या परमात्मा जाने क्या !

गरीब नागरिक : रेहननामा तो वे काट नहीं सकते। यह तो बड़ी ज्यादती होगी।

दूसरी औरत : लेटनर का लड़का बड़ा अच्छा आदमी था।

दूकानवाली : वही बुड्ढा लेटनर हमेशा से जोश के मारे अंधा था। उसने ठेलठेल कर अपने लड़के को एस० ए० में भेजा। और रहा लड़का ! उसे तो उसकी ज्यादा परवाह थी नहीं, वह तो किसी लड़की को को लेकर निकल जाना ही ज्यादा पसंद करता।

नौजवान : जोश के मारे अन्धा से तुम्हारा क्या मतलब ! हाँ यह जरूर है कि पहले जब कोई हमारे आदर्श पर चोट करता तो वह गुस्से से पागल हो जाता था। वह हमेशा आदर्श को व्यक्ति से ऊँचा रखता था।

गरीब नागरिक : आखिरकार दूकान खुल रही है।

दूसरी औरत : उन्हें भी अपना पेट पालना है न ?

[गोश्त की दूकान में से, जिसमें अब रोशनी हो रही है, एक मोटी औरत बाहर आ जाती है। वह पटरी पर खड़ी होकर सड़क पर आँखें दौड़ाती है। फिर दूध की दूकानवाली की ओर मुड़ती है।]

गोश्तवाली : सुबह मुबारक, फ्राउ श्लिख्तर। तुमने मेरे बेटे रिचर्ड को देखा ? उसे तो अब तक गोश्त लेकर आ जाना चाहिए था।

[दूधवाली कोई जवाब नहीं देती। सब लोग गोश्तवाली को घूरते हैं। वह समझ जाती है और तुरंत दूकान के अन्दर चली जाती है।]

दूधवाली : यों बात करती है जैसे कुछ हुआ ही नहीं। यह गड़बड़ शुरू तो हुई थी परसों जब बुड्ढे ने इस कदर हल्ला मचाया था कि तमाम बाजार में उसकी आवाज गूँज रही थी। उन्होंने उसके ऊपर यही जुर्म लगाया होगा।

दूसरी औरत : मैंने तो इसके बारे में कुछ नहीं सुना, फ्राउ श्लिख्तर।

दूधवाली : सच ! तो क्या तुम्हें यह नहीं मालूम था कि उसने अपनी दूकान की शो विंडो में गोश्त का पुतला टाँगने से इन्कार कर दिया था ! पहले तो उसने उन्हें मँगाया, क्योंकि एक हफ्ते तक उसके शो-केस में सिवाय निर्खनामे के और कुछ था ही नहीं। वैसी हालत में उसे मजबूर होकर मँगाना पड़ा। उसने गाहकों से कहा—शो विंडो में लगाने के लिए मेरे पास गोश्त नहीं। और जब वह नकली गोश्त के पुतले आये तो उनमें एक सुअर के बच्चे का भी पुतला था, ऐसी खूबसूरत नकल थी कि क्या बताऊँ। फिर उसने चिल्लपों मचानी शुरू की कि मैं अपनी विंडो में इन पुतलों को टाँगकर अपने गाहकों को धोखे में न डालूँगा। और ऐसी ही पचासों बातें जिन्हें दुहराना ठीक नहीं।...और फिर सब सरकार के खिलाफ। उसने तमाम चीजें उठाकर सड़क पर फेंक दीं। धूल में से उन्होंने उठाया फिर सब।

दूसरी औरत : च् च् च् च्.....

गरीब नागरिक : कुछ लोग सचमुच काफी चौकन्ने नहीं रहते !

दूसरी औरत : लोग इतने कायर कैसे हो जाते हैं ?

दूधवाली : और सच पूछो तो अपने को बहुत समझदार लगानेवाले ही सबसे पहले जाते हैं !

[इसी वक्त गोश्त की दूकान में एक रोशनी और बल उठती है ।]

दूधवाली : वह देखो !

[वह उद्विग्न होकर शो विंडो की ओर इशारा करती है जिसमें अभी पूरी तरह रोशनी नहीं हुई है ।]

दूसरी औरत : शो विंडो में है कुछ !

दूधवाली : अरे, यह वही बुड्ढा लेटनर है ! ओवरकोट पहने है ! लेकिन खड़ा किस चीज पर है ? (यकायक चीख पड़ती है ।) फ्राउ लेटनर !

गोश्तवाली (दूकान में से बाहर आती है) : क्या है ?

[दूधवाली बिना कुछ बोले शो विंडो की ओर इशारा करती है । गोश्तवाली उसे एक नजर देखती है, चिल्ला पड़ती है और बेहोश हो जाती है । दूसरी औरत और दूध की दूकान वाली उसके पास दौड़कर जाती है ।]

दूसरी औरत (गर्दन पीछे मोड़ कर) : उसने शो विंडो में अपने आपको फाँसी लगा ली है !

गरीब नागरिक : उस पर एक तख्ती लटक रही है ।

पहली औरत : वह निर्खनामा है । उस पर कुछ लिखा है ।

दूसरी औरत : लिखा है : मैंने हिटलर को वोट दिया था ।

अनुवादक की ओर से

ये छोटी छोटी नाटिकाएँ दूसरे महायुद्ध के समय अनूदित हुई थीं। वे जर्मन लेखक की कृतियाँ हैं और हिटलर-जर्मनी की झाँकी पेश करती हैं। हिटलर-जर्मनी के सम्बन्ध में भारतीय जनता के मन में जो भ्रम और झूठी छलनामयी आशाएँ थीं, उन्हें दूर करने में योग देने की दृष्टि से ही मैंने तब यह काम किया था। लेकिन तब मुझे इस बात का सपने में भी गुमान नहीं था कि स्वयं हमारे देश में वह समय इतनी जल्दी आ जायेगा कि ये नाटिकाएँ हिटलर-जर्मनी की नहीं बल्कि सन् '४९ के भारतवर्ष की झाँकियाँ जान पड़ेंगी—जरा से अन्तर के साथ। बहुत कुछ वैसी ही भूख, वैसी ही गरीबी और 'जन-सुरक्षा' के चलते हवा में बहुत कुछ वैसी ही ख़ौफ़ की परछाइयाँ भी काँपती हुई!

—अनुवादक